राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 पूर्व अग्निवीरों को इस्रभर्ती में मिलेगा 10 फीसदी आरक्षण.....

संसद में बंद कर दिए जाते हैं .....राहुल गांधी..... 12

वर्ष : 10 | अंक : 296 | पटना, शनिवार, 11 मार्च, 2023 | फाल्गुन मास, चतुर्थी , विक्रम संवत् 2079 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

महागठबंधन ने किया विधान परिषद चुनाव के लिए उम्मीदवारों का ऐलान

जदयू के तीन, राजद व सीपीआई के एक-एक प्रत्याशी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार विधान परिषद 5 सीटों पर होने वाले चुनाव एवं उपचुनाव के लिए महागठबंधन की ओर से शुक्रवार को उम्मीदवारों की घोषणा की गई। महागठबंधन के लिए 2 स्नातक निर्वाचन क्षेत्र और 2 शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के चुनाव एवं 1 शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र का उपचुनाव हेतु महागठबंधन उम्मीदवारों की सूची जारी की। इसमें 3 सीटों पर जदयू के उम्मीदवार होंगे जबकि एक सीट पर राजद के उम्मीदवार होंगे। वहीं सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के उपचुनाव में सीपीआई के उम्मीदवार होंगे।

शुक्रवार को जदयू कार्यालय में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा की मौजूदगी में बिहार विधान परिषद् के लिए स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के दो और शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के दो चुनाव के साथ ही एक शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के लिए उपचुनाव हेतु महागठबंधन समर्थित उम्मीदवारों की घोषणा की गई। इस अवसर पर राजद के राष्ट्रीय महासचिव भोला यादव, कांग्रेस के वरीय नेता विधान पार्षद डॉ समीर कुमार सिंह, हम के राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता श्याम सुंदर शरण व राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी सह राष्ट्रीय प्रवक्ता अमरेंद्र कुमार त्रिपाठी, माले नेता केडी यादव एवं वीरेंद्र झा, सीपीआई से राम बाबू कुमार, राम लाला सिंह, सीपीएम के ललन चौधरी सहित महागठबंधन के अन्य नेतागण भी उपस्थित रहे। महागठबंधन ने सर्वसम्मति

से सारण स्नातक क्षेत्र से जदयू उम्मीदवार वीरेंद्र नारायण यादव, गया स्नातक क्षेत्र से राजद उम्मीदवार पुनीत कुमार सिंह, गया शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से जदयू के संजीव श्याम सिंह तथा कोसी शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से जदयू के डॉ संजीव कुमार सिंह प्रत्याशी बनाये गए। वहीं, सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के उपचुनाव में स्व केदारनाथ पांडे के सुपुत्र आनंद पुष्कर को सीपीआई से उम्मीदवार बनाया गया है।

इससे पहले बीजेपी ने विधान परिषद चुनाव के लिए अपने उम्मीदवार तय कर दिए हैं। पार्टी की तरफ से सारण की स्नातक सीट से महाचंद्र सिंह और सारण की शिक्षक सीट से डॉ धर्मेंद्र सिंह को चुना गया है। कोशी की शिक्षक सीट से रंजन कुमार को उम्मीदवार तय किया गया है। इसके अलावा गया की स्नातक सीट से अवधेश नारायण सिंह को उम्मीदवार बनाया गया है। बीजेपी केंद्रीय चुनाव समिति ने ये निर्णय लिया। बिहार विधान परिषद की चार सीटों को लेकर सूचना जारी कर दी गई। नामांकन 13 मार्च तक किया जा सकेगा। उम्मीदवार वापसी की आखिरी तारीख 16 मार्च होगी। 31 मार्च को मतदान होगा। 5 अप्रैल को मतगणना होगी। उसके बाद परिणाम घोषित कर दिए जाएंगे। सभी पार्टियों के तरफ से उम्मीदवार तैयारी में जुट चुके हैं।

मौसम

अधिकतम तापमान 33.0°C

न्यूनतम तापमान 19.0°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	57,425
चांदी	55,300
सेंसेक्स	59,135
निफ्टी	17,413

शराबबंदी के अध्ययन के संबंध में आए छत्तीसगढ़ विधानमंडल दल के 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात

नीतीश बोलें- शराबबंदी से माहौल में हुआ बदलाव, पर्यटकों की संख्या बढ़ी

प्रदेश के 99 प्रतिशत महिलाएं व 92-93 प्रतिशत पुरुष शराबबंदी के पक्ष में

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से 1 अणे मार्ग स्थित संकल्प में बिहार में सफलतापूर्वक लागू पूर्ण शराबबंदी के अध्ययन के संबंध में आये हुये छत्तीसगढ़ विधानमंडल दल के 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को मुलाकात की। मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री ने अध्ययन दल को राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू करने को लेकर किए गए प्रयासों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं की मांग पर हमने 05 अप्रैल, 2016 से बिहार में पूर्ण शराबबंदी लागू कर दी। उन्होंने कहा कि जब हम बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे, उसी समय से हम शराब के खिलाफ रहे हैं। शराब का सेवन बहुत बुरी चीज है। जननायक कपूरी ठाकुर ने अपने कार्यकाल में बिहार में शराबबंदी लागू की थी लेकिन उनके हटने के बाद यह खत्म हो गया। उन्होंने कहा कि सरकार में आने के बाद से ही हम शराब के खिलाफ अभियान चलाते रहे हैं। शराब के कारोबार से राज्य को 5 हजार करोड़ रुपए प्रतिवर्ष राजस्व के रुप में आमदनी हो रही थी लेकिन 10 हजार करोड़ रुपए लोगों का शराब पर खर्च हो रहा था। शराबबंदी लागू होने के बाद लोग उन पैसों का उपयोग अपनी जरुरत के लिए करने लगे। सब्जी, फल, दूध की बिक्री बढ़ी है। लोगों के खान-पान, शिक्षा, रहन-सहन में सुधार हुआ है। शराबबंदी को लेकर हमलोग लगातार अभियान चला रहे हैं। सभी जिलों में जाकर हमने लोगों से मुलाकात की, बातें की। उस दौरान एक महिला ने आपबीती सुनाते हुए बताया था कि मेरे पति पहले शराब पीते थे, काम करते थे लेकिन घर पर पैसा लेकर नहीं आते थे, घर का माहौल खराब रहता था लेकिन शराबबंदी के बाद वे जब घर आते हैं तो बाजार से सब्जी सहित अन्य सामान लेकर आते हैं, खुश रहते हैं और अब घर का माहौल अच्छा रहता है। राज्य में कारोबार बेहतर हो रहा है। कुछ लोग कहते थे कि शराबबंदी के बाद राज्य में पर्यटक नहीं आएंगे लेकिन शराबबंदी के बाद पर्यटकों की संख्या और बढ़ी है। समाज में 90 प्रतिशत लोग सही होते हैं, 10 प्रतिशत लोग गड़बड़ करने वाले होते हैं। राज्य में शराबबंदी कानून का सख्ती से पालन कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2018 में सर्वे से जानकारी मिली कि 1 करोड़ 64 लाख लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया है। हाल ही में चाणक्या लॉ विश्वविद्यालय, पटना के सर्वे से पता चला है कि 1 करोड़ 82 लाख लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया है। बिहार में 99 प्रतिशत महिलाएं तथा 92-93 प्रतिशत पुरुष शराबबंदी के पक्ष में हैं।

शराबबंदी से सामाजिक और आर्थिक रुप स हो रहा बदलाव : बिहार में शराबबंदी के अध्ययन के संबंध में आए हुए छत्तीसगढ़ विधानमंडल दल के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात के दौरान अपनी बात रखते हुए कहा कि बिहार में मुख्यमंत्री की दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण पूर्ण शराबबंदी लागू हो सकी है। हर जगह महिलाएं शराबबंदी की प्रशंसा कर रही हैं और इसके फायदे बता रही हैं। जनता आपके अच्छे कामों की प्रशंसा कर रही है। शराबबंदी से सामाजिक और आर्थिक रुप से बदलाव हो रहा है। सामाजिक बुराई से मुक्ति मिल रही है। समाज में अच्छा वातावरण बन रहा है। आपने जो अच्छे काम किए हैं उसकी सभी जगह प्रशंसा हो रही है। बापू के आदर्शों को अपनाते हुए आप आगे बढ़ रहे हैं। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल दल के अध्यक्ष, विधायक सत्यनारायण शर्मा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पुष्पगुच्छ, अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह भेंट किया। मुख्यमंत्री ने आए हुए प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों को अंग वस्त्र भेंटकर सम्मानित किया।

ये रहें मौजूद : इस अवसर पर मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन मंत्री सुनील कुमार, छत्तीसगढ़ से आए हुए प्रतिनिधिमंडल दल के अध्यक्ष, विधायक सत्यनारायण शर्मा, विधायक द्वारिकाधीश यादव, विधायक रश्मि आशीष सिंह, विधायक शिशुपाल सोरी, विधायक कुंवर सिंह निषाद, विधायक दलेश्वर साहु, विधायक पुरुषोत्तम कंवर, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के अपर मुख्य सचिव के के पाठक, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, छतीसगढ़ आबकारी विभाग के सचिव निरंजन दास, आयुक्त, उत्पाद बी कार्तिकेय धनजी, अपर पुलिस महानिदेशक, मद्य निषेध अमृत राज, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, जीविका के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी सह जल-जीवन-हरियाली के मिशन निदेशक राहुल कुमार सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

शराब कार्य से जुड़े हुए लोगों को जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से दी जा रही मदद

उन्होंने कहा कि शराबबंदी के बाद शराब कार्य से जुड़े हुए लोगों को काम छोड़ने पर उन्हें सतत जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से मदद दी जा रही है, जिससे वे अन्य कार्यों से जुड़ रहे हैं और अपना जीविकोपार्जन कर रहे हैं। वातावरण में बदलाव देखने को मिल रहा है। ताड़ी की जगह नीरा का उत्पादन शुरू कराया गया है। नीरा स्वास्थ्य के लिए अच्छी चीज है। हमने स्वयं सहायता समूह बनाया और उसका नामकरण जीविका किया। तत्कालीन केंद्र सरकार के मंत्री जयराम रमेश बिहार आए और उन्होंने जीविका की काफी प्रशंसा की और पूरे देश में इसे आजीविका नाम से शुरू किया गया। बिहार में 10 लाख से अधिक सहायता समूह का गठन हो चुका है, जिससे 1 करोड़ 30 लाख से अधिक महिलाएं जुड़ चुकी हैं। उन्होंने कहा कि लड़कियों के लिए पोशाक और साइकिल योजना चलायी गई ताकि वे बेहतर ढंग से पढ़ाई कर सकें। साइकिल योजना को देखने और जानने के लिए बाहर से लोग आए थे। बिहार में विकास के काम भी तेजी से किए जा रहे हैं। हमलोगों ने कई बेहतर काम किये हैं। हमलोग काम में विश्वास करते हैं प्रचार-प्रसार में नहीं। पटना में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बिहार म्यूजियम बनाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शराब पीने से होनेवाले नुकसान के संबंध में अध्ययन कराकर वर्ष 2018 में सर्वे की रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इसमें बताया गया कि पूरे एक वर्ष में 30 लाख लोगों की मृत्यु हुई, जिसमें 5.3 प्रतिशत मौत शराब पीने से हुई। 20 से 39 आयु वर्ग के लोगों में 13.5 प्रतिशत लोगों की मृत्यु शराब पीने के कारण होती है। जितने आत्महत्या के मामले आते हैं उसमें 18 प्रतिशत आत्महत्या शराब पीने के कारण होती है। शराब पीकर गाड़ी चलाने से 27 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। शराब पीने से 200 प्रकार की गंभीर बीमारियां भी होती हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को समझाया करते थे कि शराब बुरी चीज है, इसका सेवन न करें। बापू ने कहा था कि शराब न सिर्फ आदमियों का पैसा छीन लेती है बल्कि बुद्धि भी हर लेती है। शराब पीने वाला इंसान हैवान हो जाता है। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट और बापू के कथन को हमने बुकलेट में छपवाया है और इसे सभी लोगों तक पहुंचवा दिया है ताकि वे जागरुक हो सकें। आपलोग भी बुकलेट को देखिएगा। शराबबंदी के साथ-साथ बाल विवाह एवं दहेज प्रथा के दुष्प्रभावों की भी इसमें चर्चा है। हमलोग शराबबंदी के साथ-साथ बाल विवाह एवं दहेज प्रथा के खिलाफ लगातार अभियान चला रहे हैं। कई राज्य की महिला संगठनों ने शराबबंदी को लेकर हमें आमंत्रित किया था। हमने उन बैठकों में जाकर अपनी बातों को रखा था और कहा कि शराब का सेवन बुरी चीज है। शराबबंदी सभी जगह लागू होनी चाहिए।

मोदी ने अल्बनीज के समक्ष ऑस्ट्रेलिया में मंदिरों पर हमले का मुद्दा उठाया

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को अपने ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष एंथनी अल्बनीज के समक्ष हाल ही में ऑस्ट्रेलिया में मंदिरों पर हुए हमलों का मुद्दा उठाया। यह मामला उनकी उस व्यापक वार्ता के दौरान चर्चा के लिए आया, जिसका उद्देश्य समग्र संबंधों का विस्तार करना था। वार्ता के बाद संवाददाताओं को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया में मंदिरों पर हमले की खबरें नियमित रूप से आ रही हैं। उन्होंने कहा, स्वाभाविक है, ऐसे समाचार भारत में सभी लोगों को चिंतित करते हैं और हमारे मन को व्यथित करते हैं। मोदी ने कहा कि उन्होंने इन भावनाओं और चिंताओं से प्रधानमंत्री अल्बनीज को अवगत कराया। प्रधानमंत्री ने कहा, ह्यह्यउन्होंने मुझे आश्वस्त किया है कि भारतीय समुदाय की सुरक्षा उनके लिए विशेष प्राथमिकता है। भारतीय प्रधानमंत्री ने कहा कि इस विषय पर दोनों देशों के दल नियमित रूप से संपर्क में रहेंगे और यथासंभव सहयोग करेंगे। मोदी ने कहा कि उन्होंने अपने ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और आपसी सुरक्षा बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। मोदी ने कहा, हमने विश्वसनीय और मजबूत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला विकसित करने के लिए आपसी सहयोग पर चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी कहा कि दोनों पक्ष एक व्यापक आर्थिक समझौते पर काम कर रहे हैं। मोदी ने कहा, रक्षा के क्षेत्र में हमने पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय समझौते किए हैं, जिनमें एक-दूसरे की सेनाओं के लिए साजो-सामान संबंधी सहयोग भी शामिल है। अल्बनीज ने अपनी टिप्पणी में कहा कि मोदी और वह भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते को जल्द से जल्द पूरा करने पर सहमत हुए। उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद है कि हम इस साल इसे अंतिम रूप दे देंगे। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री अहमदाबाद और मुंबई में अपने कार्यक्रमों के समापन के बाद बृहस्पतिवार की शाम को दिल्ली पहुंचे।

संक्षिप्त खबरें

तमिलनाडु मामले की जांच करने गये विशेष दल ने मुख्यमंत्री को सौंपी रिपोर्ट

पटना। सोशल मीडिया पर प्रसारित कुछ वीडियो जिसमें तमिलनाडु में बिहार के लोगों पर किये जा रहे कथित हमले को दर्शाया गया था, की जांच हेतु मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर बिहार सरकार द्वारा बालामुरुगन डी सचिव, ग्रामीण विकास विभाग के नेतृत्व में एक विषेष दल का गठन कर तमिलनाडु भेजा गया था। बिहार सरकार द्वारा गठित चार सदस्यीय वेशेष दल द्वारा 4 मार्च से लेकर 7 मार्च तक तमिलनाडु के चेन्नई, तेरूपुर एवं कोयंबटूर जिलों में जेला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, इंडस्ट्री एसोसियेशन के प्रतिनिधियों के साथ-साथ वहां की वेभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं वहां रह रहे बिहार के लोगों से मामले को लेकर बातचीत की । वेशेष दल ने शुक्रवार को संकल्प, । अणे मार्ग में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को अपनी रिपोर्ट सौंपी तथा वेशेष दल द्वारा मुख्यमंत्री को वेस्तार से पूरे मामले की जानकारी दी। विशेष दल ने बताया के सोशल मीडिया में प्रचलित 7 वीडियो के साथ समाचार/संदेश जो बेहार के प्रवासी श्रमिकों के मोबाइल फोन पर पाये गये, वे भ्रामक पाये गये। विशेष दल ने बताया कि घटनायें जिनके वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुये वह घटना इस संदर्भ में नहीं घटी थीं, ये सभी वायरल वीडियो गलत पाये गये। विशेष दल ने यह भी बताया गया कि 4 मार्च को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के स्तर से एक प्रेस वेज्ञप्ति जारी कर अतिथि श्रमिकों को उनकी सुरक्षा का आश्वासन भी दिया गया।

ईडी की छापेमारी पर भड़की रोहिणी, बोली- अन्याय का जवाब वक्त आने पर मिलेगा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य ने भाजपा पर केन्द्र सरकार पर जमकर हमला बोला है। रोहिणी ने भाजपा की तुलना महाभारत के खलनायक पात्र कंस से की है। लैंड फॉर जॉब के नाम से चर्चित नौकरी के लिए जमीन घोटाला मामले में पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव समेत परिवार के कई सदस्यों के खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय कार्रवाई कर रही है। शुक्रवार को ईडी की ओर से लालू यादव के साथ डिप्टी सीएम पुत्र तेजस्वी यादव और उनकी बेटियों पर ठिकानों पर सर्च ऑपरेशन चलाया गया है। इस मामले को लेकर रोहिणी ने ट्वीट कर केंद्र सरकार और बीजेपी पर तीखा प्रहार किया है।

रोहिणी आचार्य ने ट्वीट कर लिखा कि कंस ने भी गर्ववती माता का अपमान किया था, फिर क्या हुआ कंश का याद तो होगा ही ? तुम लोगों का भी वक्त नजदीक है। एक अन्य ट्वीट में रोहिणी ने बीजेपी को चेतावनी लहजे में कहा है कि तुमलोग और कितना गिरोगे। समय बलवान होता है। पंद्रह साल पुराना बंद केस लकर दंगाई. बेटी जलाओ पार्टी, भगोड़े, तड़ीपार लोग क्या साबित करना चाहते हो ? आगे कहती हैं कि कुछ तो शर्म करो। घर में एक गर्भवती बहु है।

बहनों के छोटे-छोटे बच्चे हैं। उन्हें टॉर्चर करने का पाप तो तुमलोगों को लगेगा ही। रोहिणी ने बीजेपी की ओर इशारा करते हुए और भी लिखा है। कहती हैं कि यह अन्याय हम याद रखेंगे सब याद रखा जाएगा। बहन के छोटे - छोटे बच्चों ने क्या गुनाह किया है ? गर्भवती भाभी ने क्या गुनाह किया है ? क्यों सबको टॉर्चर किया जा रहा है ? आज सुबह से सबको टॉर्चर किया जा रहा है। इनलोग का गुनाह सिर्फ इतना ही है न कि फासिस्ट और दंगाईयों के आगे कभी नहीं झुका लालू-राबड़ी परिवार। तुमलोगों के इस अन्याय का जवाब वक्त आने पर मिलेगा। अब यह सब बर्दाश्त से बाहर है। दरअसल, लैंड फॉर जॉब स्कैम मामले में शुक्रवार को देशभर में लालू परिवार और उनके करीबी और संबंधियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। जानकारी के मुताबिक पटना से रांची और दिल्ली से मुंबई तक कई ठिकानों पर छापेमारी की है। एजेंसी लालू यादव के बेटे, बेटी, समधी, दामाद और उनसे जुड़े चार्टर्ड कर रही है।

सीएम नीतीश ने अमर शहीद जुब्बा सहनी की प्रतिमा का किया अनावरण

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को मोईनुलहक स्टेडियम, राजेन्द्र नगर के दक्षिण-पष्चिम कोने पर अवस्थित नवनिर्मित पार्क का फीता काटकर उद्घाटन एवं नवनिर्मित पार्क में स्थापित अमर शहीद जुब्बा सहनी की प्रतिमा का अनावरण किया।

अनावरण के बाद मुख्यमंत्री ने अमर शहीद जुब्बा सहनी जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया और अपनी श्रद्धांजलि दी। नवनिर्मित पार्क में मुख्यमंत्री ने वृक्षारोपण भी किया। इस अवसर पर समाज कल्याण मंत्री मदन सहनी, जल संसाधन सह सूचना एवं जन-सम्पर्क मंत्री संजय कुमार झा, भवन निर्माण मंत्री अशोक चौधरी, विधान पार्षद संजय सिंह, विधान पार्षद भीष्म सहनी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त परामर्शी मनीष कुमार वर्मा, भवन निर्माण विभाग के सचिव सह पटना प्रमण्डल के आयुक्त कुमार रवि, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, जिलाधिकारी चंद्रशेखर सिंह, राज्य नागरिक परिषद् के पूर्व महासचिव अरविंद कुमार सिंह, राज्य खाद्य आयोग के पूर्व सदस्य नंदकिशोर कुशवाहा, बिहार बाल अधिकार संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य शिवशंकर निषाद, जदयू नेता ओमप्रकाश सेतु सहित अन्य वरीय अधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शिलान्यास राज्यपाल ने मंदारेश्वर काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का किया शिलान्यास

हमारा देश चिड़ियां बनकर नहीं रहेगा बल्कि सोने का शेर बनेगा : आर्लेकर

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बाँका जिलान्तर्गत बौंसी में अवस्थित मंदार पर्वत पर मंदारेश्वर काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का शिलान्यास किया। उन्होंने मधुसूदन मंदिर एवं गुरूधाम में पूजा-अर्चना भी की। इस अवसर पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए राज्यपाल ने कहा कि मंदार पर्वत पर आकर शिलान्यास करना उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि यहाँ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कार्य किये जा रहे

हैं। इस स्थल को वर्ल्ड हेरिटेज के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। इस अवसर पर अद्वैत मिशन स्कूल, बौंसी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि वह हिमाचल प्रदेश से बिहार आये हैं और यह राज्य भी उसी की भाँति देवभूमि है। राज्यपाल ने कहा कि मंदिर के पुनर्निर्माण का अर्थ राष्ट्र जीवन का पुनर्निर्माण होता है। इस राष्ट्र का जीवन कुछ वर्षों से अंधेरे में रहा है, परन्तु इसका पुनर्निर्माण करने के लिए जब सभी जगह से राष्ट्र शक्तियाँ जागृत हो उठी हैं, तब मंदिर निमार्ण होते रहेंगे। राष्ट्र निर्माण के इस कार्य में हमें सहभागी बनना है। उन्होंने कहा कि इस देश में जब-जब मंदिर निर्माण का कार्य होता है तब उन्हें लगता है कि राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र जीवन के हित की शुरूआत होती है। उन्होंने कहा कि आज यहाँ केवल मंदिर निर्माण का नहीं बल्कि राष्ट्र भक्ति और जीवन शक्ति को जागृत करने हेतु महायज्ञ की शुरूआत हुई है और हमें इसमें सहभागी बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने आगामी 25 वर्षों के लिए हमें अमृत काल का संदेश दिया है। यह स्व-जागरण, स्व-संस्कृति, स्व-इतिहास और स्व-परंपरा को जागृत करने का समय है। अमृत काल पुनर्निर्माण का समय है। इस सोच के साथ आगे बढ़ने और काम करने पर हमारा देश विश्व गुरू बन सकेगा। राज्यपाल ने कहा कि भारत को सोने की चिड़ियाँ कहा जाता रहा और अन्य देश इसे लूटते रहे। उन्होंने कहा कि भारत के लिए इस विशेषण से वह संतुष्ट नहीं हैं। हमारा देश चिड़ियाँ बनकर नहीं रहेगा बल्कि सोने का शेर बनेगा। पूरे विश्व को लगना चाहिए कि भारत उनका गुरू है। इसके लिए हमें संकल्पित होकर कार्य करना होगा।

इस अवसर पर जगतगुरू स्वामी अनंताचार्य, केन्द्रीय राज्यमंत्री अश्विनी कुमार चौबे, लेडी गवर्नर अनघा आर्लेकर, विधायक पवन यादव, विधायक निक्की हेम्ब्रम एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

देवी मंदिर में चोरी

फतुहा। थाना क्षेत्र के सुल्तानपुर गांव स्थित देवी मंदिर से अज्ञात चोरों द्वारा तोड़फोड़ करते हुए कई सामानों की चोरी कर लिए जाने का मामला प्रकाश में आया है। इस सन्दर्भ में ग्रामीणों द्वारा थाने में शिकायत दर्ज करायी है। बताया जाता है कि अज्ञात चोरों द्वारा मंदिर परिसर से पंखे, दान पेटी व अन्य पूजा की सामाग्री चोरी कर ली गयी है। यह घटना बीते बुधवार की देर रात की है। ग्रामीणों के मुताबिक मंदिर में तोड़फोड़ करते हुए चोरी की गयी है। शिकायत के आलोक में पुलिस मामले की छानबीन करने में जुटी है।

सैदपुर नाला को पाठ रोड बनाने को सीएम को सौंपा पत्र

पटना सिटी। जुब्बा सहनी पार्क बहादुरपुर राजेन्द्रनगर का अनावरण मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा किया गया। इस अवसर पर चिन्हित लोगों से मिलने के बाद पाटलिपुत्र नगर विकास समिति के अध्यक्ष रितेश कुमार बबलू और पटना फ्रूट्स मर्चेंट एसोसिएशन के महासचिव मो भुट्टो खान ने सैदपुर नाला को पाट कर सड़क निर्माण से संबंधित आवेदन सीएम को प्रदान किया। साथ ही वर्ष 2017 से अब तक का पेपर कटिंग भी साथ में दिया गया। मुख्यमंत्री आवेदन लेने के साथ ही उसे देखा और फिर अपने पीएस को इसे देते हुए इसे देखने का आदेश दिया। उसके बाद उनके पीएस ने आवेदन सौंपने वाले रितेश कुमार बबलू और भुट्टो खान का नाम, पता के साथ मोबाइल नंबर भी दिया, ताकि संबंधित विषय पर जल्द बात करने की बात कही। इस अवसर पर समिति के वरुण कुमार, दिलीप यादव, पुतुल मिश्रा, राजेश रमण, धीरेन्द्र कुमार, गौरभ पोद्दार, गजेंद्र कुमार आदि मौजूद थे।

जुब्बा साहनी की प्रतिमा लगाने पर सीएम का जताया आभार

पटना सिटी (प्राकि)। बिहार निषाद संघ के अध्यक्ष त्रिलोक सिंह निषाद ने बयान जारी कर कहा कि संघ और निषाद समाज की काफी दिनों पुरानी मांग पटना में अमर शहीद जुब्बा सहनी की प्रतिमा लगाने की मांग की जा रही थी। वे भारत माता की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया। उनकी आदमकद प्रतिमा शुक्रवार को नवनिर्मित पार्क मैकडॉवेल चौराहा राजेंद्र नगर स्टेडियम के पास मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा अमर शहीद जुब्बा साहनी की आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया गया। इसके लिए बिहार निषाद संघ के सभी पदाधिकारी, सदस्य एवं बिहार का निषाद समाज मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कोटि-कोटि धन्यवाद देता है। धन्यवाद देने वालों में संघ के अध्यक्ष त्रिलोक सिंह निषाद, प्रधान महासचिव हरिहर सिंह, पटना महानगर के अध्यक्ष बृजेश कुमार, सचिव दिलीप महतो, रामजी साहनी, चंद्रभूषण, गौरी शंकर निषाद, रंजीत सिंह निषाद, कन्हैया सिंह निषाद, परमजीत सिंह निषाद, गंगाजली देवी, गायत्री देवी, बेबी देवी, बबीता देवी आदि हैं।

स्वास्थ्य शिविर आज खानकाहे मुनेमिया में

पटना सिटी (प्राकि)। एहसास संस्था के द्वारा बिग अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल के चिकित्सक एवं प्रतिष्ठित डॉक्टर की टीम के द्वारा शनिवार को निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया है नितिन घाट स्थित खान का है मुन्ने मियां परिसर में आयोजित हेल्थ कैंप के बारे में सज्जादा नशीन सय्यद शाह शमीम अहमद मुनि ने बताया कि इसमें हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण रोग किडनी मधुमेह दांत आंख स्त्री रोग पेट हृदय रोग सांस एवं छाती रोग से संबंधित वरीय चिकित्सकों के द्वारा मरीजों का इलाज एवं सलाह देने का काम किया जाएगा शनिवार को यह आयोजन दोपहर 12 बजे से अपराह्न तीन बजे तक किया जाएगा।

विश्व किडनी दिवस लोगों को किया जागरूक

पटना सिटी (प्राकि)। एनएमसीएच में संचालित अपोलो डायलिसिस केंद्र की ओर से विश्व किडनी दिवस पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन शहीद रामगोविंद बालिका उच्च विद्यालय, दशरथा में किया गया। इसमें डॉ रिजवान अहमद, प्रबंधक अभिषेक कुमार, बलबीर कुमार, जितेंद्र कुमार, साबिर खान, आरती कुमारी शामिल थीं। इस दौरान स्कूल की शिक्षिका मणि सिन्हा और नीलम कुमारी ने विद्यालय में अतिथियों का स्वागत किया। जागरुकता कार्यक्रम में किडनी को सुरक्षित रखने के लिए पानी अधिक पीने और जंक फूड से दूर रहने की अपील की गई।

जनता नहीं, पुलिस के आवेदन पर स्कूल निदेशक के खिलाफ दर्ज हुआ मामला

देशी पिस्टल, दो गोली, राइफल, एयरगन व एक पिस्टल जैसा हथियार हुआ बरामद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बाइपास थाना क्षेत्र के गुरु गोविंद सिंह लिंक पथ स्थित पटना सिटी सेंट्रल स्कूल के निदेशक पवन कुमार दर्शन नशे में धुत होकर फायरिंग करने और आसपास के लोगों को हथियार दिखाकर धमकाने और जान से मारने की धमकी भी दी जा रही थी। घटना 8 मार्च को पूर्वाह्न करीब 11 बजे के आसपास की है। मोहल्ले के लोगों के जुटने के बाद बाइपास थाने की पुलिस को सूचित किया गया। साथ ही साक्ष्य के रूप में वीडियो भी दिया गया। लोगों ने एक हस्तलिखित आवेदन भी थाना को दिया, जिसकी प्राप्ति भी दी गई। मगर उस आवेदन पर मामला दर्ज नहीं करते हुए एसआई बृजनंदन प्रसाद गुप्ता के आवेदन पर मामला दर्ज किया गया है।

दरअसल मोहल्ले के लोगों में अजीत यादव, रवि कुमार, सुधीर कुमार, बिंदु कुमार सिंह, विक्की कुमार, रविकांत सहित अन्य ने एक लिखित आवेदन बाइपास थाना के थानाध्यक्ष को 8 मार्च को सौंपा। इसमें कहा गया कि पटना सिटी सेंट्रल स्कूल के निदेशक पवन कुमार दर्शन के द्वारा आए दिन मोहल्ले में शराब पीकर नशे की हालत में हथियार से मोहल्ले वाले को धमकाया और जान से मारने की धमकी दी जाती है। आठ मार्च को पूर्वाह्न करीब 11 बजे के आसपास मोहल्लावासियों के साथ बंदूक लहरा कर डराया और धमकाया गया। इसके बाद मुहल्ले के लोग इकट्ठा होकर थाने को सूचित किए। साक्षी के रूप में वीडियो भी पेश है। थाना में दिए गए आवेदन की प्राप्ति भी है। इस बीच उक्त थाना के पुअनि बृजनंदन प्रसाद गुप्ता ने थानाध्यक्ष को एक आवेदन सौंपा, जिसमें कहा गया कि 8 मार्च को पूर्वाह्न करीब 10 बजे वह छोटी पहाड़ी के पास गश्ती में थे, तभी गुरु गोविंद सिंह लिंक पथ स्थित इस स्कूल में एक व्यक्ति अपने हाथ में हथियार लेकर लहरा रहा और स्थानीय लोगों को धमकी देते हुए फायरिंग कर उक्त स्कूल परिसर के आवासीय कमरा में घुस कर अपने आपको बंद कर लिया है। सूचना के सत्यापन और आवश्यक कार्रवाई के लिए वरीय अधिकारी को सूचित करते हुए वहां पहुंचे, तो देखा कि बड़ी संख्या में लोग जुटे हैं। लोगों के द्वारा बताया गया कि एक व्यक्ति फायरिंग कर धमकी देते हुए स्कूल के कमरे में घुस गया है। इसकी सूचना थानाध्यक्ष को देने पर वे भी दल-बल के साथ पहुंचे। पुलिस बल के सहयोग से उक्त व्यक्ति को पुलिस ने स्कूल परिसर के आवासीय कमरा से किसी तरह से दरवाजा खुलवा कर अपने कब्जे में लिया। उसने अपना नाम डॉ पवन कुमार दर्शन पिता नंदलाल सिंह, साकिन सुलतानगंज थाना क्षेत्र के महेंद्रू शिव मंदिर के पास पोस्ट ऑफिस के सामने और पटना सिटी सेंट्रल स्कूल, दर्शन विहार का निदेशक बताया। उस समय दो स्वतंत्र गवाह अनिल यादव पिता स्व रघुवर दयाल और नीरज कुमार पांडेय पिता टीएन पांडेय के समक्ष तलाशी ली गई। स्कूल परिसर के आवासीय कमरा से एक लोडेड देसी पिस्टल, जिसे अपलोड करने पर एक जिंदा कारतूस मिला। एक अवैध राइफल के अलावा एक एयर गन और एक पिस्टल जैसा अवैध हथियार भी मिला। इस संबंध में बाइपास थाना में कांड 115/23 दर्ज करते हुए धारा 25 (क्ु)अ/26 आर्म्स एक्ट लगाया गया है। एसआई संजय कुमार को अनुसंधान की जिम्मेवारी दी गई है। हालांकि लोगों के द्वारा बताया गया कि कि निदेशक डॉ पवन कुमार दर्शन नशे में धुत थे, मगर दर्ज प्राथमिकी में इसका जिक्र नहीं है। लोगों के बीच चर्चा रही कि शिक्षा का मंदिर चलाने वाले निदेशक को आखिर हथियार की क्या जरूरत पड़ गई और स्कूल परिसर में अवैध रूप से हथियार रखना कहां तक उचित है। विदित हो कि इसके पूर्व भी मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के बिरूआचक की एक छात्रा ने इसी स्कूल के डॉ पीके दर्शन पर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया था। इसके बाद काफी बावेला हुआ था। मामला दर्ज होने के बाद उन्हें जेल भी जाना पड़ा था। सुल्तानगंज थाना में भी इनके खिलाफ मामला दर्ज है। सिटी एसपी संदीप सिंह ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है और यदि हथियार का लाइसेंस होगा, तो उसे रद्द करने की कार्रवाई की जाएगी और यदि अवैध रहा, तो नियमानुसार कानूनी कार्रवाई होगी।

कचरे के ढेर व सड़ांध से लोग बेहाल

वार्ड 65 का में रोड चकाचक, सिंधी दालान व बाग कालू खां में कचरे का डंप

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

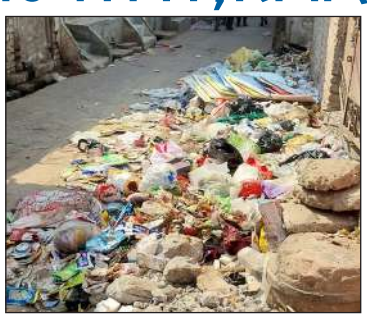

होली की खुमारी अभी भी नगर निगम के सफाई मित्रों से लेकर पर्यवेक्षक और सफाई निरीक्षकों पर नहीं उतरा है। यही कारण है कि शुक्रवार को मेन रोड यानी अशोक राजपथ पर कचरे का उठाव किया गया, मगर गलियों में कचरे का ढेर यूं ही पसरा रहा। यहां तक कि नालियां भी जाम होकर उसका पानी गलियों में बहता देखा गया। सदर गली और लोदीकटरा को जोड़ने वाला लिंक पथ बाग कालू खां में भी कचरे का ढेर देखा गया। दरअसल होली की खुमारी कहें या सफाई मित्रों की अनुपस्थिति या गलत ढंग से हाजिरी बनाना। शुक्रवार को कचरे के ढेर को उठाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। महज सफाई की खानापूर्ति करने के लिए अशोक राजपथ पर सफाई अभियान चलाया गया। इसके बाद खजेकलां घाट रोड में भी कचरे का उठाव किया गया। इसके पीछे कारण रहा कि इस मार्ग में स्थानीय विधायक का निजी आवास भी है और यहां कार्यकताओं व जनता का सुबह में जुटान भी होता है। दरअसल नगर निगम चुनाव के बाद सफाई व्यवस्था ढीली हो गई है। खासकर बाग कालू खां और सिंधी दालान में कचरा प्वाइंट पर लगातार ढेर देखा जा सकता है। यहां घर-घर कचरे का कलेक्शन भी न के बराबर ही हो पाता है। इसकी भी कोई समय-सीमा निर्धारित नहीं है। इस कारण से लोग अपने घर का कचरा बाहर में फेंकने को मजबूर है। दूसरी ओर सिंधी दालान में जहां कचरे का प्वाइंट बना कर वहां ढेर लगाया जाता है। उस रास्ते से सीबीएसई से संबद्ध निजी स्कूल और सरकारी स्कूल के छात्र गुजरते हैं। खाजेकलां और मच्छरहट्टा जाम होने की स्थिति में दोपहिया और तिपहिया वाहन भी इसी रास्ते से गुजरता है। यही नहीं, गली की चौड़ाई महज 10-12 फीट होने के कारण आसपास के घरों में कचरे के ढेर से बदबू फैलने के कारण लोग बीमारी के शिकार हो रहे हैं। जब घर-घर कचरा संग्रह होता है, तो आखिर कचरा प्वाइंट पर इतना कचरे का ढेर कहां से आता है। दरअसल पहले इस वार्ड के सफाई निरीक्षक के तौर पर धर्मेंद्र कुमार थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में सफाई मित्रों से बेहतर रिश्ता बनाते हुए काम कराना शुरू किया था, मगर दबाव के तहत उनका इस वार्ड से स्थानांतरण करा दिया गया। अब उसके बाद से सफाई व्यवस्था बिल्कुल चरमरा सी गई है। स्थिति यह है कि कहीं नाला जाम होने के कारण पानी बहता रहता है, तो कचरे का उठाव भी न के बराबर किया जाता है। होली के बाद शुक्रवार को तो बा गई कालू खां और सिंधी दलान के रास्ते से कचरा गाड़ी भी गुजरा, मगर उसे उठाने की जहमत प्रभारी सफाई निरीक्षक या पर्यवेक्षक के द्वारा नहीं कराया गया।

लापता युवक का मिला शव, हत्या की आशंका

एसएच 30 पर शव रख किया जाम, हत्यारे की गिरफ्तारी की मांग

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मालसलामी थाना क्षेत्र के रिकाबगंज मुहल्ला में बीते सात मार्च की दोपहर से लापता नीतीश कुमार का शव मिला। शव वैशाली जिला के राघोपुर थाना क्षेत्र के रामपुर भट्टी दियारा में स्थित एक खेत से मिला है।

शव को शुक्रवार को हाजीपुर सदर अस्पताल से पोस्टमार्टम कराने के बाद लाया गया। परिजनों और मुहल्ला के लोगों ने दीदारगंज चेकपोस्ट के पास एसएच 30 को जाम कर दिया और हंगामा करने लगे। आक्रोशित लोग हत्यारों को गिरफ्तार करने और परिवार को इंसाफ देने की मांग कर रहे थे। लापता युवक की गुमशुदगी का मामला मालसलामी थाना में दर्ज कराया गया था। इस आधार पर पुलिस उसकी खोजबीन कर रही थी। इसी बीच में परिजनों को उसके शव फेंके जाने की सूचना सोशल मीडिया के माध्यम से मिली। चाचा विकास कुमार और भाई अभिषेक ने बताया कि बीते सात मार्च की दोपहर को नीतीश कुमार पड़ोसी पंकज राय के साथ घर से निकला था। इसके बाद से वह लापता था। इसी बीच उससे बात करने पर उसने कहा कि एक्साइज वाला उसे उठाकर ले गया है इसके बाद वह सब कुमरार के संदलपुर स्थित एक्साइज ऑफिस गए तो वहां रजिस्टर देख कर उसकी गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं की गई बाद में फिर जब पंकज से पूछा गया, तो उसने कहा कि हमारे साथ वह कच्ची दरगाह गया था। उसके बाद उसे नहीं पता है। वह बार-बार अपना बयान बदल रहा था, जिससे उन सबों को उस पर शक हो रहा था। खोजबीन के बाद गुरुवार को शव मिला है। परिजनों ने आशंका जताई है कि नीतीश के साथ मारपीट कर उसका हाथ-पांव तोड़ने के बाद गला दबा कर उसकी हत्या की गयी है। शव को लाने के बाद उन सबों ने आरोपी की गिरफ्तारी को एसएस 30 को जाम कर दिया। इसी बीच सड़क जाम की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने आक्रोशित परिजनों को समझा-बुझा कर शांत कराया। इसके बाद सड़क जाम हटाया गया। मालसलामी थाना की पुलिस का कहना है कि मामले में जांच-पड़ताल की जा रही है। करीब तीन घंटे तक जाम रहने के कारण वाहनों का परिचालन बुरी तरह प्रभावित हुआ। रोड जाम हटने के बाद भी परिचालन को सामान्य होने में आधा से एक घंटा लगा।

नगर परिषद के बैठक में 4 लाख 11 हजार रुपए की बजट पेश की गई

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर नगर के। नगर परिषद की साधारण बोर्ड की विशेष बैठक शुक्रवार को आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता नप अध्यक्ष शिल्पी कुमारी ने करते हुए वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट स्वीकृति पर विचार करते हुए सभी क्षेत्रों की सुविधा का ख्याल किया गया है। विशेष कर कुल अनुमानित व्यय में से लगभग 25-30 प्रतिशत राशि शहरी गरीबों तथा स्लम एरिया एवं उसमें रहने वाले नागरिकों के जीवन स्तर को उपर उठाने, उन्हें आवासीय सुविधा व स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने पर बजट में विशेष ध्यान दिया गया है। कार्यपालक पदाधिकारी सुशील कुमार ने बताया कि इस बजट में वित्तीय वर्ष 2023-24 का कुल अनुमानित आय दौ सौ चौसठ करोड़ नवासी लाख साठ हजार छह सौ पचासी रूपया का है। इसके विरूद्ध दो सौ चौसठ करोड़ पचासी लाख उन्चास हजार तीन सौ दस रूपया का व्यय का प्रस्ताव अनुमानित है। इस प्रकार यह बजट चार लाख ग्याह हजार तीन सौ पचहत्तर रुपए लाभ का बजट है। वार्ड पार्षदों के अन्य राज्यों के निकायों में भ्रमण कर वहां के कार्यकलापों की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक करोड़ दस लाख रूपया व्यय किया जायेगा। वार्ड पार्षद के मानदेय में वृद्धि की संभावना को देखते हुए बजट में 18 लाख का प्रावधान किया गया है। स्ट्रीट लाईट एवं अन्य पर विद्युत व्यय के लिए दस करोड़ छियासी लाख पचास हजार रूपया व्यय किया जायेगा। उन्होंने बताया कि चलन्त शौचालय पर तीन करोड़ अस्सी लाख , मुहल्ला क्लिनिक व वार्ड कार्यालय पर आठ करोड़ , नगर परिषद में वाहनों की खरीदारी पर चार करोड़ पचास लाख , सबके लिए आवास पर 25 करोड़ रूपया व्यय किया जायेगा । बैठक में सिटी मैनेजर विनय कुमार के अलावा सभी पार्षद मौजूद थे ।

स्कार्पियो सवार ने फायरिंग कर मसौढ़ी मोड़ पर फैलाया दहशत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना-मसौढ़ी रोड में गुरुवार की रात स्कार्पियो पर सवार छह-सात की संख्या में रहे अपराधियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर दहशत फैला दिया। इतना ही नहीं, कृष्णा रथ बस और स्कार्पियो में तोडफोड़ की गई। इसके बाद उसी वाहन से बदमाश जक्कनपुर थाना क्षेत्र में पहुंच कर फायरिंग की। शहर में घूम-घूम कर फायरिंग करने की सूचना मिलते ही वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्र के निर्देश पर नगर पुलिस अधीक्षक पूर्वी और सहायक पुलिस अधीक्षक पटना सिटी के नेतृत्व में टीम गठित हुई। इसका नेतृत्व अगमकुआं थानाध्यक्ष सुधीर कुमार कर रहे थे। टीम ने चार घंटे में फायरिंग करने वाले सात बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया। एएसपी अमित रंजन ने बताया कि घटना होने के चार घंटे के अंदर सभी अपराधकर्मियों को घटना में प्रयुक्त वाहन, अवैध हथियार और अन्य सामान के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार से पूछताछ करने पर पता चला कि अपराधकर्मी बैरिया बस स्टैंड में हाकर और मैनेजर के रूप में काम करते हैं। यह सब बसों में सवारी को बैठाने एवं बस मालिक से रुपया लेने का काम करते हैं। अधिक सवारी बस में चढ़ाने एवं अपना दबदबा कायम करने के लिए इन लोगों ने फायरिंग की घटना को अंजाम दिया था। गिरफ्तार अपराधकर्मी में प्रमुख रूप से राजीव रंजन उर्फ डिंपल है। उसने अपने नंदन सिंह उर्फ नंदू के साथ मिलकर बस स्टैंड में वर्चस्व कायम करना चाह रहा था। इन्हीं अपराधियों के द्वारा नौ मार्च को रात करीब 8.30 बजे जक्कनपुर थाना अंतर्गत जयप्रकाश नगर के कदम गली में गुजरने के दौरान वहां एक क्वीढ गाड़ी के चालक से बकझक होने पर शराब के नशे में उन सबों के द्वारा जक्कनपुर थाना क्षेत्र के जयप्रकाश नगर के कदम गली के रहने वाले अनुराग कुमार पर फायरिंग कर दिया।

इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। यह सब वहां से भाग कर इधर-उधर छिपने में लगे थे कि टीम के द्वारा उन सबों को अगमकुआं थाना क्षेत्र के शीतला नगर से गिरफ्तार कर लिया गया। इन सबों के पास से एक स्कॉर्पियो गाड़ी, जिस पर निबंधन संख्या बीआर 01पीएम 8566 लिखा था, के अलावा तीन पिस्टल, एक देसी कट्टा, 17 गोली और आठ मोबाइल बरामद किया गया है।गिरफ्तार लोगों में अगमकुआं थाना क्षेत्र के छोटी पहाड़ी रशीदाचक का राजीव रंजन उर्फ डिंपल पिता लालबाबू पासवान, फतुहा थाना क्षेत्र के सुरंगा पर के अजय कुमार उर्फ सोनू कुमार पिता स्व चंद्रदीप प्रसाद, जक्कनपुर थाना क्षेत्र के जयप्रकाश नगर तीनपुलवा के रंजन कुमार उर्फ गुड्डू कुमार पिता स्व अवधेश प्रसाद, जक्कनपुर थाना क्षेत्र के पोस्टल पार्क रोड नंबर 3बी के नंदन सिंह उर्फ नंदू पिता स्व उमेश सिंह, अरवल जिला के कुर्था थाना क्षेत्र के पोनदिल का रहने वाला मुकेश कुमार पिता कामता प्रसाद सिंह, दनियावां थाना के दरवेशी का रहने वाला चंद्रशेखर कुमार उर्फ शेखर पिता किशोरी पासवान और आलमगंज थाना क्षेत्र के बिस्कोमान गोलंबर के पास का रहने वाला अंकित मिश्रा उर्फ राज पिता गोविंद मिश्रा है। एएसपी अमित रंजन ने बताया कि टीम में शामिल पदाधिकारियों में अगमकुआं थाना के थानाध्यक्ष सह इंस्पेक्टर सुधीर कुमार, एसआई विपिन बिहारी, श्यामला कुमार, सत्येंद्र कुमार सिंह, अविनाश कुमार, संजीव कुमार और आशीष कुमार पाल शामिल थे।

महिला का हाथ-पैर बांध करीब दो लाख की संपत्ति की चोरी

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। मालसलामी थाना क्षेत्र के नुरुद्दीनगंज में महिला वीणा देवी को बंधक बना कर करीब दो लाख की संपत्ति की चोरी कर ली गई। शुक्रवार को मामला प्रकाश में आने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन शुरू की। महिला वीणा के अनुसार दो की संख्या में रहे बदमाशों ने लगभग दो लाख रुपये के आभूषण और कैश लूट लिया है।

थानाध्यक्ष प्रमोद कुमार ने बताया कि परिजनों की ओर से चोरी की बात कही गयी है। पुलिस मामले में छानबीन कर रही है। बताया जाता है कि महिला का बेटा परिवार के साथ देवघर बाबा बैद्यनाथ की पूजा-अर्चना को गया था। इसी बीच में यह घटना हुई है। महिला अपने घर में सोई थी। उसने बताया कि मच्छर लगने के कारण वह कंबल ओढ़ रखी थी। अचानक से रात करीब एक बजे के आसपास दो की संख्या में अपराधी घुसा और अचानक से उसके शरीर पर रहे कंबल को खींच लिया। इस दौरान उसका मुंह हाथ से दबा दिया। रस्सी से उसका हाथ-पैर बांधने के साथ ही मुंह भी बंद कर दिया गया। इसके बाद वह पूजा घर में गया। एक रूम का ताला तोड़कर उसने काफी खोजबीन किया, मगर कुछ नहीं मिला। अंत में वह बेटे के कमरे में गया और वहां से बहू का एक सेट जेवर और कुछ नगद रुपया लेकर चला गया। बेटा के लौटने के बाद ही कहा जा सकेगा कि कितना रुपया था। हालांकि घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस घर पर जाकर मामले की तहकीकात की है।

बाहरी धवलपुरा में युवक की गोली मार हत्या में एक गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी । होली के गीत, नाच और गाने के दौरान हुई आपसी कहा-सुनी के बाद गुरुवार की रात बाइपास थाना क्षेत्र के बाहरी धवलपुरा स्थित कुशवाहा पंचित अखाड़ा परिसर में मंजय कुमार की गोली मार हत्या कर दी गई थी। गोली मारने का आरोप मुहल्ले के ही कलटू उर्फ सोनू पर है। हत्या करने के बाद वह हथियार लहराते और ग्रामीणों को धमकाते फरार हो गया था। घटना से बाद जनता में गहरा आक्रोश है। इस संबंध में उसी मोहल्ले के रहने वाले कल्लू और विकास को गिरफ्तार किया गया है। दिन में गीत संगीत के दौरान आपस में धक्का-मुक्की के साथ विवाद हुआ था। इसी को लेकर शाम तक तनातनी की स्थिति बनी थी। रात करीब साढ़े नौ बजे कुशवाहा पंचित अखाड़ा के पास मंजय, कलटू और अन्य बैठे थे। इसी दौरान अचानक से कलटू ने मंजय को निशाना साधते तीन गोली फायर किया। दो गोली के जख्म उसके शरीर पर है।

गोली मारने के बाद वह वहीं पर कुछ देर तक पिस्टल हाथ में लिए खड़ा रहा। जब उसे लगा कि मंजय अब नहीं बचेगा, तब वह हथियार लहराते हुए फरार हो गया। खून से लथपथ मंजय को लेकर एनएमसीएच पहुंचे, जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। ग्रमीणों ने बताया कि आरोपी कलटू लूटपाट सहित अन्य मामले का आरोपी है। हाल में ही जेल से रिहा हुआ है। गोली मार हत्या की खबर मिलने पर घटना स्थल पर बाइपास थाना की पुलिस और ग्रामीण जुट गए। मृतक के चाचा जयवीर सिंह ने संभावना जताई है कि गीत-संगीत के दौरान दर्जनों लोग थे। स्थानीय लोगों ने बताया कि होली पर्व की खुशियों के बीच पड़ोस में रहने वाले अशोक राम का पुत्र कल्टू उर्फ सोनू फायरिंग कर उसे मौत के घाट उतारा है।

चाचा ने बताया कि मंजय प्लास्टिक फैक्ट्री में काम करता था। किसी से अदावत की बात से परिजन नहीं बता रहे हैं। एएसपी अमित रंजन ने बताया कि सभी एक ही जगह बैठे थे, इसी दौरान घटी है। थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि मंजय के चाचा के बयान पर मामला दर्ज किया गया है, जिसमें तीन को नामजद और अन्य अज्ञात को बताया गया है। इस मामले में एक नामजद बाहरी धवलपुरा का ही रहने वाला कल्लू उर्फ विकास को गिरफ्तार किया गया है। गोली मारने वाले कल्लू को भगाने में कल्लू की भूमिका रही है।

गंगा से मिला अधेड़ का शव, पोस्टमार्टम के लिए भेजा

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। एनएमसीएच के लापता डॉ संजय कुमार की खोज पुलिस एवं एसडीआरएफ की टीम संयुक्त रूप से कर रही है। इस बीच शुक्रवार को गायघाट एवं कंहाटी घाट टर्मिनल के बीच एक अधेड़ का शव मिलने के बाद पुलिस प्रशासन में सनसनी फैल गई। हुलिया एवं उम्र के आधार पर सर्च टीम ने इसकी सूचना आलमगंज और पत्रकार नगर थाना की पुलिस को दी। लापता डाक्टर के परिजनों को भी सूचना दी गयी। करीब दो घंटे तक गहन छानबीन के बाद यह स्पष्ट हुआ कि गंगा में बहता हुआ मिला शव लापता डॉ संजय कुमार का नहीं है। शव जहाज के पास जाकर फंस गया था। आलमगंज थाना की पुलिस ने बताया कि अज्ञात शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। उम्र करीब 52 साल है। मृतक का शरीर सांवला, सिर पर बाल अधपका, बाएं हाथ में दो दाग तीलनुमा है। एक हाथ में पतली अंगूठी है, जो दिखने में लोहे का प्रतीत होता है। मृतक के पास से पुलिस को ऐसा कुछ नहीं मिला है, जिससे उसकी पहचान की जा सके। शव को 72 घंटे के लिए पोस्टमार्टम हाउस में पहचान के लिए सुरक्षित रखा गया है। शव पानी में पूरी तरह से फूला हुआ है। एसडीआरएफ के दारोगा अशोक यादव ने बताया कि लापता डॉ संजय की गंगा में तलाश में लगातार अभियान चलाया जा रहा है। एएसपी अमित रंजन ने बताया कि पूरी तरह से जांच करने के बाद डॉक्टर संजय कुमार की डेडबॉडी के रूप में पहचान नहीं की गई है। दरअसल डॉक्टर संजय की अंगूठी, रुद्राक्ष की माला और कपड़ा किसी से भी वह मैच नहीं कर रहा था। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

बसियौरा मेला पर निकला शोभायात्रा

पटना सिटी। शुक्रवार को श्री सती माता पूजा समिति, पूनाडीह के द्वारा शोभायात्रा निकाला गया। यह पूनाडीह गांव से गुरुवार को रात 10 बजे से गांव का भ्रमण करते हुए शुक्रवार की सुबह गुलामहियाबाग, पकक्की दरगाह, कच्ची दरगाह, आलमपुर एवं सबलपुर में सतीघाट पर विसर्जन किया गया। श्री प्यारे भगत एवं ग्रामीणों का मानना है कि हजारों वर्ष पूर्व लाला परिवार के पति के मौत बाद उनकी पत्नी के सती होने के बाद उनकी याद में यह शोभायात्रा निकाली जाती है। इसमें सात नागा की टोली के साथ हाथी, घोड़ा, बैंड बाजा एवं होली गायन के साथ नगर भ्रमण करते हुए सबलपुर छठी घाट पर समापन किया जाता है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से माया देवी उप प्रमुख पटना सदर, मनोज यादव मुखिया पूनाडीह पंचायत, किशोर कुमार लहेरी प्रदेश उपाध्यक्ष व्यवसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ जदयू, समाजसेवी पारसनाथ, हरिनंदन सिंह, मनोज कुमार, अनिल कुमार, उमेश कुमार पूर्व वार्ड पार्षद, अनिल पांडेय, मदन पांडेय, लगन साव, जितेंद्र शर्मा आदि ने भाग लिया।

विरोधियों को दबाकर तानाशाही राजनीति करना चाहती है भाजपा: ललन सिंह

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जनता दल (यूनाईटेड) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह मुंगेर सांसद राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन ने कहा कि भाजपा देश में अस्थिरता के माहौल को बढ़ाने का काम कर रही है। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाया कि भाजपा विरोधियों को दबाकर तानाशाही राजनीति कर रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने नागालैंड में जदयू विधायक द्वारा भाजपा गठबंधन को समर्थन पत्र दिए जाने पर कहा कि जदयू किसी भी रूप में भाजपा को सहयोग नहीं करेगी। नागालैंड की राज्य इकाई द्वारा लिया गया फैसला पूरी तरह से पार्टी के अनुशासन के खिलाफ है और इसी को ध्यान में रखते हुए पार्टी की राष्ट्रीय इकाई ने नागालैंड प्रदेश इकाई को भंग करने का फैसला लिया है। ललन सिंह ने भाजपा पर क्षेत्रीय पार्टियों को दबाने और केंद्रीय इकाइयों की मदद से उन्हें तोड़ने का आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा ने अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर में भी जदयू के साथ इसी तरह का रवैया अपनाया है। उन्होंने कहा कि भाजपा इस तरह के अनैतिक और तानाशाही कदम पूरे देश में उठाने का काम कर रही है। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश इसका ताजा उदाहरण है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने बिहार में भी हमारी पार्टी को तोड़ने की साजिश रची थी परंतु हमारी पार्टी ने समय रहते उनके षडयंत्र को भांप लिया, इसीलिए हमने उनसे गठबंधन तोड़ लिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि पिछले 9 सालों में केंद्र की सत्ता में रहने के बावजूद भाजपा के पास जनता को बताने के लिए कुछ भी नहीं है। इनके नेता हर भाषण में मात्र दो योजनाओं की चर्चा करते हैं, उज्ज्वला और आयुष्मान भारत योजना। परंतु इन दोनों योजनाओं की क्या स्थिति है, ये भारत के हर व्यक्ति को पता है। उन्होंने पूछा कि आज एक घरेलू गैस सिलिंडर की जो कीमत है, उसे भारत का गरीब आदमी कैसे वहन कर पाएगा? इसका जवाब भाजपा के नेताओं को देना चाहिए। आयुष्मान भारत योजना से कितने गरीबों को अब तक लाभ मिल पाया है, इसका आंकड़ा क्यों नहीं उपलब्ध है ? इनकी ये दोनों योजनाएं भी फेल हैं। जदयू अध्यक्ष ने कहा कि पिछले 9 वर्षों में केंद्र की भाजपा सरकार ने केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग करने के अलावे और कोई काम किया हो तो बताए? आने वाले 2024 के चुनाव में भी भाजपा सकारात्मक बात पर वोट नहीं मांगेगी। भाजपा के नेताओं ने तय कर लिया है कि अपने पालतू तोतों का इस्तेमाल कर बस विरोधियों की आवाज दबाई जाए और वे इसी काम में जुटे हैं।

जांच एजेंसियों का दुरूपयोग लोकतंत्र के लिए घातक : राजद

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव एवं एजाज अहमद ने अपने संयुक्त वक्तव्य में सीबीआई, ईडी और आईटी का दुरूपयोग लोकतंत्र के लिए घातक बताया और कहा कि भाजपा 2024 की हार के डर से आपा और नैतिकता दोनों खो चुकी है। नेताओं ने कहा कि एक ही मामले में बार-बार मुंह की खाने के बावजूद केश को रि-ओपेन करने और जांच कराने में भाजपा को शर्म नहीं आ रही है। माफीवीर लोग अंग्रेजी हुकूमत से भी बदत्तर स्थिति देश में पैदा कर दी है। नेताओं ने आगे कहा कि बिहार विधान सभा होली जैसे त्योहार में जब छुट्टी हुआ तब उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव अपनी गर्भवती पत्नी से मिलने और उनका हालचाल जानने दिल्ली गये तो वहां भी सीबीआई पहुंच गई, इससे ज्यादा बेशर्मी की बात क्या हो सकती है। हद तो तब हो गई जब तेजस्वी जी के बहन और जीजा के यहां भी सीबीआई पहुंच गई। इससे पहले पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद से सीबीआई पूछताछ कर चुकी है। 2017 में भी इसी तरह से फर्जी जांच के बहाने सीबीआई लालू जी के परिवार को तंग करने की नीति अपनाई थी लेकिन उस समय इन्हें मुंह की खानी पड़ी। लैण्ड फॉर जॉब मामले में जब कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो हरियाणा में फर्जी मॉल का सनसनीखेज मामला देश स्तर पर फैलाया गया, वहां भी मुंह की खानी पड़ी। सारे मामले में जब इन्हें मुंह की खानी पड़ी तब अब फिर से सनसनीखेज मामला बनाने के लिए लगातार छापेमारी की कार्रवाई की जा रही है, जो माहौल बनाने का एक साजिश है। नेताओं ने कहा कि आज देश जानना चाहता है कि 80 हजार करोड़ के मामले जो अडानी से संबंधित है उस पर भाजपा के नेता चुप क्यों हैं? और ये एजेंसियां उन तक क्यों नहीं पहूंची? इसी तरह के एक मामला अभी हाल में कर्नाटक के भाजपा नेता के घर से आठ हजार करोड़ पकड़े गये हैं लेकिन इस पर भाजपा के नेता चुप्पी साधे हुए हैं आखिर क्यों? देश को लगातार भाजपा के नेता लूटते और लुटाते रहे और जब विपक्ष इन्हें आईना दिखाये तो सीबीआई, ईडी, और आईटी का इस्तेमाल विपक्ष के नेताओं पर शुरू कर दिया जाता है। भाजपाईयो से कहना चाहते हैं कि पिछले दरवाजे से जो छापामारी की कार्रवाई की जा रही है इसको बंद करें और स्पष्ट रूप से सामने आकर लड़ाई लड़ें, पीछे से वार क्यों करते हैं? आज देश में हालात इमरजेंसी जैसी बना दी गई है लेकिन हम इन हालात के मुकाबले के लिए तैयार हैं। विपक्षी दलों को डराने, धमकाने और फर्जी मुकदमा बनवाने के लिए जांच एजेंसियों का इस्तेमाल कर जांच करने में गुजराती लॉबी का इस्तेमाल करने के लिए जो सेवा विस्तार दिया जा रहा है, इससे स्पष्ट होता है कि उनकी मंशा क्या है। वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी वर्मा ने जब सवाल किया और कहा कि सीबीआई का इस्तेमाल लालू परिवार को परेशान करने के लिए किया जा रहा है और उसी के लिए गुजराती लॉबी को सेवा विस्तार दिया जा रहा है तब उन्हें मुंह खोलने से रोका गया और चुप करा दिया गया। लेकिन चाहे जितना भी छापा मारना है मार लो, हम बिहारी डरने वाले नहीं हैं।

ईडी की छापेमारी, भाजपा की घबराहट की निशानी : गगन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद के परिजनों और राजद नेताओं के घर पर ईडी की छापेमारी पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने कहा है कि 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में अपनी सुनिश्चित हार की संभावना से भाजपा बौखला गई है। और इसी बौखलाहट में उसके द्वारा ईडी , आईटी और सीबीआई जैसी संस्थाओं का गलत इस्तेमाल कर विपक्ष के नेताओं को परेशान करने और उनकी छवि को प्रभावित करने का सुनियोजित अभियान चलाया जा रहा है।राजद प्रवक्ता ने कहा कि बेरोजगारी, महंगाई और जनता से जुड़े मुद्दों पर केन्द्र की भाजपा सरकार विफल रही है। पूर्व में किए सभी वादे जुमला साबित हुआ। इससे जनता में जबरदस्त नाराजगी है। इससे ध्यान भटकाने के लिए और किसी प्रकार पुनः सत्ता में वापसी के लिए बीजेपी का हथियार केवल सीबीआई,ईडी और आईटी जैसी केन्द्रीय एजेंसियां हीं रह गई है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि यह सिलसिला अभी और भी तेज होगा चुंकि भाजपा यह समझ चुकी है कि 2024 में जनता का समर्थन उसे नहीं मिलने जा रहा है। पर राजद इस तरह की फर्जी आरोपों और छापेमारी से घबराने वाली और मैदान छोड़ने वाली पार्टी नहीं है। जनता सब देख रही है और समझ यही है कि जिस मामले को सबुत और साक्ष्य के अभाव में दो- दो बार बंद कर दिया गया उस मामले को चौदह साल बाद पुनर्जीवित करने और लालू जी के ब्याही बेटियों के ससुराल में छापा मारने का क्या औचित्य है। समय आने पर जनता हीं इसका जवाब देगी।

सामाजिक, सास्कृतिक एवं शैक्षणिक क्रांति के अग्रदूत थे स्व राम लखन सिंह यादव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

श्री कृष्ण सेवा न्यास परिषद् बिहटा पटना के तत्वावधान में पूर्व केन्द्रीय मंत्री सह शेरे ए बिहार स्व राम लखन सिंह यादव के 103 वी जयंती तथा लक्ष्मी बाई फुले के पुण्यतिथि राम लखन सिंह यादव समुदायिक भवन प्रागंण में मनाई गई। उनके तैलचित्र पर माल्यार्पण करते हुए मुख्य अतिथि प्रखण्ड प्रमुख मालती देवी के प्रतिनिधि मुकेश यादव ने कहा कि पूर्व केन्द्रीय मंत्री सह शेरे ए बिहार राम लखन सिंह यादव एवं फुले सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चिंतक के साथ एक खयातिप्राप्त, लब्धप्रतिष्ठ शिक्षा प्रेमी थे, जिन्होंने राज्य में अनेकों स्कूल- कालेज की स्थापना कर गरीबों, शोषितों एवं पीडितो के बीच शिक्षा का ज्योति जगाकर उनपर होने वाले अत्याचार, अनाचार एवं शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए जागरूक किया। उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व एवं कार्यक्षमता के बल पर शिक्षण संस्थानों की स्थापना कर नया इतिहास गढ आनेवाली पीढ़ी के लिए उदाहरण पेश किया। अध्यक्षीय भाषण में पूर्व मुखिया संध के अध्यक्ष सहदेव राय ने कहा कि वे समाज के आधारस्तंभ एवं सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक के अग्रदूत ही नहीं एक प्रकाशपुंज थे। राम प्रवेश यादव ने कहा कि सावित्रीबाई फुले एक ऐसी समाजसेवि महिला शिक्षका थी जो पूरे देश में शिक्षा का जोत जगा दी ऐसे महान पुरुषों के बताये मार्ग पर चलकर ही सच्ची श्रद्धांजलि होगीद्ध उपस्थित लोगों में नगर परिषद् बिहटा के वार्ड पार्षद प्रतिनिधि अनू यादव, समाजसेवी पवन कुमार, सतेन्द्र यादव,अशोक कुमार, विश्नाथ राय, संकेश कुमार, प्रो केके सिंह, प्रो ब्रजेश कुमार ब्रजेश, अनु भारती, विरेंद्र भारती, कुणाल कुमार, शैलेश प्रसाद, रणधीर कुमार, नीरज कुमार, देवानन्द यादव एवं राजकुमार यादव सहित अन्य लोग शामिल थे।

भाकपा-माले का लोकतंत्र बचाओ जनसंवाद 23 मार्च से 22 अप्रैल तक

पटना।15 फरवरी की ऐतिहासिक गांधी मैदान की रैली और सफल महाधिवेशन के उपरांत विगत दिनों भाकपा माले की राज्य कमेटी की बैठक संपन्न हुई। राज्य कमेटी की बैठक के हवाले से माले राज्य सचिव कुणाल ने कहा है कि रैली और महाधिवेशन के संदेश को व्यापक जनता के बीच ले जाने के लिए पार्टी की ओर से 23 मार्च से लेकर 22 अप्रैल तक लोकतंत्र बचाओ जनसंवाद का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जनसंवाद के दौरान 23 मार्च (भगत सिंह शहादत दिवस) और 14 अप्रैल (डा. अंबेडकर की जयंती) के अवसर पर पूरे राज्य में कार्यक्रम होंगे। सिवान में 31 मार्च का। चंद्रशेखर के शहादत दिवस के अवसर पर गांव-गांव में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जनसंवाद के तहत गांव - गांव में सघन बैठक व पदयात्रा आयोजित होगी और जन सवालों को सूत्रबद्ध करके उनपर आंदोलन आदि के कार्यक्रम लिए जाएंगे। जनसंवाद के कार्यक्रम को प्रमुख विधानसभा और लोकसभा क्षेत्रों में सघन रूप से चलाया जाएगा। कार्यक्रमों में सभी विधायक अपने- अपने इलाकों में मौजूद रहेंगे। उन्होंने कहा कि 20 वर्षों बाद पटना में दुबारा आयोजित महाधिवेशन और रैली अपनी विशालता व भव्यता के लिए लंबे समय तक याद की जाएगी। कहा कि भाजपा जहां अन्य राज्यों में चुनी हुई सरकारों को बेदखल कर सत्ता हथियाती रही है, वहीं इसके विपरीत बिहार में भाजपा को सत्ता से बेदखल कर दिया गया। इसकी चर्चा बिहार मॉडल के रूप में हो रही है। बिहार मॉडल महज महागठबंधन की सरकार बनाकर भाजपा को सत्ता से बाहर करना भर नहीं है। बिहार मॉडल जन आंदोलनों का मॉडल है। एआईपीएफ और वकीलों के संगठन आईलाज का राज्य ढांचा गठित करने का भी निर्णय लिया गया। इंसाफ मंच का राज्य सम्मेलन करने और आदिवासी संघर्ष मोर्चा गठित करने पर भी चर्चा हुई।

लोजपा रामबिलास की राष्ट्रीय परिषद की बैठक 14 मार्च को दिल्ली में

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की राष्ट्रीय परिषद की बैठक आगामी 14 मार्च को दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित की गई है। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता राजेश भट्ट ने बताया कि उक्त बैठक में पार्टी के बिहार प्रदेश के सभी प्रदेश पदाधिकारी प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य सभी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष और पार्टी के सभी जिलों के जिलाध्यक्ष हिस्सा लेंगे। उक्त बैठक की अध्यक्षता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान करेंगे। श्री भट्ट ने कहा कि पार्टी 2024-25 के मिशन मोड में जोर-शोर से जुट गई है। इस बैठक में देश भर से पार्टी के राष्ट्रीय परिषद से संबद्ध सभी पदाधिकारी भाग लेंगे। पार्टी की अहम बैठक में पार्टी के संगठन की मजबूती और विस्तार समेत कई रणनीतिक फैसले लिए जा सकते हैं। उक्त आशय की जानकारी लोजपा (रा) के बिहार प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन पासवान ने दी।

एनडीए की सरकार में विकास दर राष्ट्रीय औसत से ज्यादा बढ़ा : जायसवाल

पटना। भारतीय जनता पार्टी के बिहार इकाई के अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने कहा कि अगर 15 मार्च तक शिक्षकों को नौकरी नहीं दी गई तो भाजपा अंतिम परिणति तक आंदोलन करेगी। भाजपा प्रदेश कार्यालय में शुक्रवार को आयोजित एक प्रेस वार्ता में डॉ जायसवाल ने कहा कि 15 मार्च तक शिक्षकों के नौकरी कोई निदान नहीं निकाला गया तो भाजपा उनके साथ आंदोलन में कूद पड़ेगी। भाजपा नेता ने कहा कि पिछले साल अप्रैल में आपने भाजपा से वादा किया था कि शिक्षकों को नौकरी देंगे। इसके लिए एनडीए सरकार में एक लाख से अधिक शिक्षकों को नौकरी देने की योजना थी। लेकिन आप बजट में पैसा नहीं दे रहे हैं तो शिक्षकों को नौकरी कहां से देंगे।बिहारी होने के नाते शिक्षकों को और एनडीए काल में नौकरी के लिए किए गए वादे को पूरा करें। जायसवाल ने कहा कि बिहार का पहला बजट है जो पिछले बजट से भी कम है। उन्होंने कहा कि सरकार की उधारी को हटा दीजिए तो यह बजट 2 लाख 38 हजार 327 करोड़ का बजट है, जो बिहार सरकार ने अनुपूरक मांगे रखी है, अगर उन राशियों को जोड़ दिया जाए तो 2023 का बजट पिछले साल के बजट की तुलना में 12 प्रतिशत कम है। उन्होंने कहा कि महागठबंधन की सरकार बिहार की जनता को गुमराह कर रही है। महागठबंधन की सरकार का यह बजट झूठ बोल रहा। बिहार की आमदानी का औसत 2012 से 2017 तक राष्ट्रीय औसत से कम था। जब बिहार में एनडीए की सरकार बनी तो बिहार की आमदनी का औसत राष्ट्रीय औसत से बढ़ गया। बिहार में भाजपा की सरकार ही राज्य का विकास कर सकती है। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि सुरक्षा देना आईबी और केंद्र सरकार का मामला है। बिहार में उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री के बराबर सुरक्षा दिया जाना क्या उचित है? उन्होंने नीतीश कुमार के फिर से एनडीए में आने के प्रश्न पर कहा कि गृह मंत्री के बयान के बाद भाजपा के किसी अन्य कार्यकर्ता का इस पर बयान देने का कोई मतलब नहीं रह जाता। प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से भाजपा के प्रदेश मुख्यालय प्रभारी सुरेश रुंगटा, प्रदेश प्रवक्ता संतोष पाठक, प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश कुमार सिंह, अशोक भट्ट, प्रेस पैनलिस्ट विनोद शर्मा आदि उपस्थित रहे।

बिहार कांग्रेस के राजनीतिक मुद्दों की समिति की पहली बैठक 11 मार्च को

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी की पॉलिटिकल अफेयर्स कमिटी की पहली बैठक 11 मार्च को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में आयोजित होगी। बिहार प्रदेश कांग्रेस के पॉलिटिकल अफेयर्स कमिटी का गठन गत माह हुआ था जिसमें कमिटी के अध्यक्ष पूर्व राज्यपाल निखिल कुमार को इस समिति का अध्यक्षता बनाया गया था। इस बैठक में बिहार प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ अखिलेश सिंह, विधायक दल के नेता अजीत शर्मा, विधान परिषद में दल के नेता व पूर्व अध्यक्ष डॉ मदन मोहन झा सहित पॉलिटिकल अफेयर्स कमिटी के सभी सदस्य उपस्थित रहेंगे। इस बैठक में प्रदेश में पार्टी की मजबूती, आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारियां संबंधित सभी एजेंडे पर चर्चा होगी।

राबड़ी देवी सहित राजद नेताओं पर छापा राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित: माले

पटना। भाकपा-माले राज्य सचिव कुणाल ने कहा है कि बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के आवास पर विगत 7 मार्च और आज सुबह से ही दिल्ली सहित राजद नेताओं के अन्य ठिकानों पर जारी सीबीआई का छापा विशुद्ध रूप से राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित है। हमारी पार्टी सीबीआई-ईडी के जरिए भाजपा द्वारा विपक्ष को आतंकित करने की इस तरह की कार्रवाइयों की निंदा करती है। उन्होंने कहा कि बिहार में जब से भाजपा सरकार से बाहर हुई है, वह महागठबंधन सरकार को अस्थिर व बदनाम करने की लगातार कोशिशें कर रही हैं। हाल ही में तमिलनाडु में हिन्दी पट्टी के प्रवासी मजदूरों की हत्या की झूठी खबरों को प्रचारित-प्रसारित करने के पीछे भी भाजपाइयों का ही हाथ था। और यही भाजपाई बिहार विधानसभा के अंदर प्रवासी मजदूरों के पक्ष में बड़ी-बड़ी बातें बोल रहे थे। जबकि हमने केंद्र सरकार से बार-बार प्रवासी मजदूरों की सुरक्षा के लिए कानून बनाने की मांग करते रहे हैं, जिसे भाजपा सरकार ठुकराती रही है। उन्होंने आगे कहा कि नौकरी के बदले लालू प्रसाद व उनके परिवार को दिए गए तथाकथित जमीन घोटाले में सीबीआई अबतक कई बार छापा मार चुकी है, लेकिन उसके हाथ कुछ भी नहीं लगा है। इससे जाहिर होता है कि ये कार्रवाइयां विशुद्ध रूप से भाजपा के इशारे पर की जा रही राजनीतिक कार्रवाइयां हैं। इसके पूर्व दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को भी इसी तरह निशाना बनाया गया। देश अघोषित आपातकाल से गुजर रहा है। भाजपा के इस फासीवादी कुचक्र को तोड़ने के लिए विपक्ष की सभी ताकतों को मुस्तैद रहना होगा और एक व्यापक एकता का निर्माण करना होगा।

मोदी सरकार मन मुताबिक केंद्रीय एजेंसियों का कर रही इस्तेमाल : पप्पू यादव

पटना। दिल्ली से पटना पहुंचे जन अधिकार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पप्पू यादव ने पटना एयरपोर्ट पर प्रेस वार्ता को संबोधित किया। इस दौरान पप्पू यादव ने विपक्ष के 9 नेताओं द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी लिखकर केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप लगाये जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने भी यह माना है कि केंद्र सरकार द्वारा जांच एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है। वहीं, विपक्षी नेताओं में ममता बनर्जी के शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि कभी वह कांग्रेस के मामले में दस्तखत करती हैं कभी नहीं करती हैं। चिट्ठी लिखने में नीतीश के शामिल नहीं होने से सवाल पर पप्पू यादव ने कहा कि, नीतीश कुमार की अलग अपनी पार्टी है। वहीं, केंद्रीय एजेंसियों द्वारा विपक्षी नेताओं पर लगातार की जा रही छापेमारी पर पप्पू यादव ने कहा कि बीजेपी और उनके गठबंधन में शामिल नेता क्या सती सावित्री हैं उन पर क्यों नहीं आज तक छापेमारी हुई। जाप सुप्रीमो पप्पू ने कहां कि मोदी सरकार मन मुताबिक केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल कर रही है । वहीं, सुशील मोदी द्वारा सवाल उठाने पर कि जिसने घोटाला किया है उसी ने पीएम पीएम को चिट्ठी लिखी है जिस पर पप्पू यादव ने पलटवार करते हुए कहा कि बिहार में सृजन घोटाला हुआ आज तक सुशील मोदी से क्यों नहीं सीबीआई की पूछताछ हुई। बिहार और देश में और भी कई जगह घोटाले हुए हैं इसमें भी अभी तक किसी से पूछताछ नहीं हुई है। जाप सुप्रीमो पप्पू यादव ने भाजपा पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि उपेंद्र कुशवाहा को वाई प्लस सुरक्षा दिए जाने के बाद कहा कि, केंद्र क्या आने वाला चुनाव सीबीआई ईडी आईबी और सुरक्षा को मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ेगी। उन्होंने कहा कि मेरे पास भी दिल्ली, नेपाल और कई जगहों से माफियाओं के फोन पर धमकी दी जाती है लेकिन मैंने कभी अपनी सुरक्षा को लेकर हाय तौबा नहीं मचाया। उन्होंने यह भी कहा कि मेरी वाइफ प्लस सुरक्षा छीन ली गई है। दिल्ली में कांग्रेस सांसद रंजीत रंजन को आजतक सरकारी आवास नहीं मिला हैं। लेकिन चाहे जो भी परिस्थिति हो जन अधिकार पार्टी भाजपा के खिलाफ लड़ाई लड़ती रहेगी।

औंड़िहार–भटनी रेल के इंदारा–किड़िहरापुर स्टेशनों के मध्य दोहरीकरण का कार्य प्रगति पर

वाराणसी मंडल : एनआई कार्य के कारण ट्रेनों के परिचालन में बदलाव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल में रुपये 1177 करोड़ की लागत से 117 किमी. लंबे भटनी-औंड़िहार दोहरीकरण कार्य प्रगति पर है । इसी क्रम में औंड़िहार-भटनी रेल खंड पर स्थित इंदारा-किड़िहरापुर स्टेशनों के मध्य दोहरीकरण कार्य एवं इंदारा स्टेशन के यार्ड रिमाडलिंग कार्य हेतु 11 से 25 मार्च तक प्री-नॉन इंटरलॉक एवं 26 से 30 मार्च तक नॉन इंटरलॉक कार्य तथा 30 मार्च, 2023 को रेल संरक्षा आयुक्त के निरीक्षण किया जाना है। यार्ड रिमाडलिंग एवं विद्युतीकृत लाइन के साथ दोहरीकरण के पश्चात मऊ-इंदारा खंड की लाइन क्षमता बढ़ जायेगी तथा इंदारा-भटनी खंड की लाइन क्षमता भी बढ़ जायेगी। जिससे शेष खंड के दोहरीकरण के लिये पर्याप्त ब्लॉक उपलब्ध होगा तथा गाड़ियों का संचालन निर्बाध रूप से कराया जा सकेगा। इसके साथ ही दोहरीघाट से कनेक्शन का भी प्रावधान रखा जाएगा। इसके साथ ही विद्युतीकृत ट्रैक्शन पर गाड़ियों को तीव्र गति मिलने एवं दोहरीकरण के पश्चात क्रासिंग समय में बचत होगी जिससे परिचालन समय में बचत होगी। उपरोक्त एनआई कार्य के कारण इस रूट से गुजरने वाली ट्रेनों के परिचालन में बदलाव किया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार है :

रद्द की गयी ट्रेन - 12538/12537 प्रयागराज रामबाग-मुजफ्फरपुर-प्रयागराज रामबाग एक्सप्रेस 29 मार्च, 2023 को रद्द रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलायी जाने वाली ट्रेनें - अमृतसर से 10, 12, 15, 17, 19, 22, 24, 26 एवं 29 मार्च को चलने वाली 04652 अमृतसर-जयनगर विशेष गाड़ी अपने निर्धारित मार्ग लखनऊ-बाराबंकी-शाहगंज-छपरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग लखनऊ-बाराबंकी-गोरखपुर-छपरा के रास्ते चलायी जायेगी। जयनगर से 12, 14, 17, 19, 21, 24, 26 एवं 28 मार्च को चलने वाली 04651 जयनगर-अमृतसर विशेष गाड़ी अपने निर्धारित मार्ग छपरा-शाहगंज-बाराबंकी-लखनऊ के स्थान पर परिवर्तित मार्ग छपरा-गोरखपुर-बाराबंकी-लखनऊ के रास्ते चलायी जायेगी। दरभंगा से 13, 20 एवं 27 मार्च को चलने वाली 09466 दरभंगा-अहमदाबाद विशेष गाड़ी अपने निर्धारित मार्ग छपरा-बलिया-इंदारा-मऊ-शाहगंज-अयोध्या कैंट-बाराबंकी के स्थान पर परिवर्तित मार्ग छपरा-गोरखपुर-मनकापुर-अयोध्या कैंट-बाराबंकी के रास्ते चलायी जायेगी। गोरखपुर से 15, 18, 22, 25 एवं 29 मार्च को चलने वाली 15050 गोरखपुर-कोलकाता एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग भटनी-मऊ-इंदारा-बलिया-छपरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग भटनी-सीवान-छपरा के रास्ते चलायी जायेगी। कोलकाता से 26 एवं 29 मार्च को चलने वाली 15049 कोलकाता-गोरखपुर एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग छपरा-फेफना-मऊ-भटनी के स्थान पर परिवर्तित मार्ग छपरा-सीवान-भटनी के रास्ते चलायी जायेगी। अजमेर से 14, 16, 20, 21, 23, 27 एवं 28 मार्च को चलने वाली 15716 अजमेर-किशनगंज एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग अयोध्या कैंट-शाहगंज-मऊ-बलिया-छपरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग अयोध्या कैंट -मनकापुर-गोरखपुर-छपरा के रास्ते चलायी जायेगी। दरभंगा से 22, 25, 27 एवं 29 मार्च को चलने वाली 19166 दरभंगा-अहमदाबाद एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग फेफना-इंदारा-मऊ-शाहगंज के स्थान परिवर्तित मार्ग गाजीपुर सिटी-औंड़िहार-जौनपुर-शाहगंज के रास्ते चलायी जायेगी। अहमदाबाद से 22, 24 एवं 26 मार्च को चलने वाली 19165 अहमदाबाद-दरभंगा एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग शाहगंज-मऊ-इंदारा-फेफना के स्थान पर परिवर्तित मार्ग शाहगंज-जौनपुर-औंड़िहार-गाजीपुर सिटी-छपरा के रास्ते चलायी जायेगी। आनन्द विहार टर्मिनस से 21 से 29 मार्च, तक चलने वाली 14006 आनन्द विहार टर्मिनस-सीतामढ़ी एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग औंड़िहार-मऊ-भटनी- सीवान-छपरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग औंड़िहार-गाजीपुर सिटी-छपरा के रास्ते चलायी जायेगी। सीतामढ़ी से 22 से 30 मार्च तक चलने वाली 14005 सीतामढ़ी-आनन्द विहार टर्मिनस एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग छपरा-सीवान-भटनी-मऊ-औंड़िहार के स्थान पर परिवर्तित मार्ग छपरा-गाजीपुर सिटी-औंड़िहार के रास्ते चलायी जायेगी। अमृतसर से 25 मार्चको चलने वाली 14650 अमृतसर-जयनगर एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग शाहगंज-मऊ-इंदारा-फेफना-छपरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग शाहगंज-जौनपुर-गाजीपुर सिटी-छपरा के रास्ते चलायी जायेगी।

पुनर्निधारित कर चलायी जाने वाली ट्रेनें - गोरखपुर से 11, 15, 18, 22, 25 एवं 29 मार्च को चलने वाली 15050 गोरखपुर-कोलकाता एक्सप्रेस गोरखपुर से 120 मिनट पुनर्निधारित कर चलायी जायेगी। सीतामढ़ी से 11 से 21 मार्च, 2023 तक चलने वाली 14005 सीतामढ़ी-आनन्द विहार टर्मिनस एक्सप्रेस सीतामढ़ी से 120 मिनट पुनर्निधारित कर चलायी जायेगी। नियंत्रित कर चलायी जाने वाली ट्रेनें - दरभंगा से 11, 13, 15 एवं 18 मार्च को चलने वाली 19166 दरभंगा-अहमदाबाद एक्सप्रेस पूर्व मध्य रेलवे पर एवं मार्ग में 60-60 मिनट नियंत्रित कर चलायी जायेगी। अमृतसर से 11, 13, 15, 18, 20, 22 एवं 27 मार्च को चलने वाली 14650 अमृतसर-जयनगर एक्सप्रेस मार्ग में 70 मिनट नियंत्रित कर चलायी जायेगी। अजमेर से 13 मार्च को चलने वाली 15716 अजमेर-किशनगंज एक्सप्रेस मार्ग में 60 मिनट नियंत्रित कर चलायी जायेगी। शालीमार से 14 एवं 21 मार्च, 2023 को चलने वाली 15021 शालीमार-गोरखपुर एक्सप्रेस मार्ग में 45 मिनट नियंत्रित कर चलायी जायेगी। आंशिक समापन/प्रारंभ कर चलायी जाने वाली ट्रेनें - कोलकाता से 13, 20 एवं 27 मार्च, 2023 को चलने वाली 13137 कोलकाता-आजमगढ़ एक्सप्रेस आजमगढ़ के स्थान पर छपरा में यात्रा समाप्त करेगी। आजमगढ़ से 14, 21 एवं 28 मार्च, 2023 को चलने वाली 13138 आजमगढ़-कोलकाता एक्सप्रेस आजमगढ़ के स्थान पर छपरा से चलायी जायेगी।

महाप्रबंधक ने की कोल लोडिंग एवं कोल कनेक्टिविटी से जुड़ी परियोजनाओं के कार्य प्रगति की समीक्षा

पटना। पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक अनुपम शर्मा की अध्यक्षता में गुरुवार को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, धनबाद के सभागार में कोल लोडिंग एवं कोल कनेक्टिविटी से जुड़ी निर्माण परियोजनाओं के कार्य प्रगति पर एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई । इस समीक्षा बैठक में कोयला खदानों से विद्युत घरों तक कोयला के सुगम परिवहन एवं विद्युत घरों को कोयला की और तेजी से आपूर्ति हेतु नये साईडिंग, नई लाइन, दोहरीकरण, आरओआर जैसी आधारभूत संरचनाओं के विकास से जुड़े मुद्दों पर गहन चर्चा की गयी । बैठक के दौरान मुख्य रूप से कोल कनेक्टिविटी प्रदान करने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण 160 किमी. लंबे रमना-सिंगरौली दोहरीकरण, टोरी-शिवपुर थर्ड लाईन (41.5 किमी) तथा मीरपुर-झारखोस दोहरीकरण जैसी परियोजनाओं की कार्य प्रगति की समीक्षा की गयी तथा इन परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के रास्ते में आने वाली समस्याओं पर चर्चा की गयी । इसके साथ ही बैठक के दौरान अन्य सामग्रियों के लोडिंग पर भी चर्चा की गयी । बैठक में मंडल रेल प्रबंधक,धनबाद, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, निर्माण, दक्षिण तथा प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक सहित मंडल एवं निर्माण विभाग के अन्य उच्चाधिकारीगण उपस्थित थे ।

पूर्व मध्य रेल

ई–निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के तरफ से निम्न कार्य हेतु ई. निविदा आमंत्रित की जाती है। **1. ई. निविदा सं.: पूमरे–मुप्रअ–नि–द–ईटीएन–83–22–23, कार्य का नाम :** ईसीआर में

संक्षिप्त खबरें

फूलों की होली मिलन समारोह का हुआ आयोजन

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड के खदीयाही में महर्षि योगाश्रम में फूलों की होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि रूपांजलि कुमारी, पुर्व मुखिया विपिन सहनी, योगगुरू दिलीप पूर्व, श्याम कुशवाहा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। वहीं हानिकारक रंगों का बहिष्कार करते हुए, प्राकृतिक फूलों से होली खेली गई। जिसकी अध्यक्षता योगगुरू चंदनदेव ने किया। कार्यक्रम में लोगों के स्वास्थ्य के लिए योग भी करवाया गया। कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों के बीच 250 पौधा वितरण किया गया। मौके पर डॉ सुरेश शर्मा, डॉ आरएस पंडित, सुनील कुमार, सुधांशु कुमार, रोहन निषाद, विजय शर्मा, लक्ष्मी महतो, अनामिका कुमारी सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

सड़क दुर्घटना में चार जख्मी, डीएमसीएच रेफर

कल्याणपुर, समस्तीपुर। समस्तीपुर-दरभंगा मुख्य पथ के कोठिया गांव के समीप शुक्रवार की सुबह दो बाइक की आमने-सामने टक्कर में चार लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गए। सभी जख्मी का इलाज स्थानीय लोगों की मदद से पीएचसी कल्याणपुर में कराया गया। पीएचसी के प्रभारी डॉ बीके ठाकुर ने बताया कि जख्मियों की स्थिति की गंभीरता को देखते हुए डीएमसीएच दरभंगा रेफर कर दिया गया। वहीं जख्मी की पहचान बरहेता गांव निवासी सुरेश सहनी के पुत्र अमरेश कुमार, भट्टी चौक निवासी राजकुमार साह के पुत्र नीतेश कुमार और राकेश साह के पुत्र चंदन कुमार एवं मुजफ्फरपुर जिले के ढोली गांव निवासी राजकुमार सहनी के पुत्र विकास कुमार के रूप में हुई है। वहीं थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि जख्मी के परिजन के द्वारा आवेदन मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मारपीट की घटना को लेकर दोनों पक्षों ने थाना में दिया आवेदन

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के मूसेपुर गांव में बुधवार की शाम दो पक्षों के बीच वर्चस्व को लेकर हुई मारपीट की घटना को लेकर दोनों पक्षों ने थाना में अलग-अलग आवेदन दिया है। जिसमें मूसेपुर के गुड्डू कुमार ने थाना में दिए आवेदन में आधे दर्जन लोगों को आरोपित किया है। जिसमें घर को छतिग्रस्त कर मारपीट कर 5 लोगों को जख्मी करने सहित फायरिंग करने का आरोप लगाया है। तो वहीं दूसरे पक्ष से कलवारा गांव निवासी विनोद पासवान ने 9 लोगों को आरोपित करते हुए मारपीट कर घर में लूटपाट करने एवं दुकान में आग लगाने का आरोप लगाया है। साथ ही फायरिंग करने का आरोप लगाया है। वहीं थाना अध्यक्ष गौतम कुमार ने कहां कि दोनों पक्षों से आवेदन प्राप्त हुआ है। मामलों की जांच उपरांत आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अचानक आग लगने से तीन घर सहित सभी समान जलकर खाक

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड के सिंघिया बुजुर्ग उतर पंचायत के वार्ड 10 स्थित पानी टंकी के निकट शुक्रवार की दोपहर में अचानक आग लगने से तीन घर जल गए। घरों में रखे कपड़े, अनाज, बर्तन, नकद सहित सभी सामान जल कर खाक हो गया। दो-दो अग्निशामक के दमकल कर्मियों के अथक प्रयास से आग पर काबू पाया जा सका। बताया जाता है कि सिंघिया-बुजुर्ग उतर वार्ड-10 में आग लगने से मनीष चौधरी, रामू चौधरी, बिरजू चौधरी का घर जल गया। जिसमे सभी सामान सहित नकद जल गया। करीब 5 लाख से ऊपर का नुकसान हुआ। वहीं घर बनाने के लिये रामूचौधरी के घर में रखे करीब डेढ़ लाख से ऊपर नगद भी जल गए। आरएलजेडी प्रखंड कार्यकर्ता मनोज कुमार ने अंचलाधिकारी से तत्काल पीड़ित परिवार को राहत देने कि मांग किया है।

अखबार हॉकर के घर में घुसकर मारपीट और लूटपाट, थाने में दिया आवेदन

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के साखमोहन गंगोली निवासी सियाराम साह उर्फ सीतो साह के पुत्र और अखबार हॉकर पहलाद कुमार घर में घुसकर मारपीट एवं लूटपाट को लेकर थाने में आवेदन दिया है। जिसमें गांव के ही कृष्ण गोपाल साह, दीपक साह, अरविंद साह, विकास कुमार, मनीषा कुमारी एवं चंद्रकला देवी को आरोपित किया है। आवेदन के माध्यम से पीड़ित ने बताया कि 4 मार्च की सुबह जैसे ही अखबार बेचने निकले तभी उपर्युक्त नामित सभी लाठी डंडा एवं लोहे की रॉड से लैस होकर मेरे घर में घुसकर मारपीट करने लगा। तथा घर में रखे सामान को तोड़फोड़ किया। साथ ही मेरी पत्नी के गले से सोने का चैन एवं कुछ सामान ले लिया तथा जान मारने की धमकी देते हुए निकल गया।

दोहरे हत्याकांड के नामजद अभियुक्त पूर्व विधायक रामबालक सिंह गिरफ्तार, भेजा गया जेल

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर थाना क्षेत्र के चर्चित दोहरे हत्याकांड के नामजद अभियुक्त विभूतिपुर के पूर्व विधायक रामबालक सिंह को छपरा से गिरफ्तार कर विभूतिपुर थाना लाया गया। जिसे आवश्यक पूछताछ के बाद शुक्रवार को व्यवहार न्यायालय रोसड़ा के कोर्ट में समर्पित किया गया हैं। इस संबंध में जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष संदीप कुमार पाल ने बताया कि विभूतिपुर थाना क्षेत्र के मरडिहा बचनी कचहरी के पास सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण पंचायत के पूर्व मुखिया सुरेंद्र प्रसाद सिंह एवं उनके सहयोगी सत्यनारायण सिंह को अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में मृतक के भाई रंजीत प्रसाद ने विभूतिपुर थाने में पूर्व विधायक रामबालक सिंह एवं उनके भाई लालबाबू प्रसाद सहित 6 लोगों को नामजद व चार-पांच अज्ञात के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसके नामजद मुख्य अभियुक्त पूर्व विधायक रामबालक सिंह को दिल्ली से समस्तीपुर आने के क्रम में गुप्त सूचना के आधार पर स्वतंत्रता सैनानी एक्सप्रेस से आने के क्रम छपरा स्टेशन पर जीआरपी के सहयोग से गिरफ्तार कर देर रात विभूतिपुर थाना लाया गया। आवश्यक पूछताछ की गई। इसके बाद उन्हें कागजी प्रक्रिया पूर्ण करते हुए रोसड़ा व्यवहार न्यायालय में उन्हें समर्पित किया गया। पूर्व विधायक रामबालक सिंह ने बताया कि इस हत्या के दिन वह कोयंबटूर में अपने साढू की बेटी की शादी में थे। उन्हें जानकारी मिली थी कि उनके यहां के पूर्व मुखिया की हत्या हो गयी है, जिसमें उनका नाम दिया गया है। इस सूचना पर वह व्यवहार न्यायालय रोसड़ा के लिए चले थे, जहां उन्हें शुक्रवार को आत्मसमर्पण के लिए आना था। इसी दौरान पुलिस को इसकी जानकारी मिल गई। दिल्ली से समस्तीपुर आने के क्रम में छपरा रेलवे स्टेशन पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने इस घटना को एक राजनीतिक साजिश एवं अश्लील वायरल वीडियो करने की धमकी देकर इसकी आड़ में अनावश्यक रकम वसूल करने, राजनीति छोड़ देने, तथा उनके पास जो होटल है उस पर लोग नजर गड़ाए हुए बैठे हैं। इसके लिए कई बार आपसी समझौता हुआ था। इसकी जानकारी किसी तीसरे लोगों को हो गया, जिनके द्वारा घटना कर उन्हें फंसाया जा रहा। उन्होंने न्यायालय पर भरोसा जताया है और कहा है कि न्यायालय पर पूर्ण भरोसा है उन्हें न्याय मिलेगा। इसके पूर्व इस घटना के नामजद अभियुक्त लालबाबू सिंह को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था। इनके तीन अन्य अभियुक्त कोर्ट में अपना आत्मसमर्पण किया है। एक नामजद अभियुक्त पुलिस के पकड़ से बाहर है, जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। बताते चलें कि इस मामले का खुलासा एसपी विनय तिवारी के द्वारा मास्टरमाइंड लालबाबू सिंह की गिरफ्तारी के बाद किया गया था। जिसमें उन्होंने जानकारी देते हुए बताया था कि एक अश्लील वीडियो सुरेंद्र प्रसाद सिंह के पास था। जिसको लेकर कथित रूप से सौदेबाजी करने की बातें आ रही थी। जिसके रंजिश में आकर पूर्व विधायक उनके भाई एवं अन्य लोगों के द्वारा साजिश रचकर 6 लाख की सुपारी देकर अपराधियों को अपने घर में संरक्षण देकर घटना का अंजाम दिया। घटना का अंजाम देने के बाद अपराधी के द्वारा क्षेत्र छोड़ने के समय आनन-फानन में यहां से निकले। इस बीच एक लोडेड पिस्तौल उनका छूट गया था। जिसका खुलासा विभूतिपुर पुलिस के द्वारा रिमांड पर लिए गए नामजद अभियुक्त कैलाश प्रसाद सिंह के निशानदेही के आधार पर छापामारी कर बरामद किया गया। इसके पूर्व में भी पूर्व विधायक और उसके भाई के खिलाफ उपरोक्त अभियुक्त के खिलाफ कई संगीन मामले कोर्ट में दर्ज हैं। एक मामले में उन्हें सजायाफ्ता भी घोषित किया गया है। जिसका अपील उच्च न्यायालय में होने के बाद इन्हें उच्च न्यायालय के द्वारा जमानत पर रिहा किया गया था। नामजद अभियुक्त लालबाबू सिंह पर पत्रकार ब्रजकिशोर ब्रजेश हत्याकांड में भी साजिश रचने एवं अपराधियों को सुपारी देने के मामले में कोर्ट के द्वारा संज्ञान लेकर वारंट निर्गत किया गया था। जो मामला भी न्यायालय में लंबित है।

दबंगों ने उजाड़ा आशियाना तो धरने पर बैठा पीड़ित परिवार, डीएम ने भी मुंह फेरा

12 दिनों से कलेक्ट्रेट के सामने धरने पर बैठा है पीड़ित परिवार, समस्तीपुर सीओ पर लगाया दबंगों के साथ सांठगांठ का आरोप

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

जब सारी दुनिया बीते 8 मार्च को होली मना रही थी तो समस्तीपुर मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के राजा महतो अपनी बूढ़ी मां, अपनी पत्नी और अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ समस्तीपुर समाहरणालय गेट के सामने न्याय की आस में धरने पर बैठे हुए थे। क्योंकि उनके आशियाने को स्थानीय दबंग के द्वारा ध्वस्त कर जबरन कब्जा कर लिया गया है, जैसा कि पीड़ित राजा महतो के द्वारा समस्तीपुर जिला डीएम को दिए आवेदन में बताया गया है। बता दें कि राजा महतो अपने पूरे परिवार के साथ बीते 27 फरवरी से ही समाहरणालय के समक्ष आमरण अनशन पर बैठे हुए हैं और होली के रोज उनके धरने का दसवां दिन था। 10 मार्च को उनके धरने का 12वां दिन था और धरने के इतने दिन बीत जाने के बाद भी समस्तीपुर डीएम के द्वारा न ही उस पीड़ित परिवार की कोई सुध ली गई और न ही उसके आवेदन पर कोई कार्रवाई का निर्देश दिया गया। जिस कारण पीड़ित परिवार अपने उजड़े आशियाने पर न्याय की मांग को लेकर खुले आसमान के नीचे धरने पर बैठा हुआ है। डीएम को दिए आवेदन में पीड़ित परिवार के द्वारा समस्तीपुर सीओ पर भी गंभीर आरोप लगाए गए हैं। जिसमें उसने कहा है कि कई बार आवेदन देने के बावजूद समस्तीपुर सीओ के द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई उल्टे उन्हें बरगला कर आरोपियों की बातों को मानने की सलाह दी गई। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा है कि समस्तीपुर सीओ का आरोपियों के साथ सांठगांठ है जिस कारण उन्हें समस्तीपुर सीओ के द्वारा न्याय नहीं प्रदान किया गया। घटना 3 वर्ष पुरानी है और घटना के संबंध में बताया गया है कि जितवारपुर निजामत कन्हैया चौक निवासी और स्वर्गीय चलित्तर महतो के पुत्र राजा महतो को साल 1990 ई० में बिहार सरकार के द्वारा उनके दादा स्वर्गीय लड्डू लाल महतो को 15 धुर जमीन का बासगीत पर्चा प्रदान किया गया था। जिसका खाता नंबर 270 खेसरा 597 है। जिस भूमि पर सरकार के द्वारा प्रदत इंदिरा आवास योजना के तहत उनकी मां जानकी देवी, उनके भाई सुरेश महतो और चिरंजीवी महतो के नाम पर आवास योजना का लाभ भी मिला हुआ था। जिसे, पीड़ित के अनुसार 12 मार्च 2020 को भू-माफिया लालबाबू राय उर्फ भोला सिंह के द्वारा उन्हें व उनके परिजनों को घर से निकाल कर उनके घर को जेसीबी के माध्यम से ध्वस्त कर दिया गया। जिसकी फरियाद उनके द्वारा मुफ्फसिल थाना में की गई थी लेकिन मुफ्फसिल थाना पुलिस के द्वारा उन्हें वहां से गाली-गलौज देकर भगा दिया गया था। जिसके बाद पीड़ित परिवार के द्वारा एसपी आवास के सामने सपरिवार आत्मदाह का प्रयास भी किया गया था और उस समय इस मामले में मीडिया में काफी जोर भी पकड़ा था और मामला समस्तीपुर एसपी के संज्ञान में आने के बाद संबंधित थाने में आरोपियों के विरुद्ध एफआइआर भी दर्ज कराई गई थी। लेकिन, कई वर्ष बीतने के बावजूद भी आज तक पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिल सका।

दोबारा जिलाध्यक्ष बनाए गए उपेंद्र कुमार कुशवाहा, कार्यकर्ताओं ने किया सम्मानित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी बिहार प्रदेश के द्वारा समस्तीपुर भाजपा के जिला अध्यक्ष उपेंद्र कुमार कुशवाहा के ऊपर फिर से भरोसा जताते हुए उन्हें दूसरी बार भाजपा का जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उपेंद्र कुमार कुशवाहा के फिर से भाजपा जिलाध्यक्ष बनने पर कार्यकताओं में खुशी की लहर है।

इसको लेकर कार्यकताओं द्वारा जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष उपेंद्र कुमार कुशवाहा का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। उपस्थित कार्यकताओं एवं नेताओं ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर खुशी जाहिर की। भारत माता की जय-जयकार के बीच दुबारा नवमनोनीत जिलाध्यक्ष उपेंद्र कुमार कुशवाहा को अंग वस्त्र, फूल-माला एवं बुके से स्वागत किया गया। उपस्थित कार्यकताओं को मिठाईयां भी बांटी गई। उपस्थित कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हजारों कार्यकताओं के स्नेह के कारण ही उन्हें लगातार दूसरी बार पार्टी के सेवा एवं संगठन विस्तार हेतु प्रदेश के द्वारा अवसर प्रदान किया गया है। इसके लिए वह बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल एवं केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय के प्रति आभार प्रकट करते हैं। उपस्थित विधान परिषद सदस्य डॉ तरुण कुमार चौधरी ने जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुमार कुशवाहा को बनाये जाने पर प्रदेश नेतृत्व को साधुवाद देते हुए कहा कि इनके दुबारा जिलाध्यक्ष बनने से 2024 में जिले के दोनों लोकसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल होगी। पूर्व जिलाध्यक्ष प्रो० विजय शर्मा ने कहा कि उपेन्द्र कुमार कुशवाहा का जिला के कार्यकताओं में लोकप्रियता के कारण ही इन्हें प्रदेश द्वारा मौका प्रदान किया गया है। मौके पर रोसड़ा विधायक वीरेंद्र कुमार पासवान, प्रदेश नेत्री विमला सिंह, जिला महामंत्री सुनील कुमार गुप्ता, प्रभात कुमार ठाकुर, राजीव चौधरी, जिला उपाध्यक्ष कौशल कुमार पांडे, रामयाद शांडिल, राकेश राज, अशोक निषाद, जिला मंत्री हीरा पासवान, अभय कुमार गुड्डू, जिला प्रवक्ता मुकेश सिंह, नीरज चौधरी, उमेश प्रसाद कुशवाहा, आदित्य प्रकाश, सुजीत भाष्कर, पंकज लाल, संतोष राय, वीरेंद्र यादव, अनिल साह भोला, विजय शंकर ठाकुर, गीतांजलि, मंडल अध्यक्ष अमृत चौधरी, राजीव सूर्यवंशी, अशोक पासवान, अशोक झा, ललन पाठक, डॉ यूएस झा, दीपक सत्यार्थी, बिनोद सिंह, ठाकुर संग्राम सिंह, अमर सिंह, रिक्की कुमार, आलोक कुमार, विजय मेहता, सुधीर शर्मा, प्रभात सिंह, राजू पटेल इत्यादि रहे।

बिहार के प्रवासी मजदूरों के विरुद्ध भ्रामक खबर फैलाने को लेकर आइसा ने निकाला प्रतिरोध मार्च, किया पुतला दहन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

आइसा के दर्जनों कार्यकताओं के द्वारा शुक्रवार को बिहार के प्रवासी मजदूरों के विरुद्ध भ्रामक खबर फैलाने और विधानसभा में हुड़दंग मचाने के विरोध में प्रतिरोध मार्च निकाल कर रोष प्रकट किया गया। प्रतिरोध मार्च शहर के पटेल के नंबर से निकल कर समाहरणालय होते हुए ओवरब्रिज चौराहे पर पहुंच कर सभा में तब्दील हो गया। जहां आइसा कार्यकताओं के द्वारा नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा व भाजपा विधायकों का पुतला दहन किया गया। तत्पश्चात एक सभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता आइसा जिला अध्यक्ष लोकेश राज तथा संचालन आइसा जिला सचिव सुनील कुमार ने की। सभा को संबोधित करते हुए आइसा जिला सचिव सुनील कुमार ने कहा कि जब से बीजेपी बिहार में सरकार से बाहर हुई है, तब से सरकार में आने के लिए हर हथकंडा अपना रही है। बिहारी प्रवासी मजदूरों के प्रतीक भ्रामक खबर फैलाकर विधानसभा सत्र में इसे मुद्दा बना कर हुड़दंग करना नेता विरोधी दल और बीजेपी विधायकों का नफरती व उन्मादी चेहरा उजागर हुआ हैं। बीजेपी और आरएसएस एक एजेंडा के तहद बिहारियों का अपमान कर बिहार के सत्ता हथियाने के फिराक में है। जिलाध्यक्ष लोकेश राज ने कहा कि जिस भ्रामक खबर को बीजेपी ने बिना सिर पैर के मुद्दा बनाया है।

उसके जिम्मेदार केंद्र सरकार है। दो राज्य के बीच इस तरह के भ्रामक खबर की पुष्टि करना केंद सरकार की जिम्मेवारी होती हैं। लेकिन केंद सरकार बचती हैं और बिहार से मजदूरों का पलायन के जिम्मेवार बीजेपी भी है। सभा को आइसा जिला सह सचिव प्रीति कुमारी, आइसा जिला सह सचिव मो० फरमान एवं द्रख्शा जवि आदि ने भी संबोधित किया। प्रतिरोध मार्च में शामिल आइसा जिला कार्यालय सचिव राजू झा, उपाध्यक्ष रौशन यादव, मनीषा कुमारी, रविराजन कुमार, संजीव कुमार, अनिल कुमार, राहुल कुमार, सोनू कुशवंशी, अंशु कुमार, मो० मेराज, मो० तौसीफ, लक्ष्मण कुमार, तिलक कुमार, मनीष कुमार, विशाल यादव, इत्यादि थे।

सरैया अंचलाधिकारी के कारनामें के विरोध में जिलाधिकारी के समक्ष प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर जिले के सरैया अंचल अधिकारी नारायण बैठा द्वारा सरैया अंचल कार्यालय एवं अपने आवास को पूरी तरह लूट-खसोट का अड्डा बना दिये जाने के खिलाफ आज ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के बैनर तले सरैया प्रखंड कमिटी की ओर से जुलूस निकाल कर मुजफ्फरपुर जिलाधिकारी के समक्ष प्रदर्शन तथा धरना दिया गया। जुलूस कंपनीबाग स्थिति शहीद खुदीराम बोस स्मारक स्थल से निकलकर नारेबाजी करते हुए समाहरणालय पहुंच कर धरना में तब्दील हो गया। जहां धरनार्थियों को संबोधित करते हुए पूर्व पंचायत समिति सदस्य सुनिल कुमार सिंह ने कहा कि सरैया अंचल अधिकारी नारायण बैठा भ्रष्टाचार के पर्याय बन चुके हैं। प्रत्येक काम के लिए रिश्वत लेना वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। बिना रिश्वत लिए उनकी कलम चलती ही नहीं है। उनके कारनामों से आम जनता त्रस्त हो चुकी है।रिश्वत लेते हुए उनका विडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है। इसके बावजूद वे अपने पद पर बने हुए हैं। धरना-प्रदर्शन के बाद एक प्रतिनिधिमंडल ने डीएम को 11 सूत्री मांगपत्र सौंपा। इनकी मांगों में अन्य बातों के अलावा. भ्रष्टाचार में आकंठ डबे सरैया सी. ओ. सहित तमाम भ्रष्ट अधिकारियों को बर्खास्त किया जाये। सरैया अंचल कार्यालय को दलालों से मुक्त कराया जाये।. शारीरिक रूप से लाचार नवल श्रीवास्तव को पांच हल्का का प्रभारी कैसे नियुक्त किया गया ?इसकी जांच की जाये। राजारामपुर, सरैया, चकना, गोरीगामाडीह, जैतपुर हल्का में उनके पुत्र द्वय छोटू और मुकुल से गैर कानूनी ढंग से काम कराने वाले पदाधिकारी को बर्खास्त किया जाये। दाखिल- खारिज एवं परिमार्जन में रिश्वतखोरी पर पूरी तरह से रोक लगाई जाये।. आपसी बँटवारा की प्रक्रिया सरल करते हुए ग्राम कचहरी को इसका अधिकार दिया जाये तथा सरपंच द्वारा निष्पादित बँटवारा के आधार पर दाखिल- खारिज करना सुनिश्चित किया जाये। पिछले 3 वित्तीय वर्ष से लेकर अब तक वसूल किये गए भू-राजस्व को ऑनलाइन कराया जाये। घूस देने में असमर्थ या ऐसा करने से इनकार करने वाले अपेक्षाकृत कम आय वाले व्यक्ति का अधिक तथा रिश्वत के बल पर अधिक आय वालों का कम का आय प्रमाण पत्र बनाने वाले कर्मचारी अधिकारी पर सख्त कार्रवाई किया जाये।

मेस में खाना खाने और भुगतान नहीं करने के विवाद में थानाध्यक्ष पर लगा गाली-गलौज करने का आरोप

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के बिथान थाना में कार्यरत डॉटा इंट्री ऑपरेटर अजय कुमार मुखिया ने समस्तीपुर पुलिस अधीक्षक को लिखित आवेदन देकर विधान थाना अध्यक्ष दिल कुमार भारती पर गाली-गलौज करने का आरोप लगाया है।

आवेदन में आरोप लगाते हुए कहा गया है कि बिथान थानाध्यक्ष दिल कुमार भारती के द्वारा होली से एक दिन पूर्व सात मार्च को उनके साथ गाली-गलौज किया गया। पीड़ित के अनुसार थानाध्यक्ष ने लोगों बीच बगैर सत्यापन के गलत अफवाह फैलाने का काम किया और इसके बाद के सभी पुलिस कर्मियों के सामने उनकी मां बहन की भद्दी-भद्दी गालियां दी गई। इतना ही नहीं थानाध्यक्ष के द्वारा थाने में रखे एक झंडे को लेकर उन्हें मारने को दौड़ा भी गया, लेकिन एसआई अनिल कुमार रजक के द्वारा बीच-बचाव कर डाटा एंट्री ऑपरेटर को पीटने से बचा लिया गया। पीड़ित के अनुसार थाना अध्यक्ष मोहम्मद खुशबुद्दीन के कार्यकाल के दौरान उन्हें मेस का कार्यभार सौंपा गया था। वहीं, किसी के द्वारा अफवा फैला दिया गया कि थानाध्यक्ष मेस में खाना खाते हैं लेकिन मेस में खाना खाने का भुगतान नहीं करते हैं। इसी बात को थाना अध्यक्ष के द्वारा उनके साथ गाली-गलौज किया गया। पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक से न्याय की गुहार लगाते हुए कहा है कि थाना अध्यक्ष कभी भी उन्हें झूठे मुकदमे में फंसा कर जेल भेज सकते हैं।

बिथान पुलिस नहीं रही सजग, बदमाशों ने होली के विवाद में महिला की गोली मारकर की हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर। पुलिस की लापरवाही के कारण बदमाशों ने होली की रात में एक महिला की गोली मारकर हत्या कर दी। घटना के संबंध में बताया गया है कि बिथान थाना के पुसहो वार्ड नंबर छह निवासी संजय कुमार यादव के घर के बच्चे अपने घर के सामने होली खेल रहे थे। इसी दौरान उधर से गुजर रहा है आरोपी श्याम यादव के ऊपर बच्चों ने कीचड़ और गोबर फेंक दिया था। जिसके बाद श्याम यादव की वहां पर कहासुनी भी हुई थी और उसने दोपहर बिथान थाना पहुंचकर थाने में इस मामले को लेकर आवेदन भी दिया था। लेकिन, बताया गया कि इस आवेदन पर पुलिस सक्रिय नहीं हुई थी। जिसके बाद शाम में श्याम को कुछ लोगों ने छींटाकशी भी की। बताया गया है कि इस घटना के बाद श्याम काफी गुस्से में आ गया। और देर रात संजय यादव के घर पर पहुंचकर उसकी पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी। मृतक महिला की पहचान रेखा देवी के रूप में की गई है। इस घटना के बाद गांव में दो गुटों के बीच तनाव व्याप्त है। लोगों का कहना था कि अगर पुलिस दोपहर में कार्रवाई की होती तो इस हत्याकांड को रोका जा सकता था। बिथान थाना अध्यक्ष दिल कुमार भारती ने बताया कि दिन में गोबर व कादो फेंकने को लेकर विवाद हुआ था जिसके बाद गांव में पुलिस टीम को भेजा गया था दोनों पक्ष को समझा बुझा भी दिया गया था। इसी दौरान रात में हत्या की वारदात सामने आई है। आरोपी घर से फरार है जिसकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

पोते को पुलिस ने लिया हिरासत में तो पुलिस महानिरीक्षक से लगायी न्याय की गुहार

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना कांड संख्या 69/23 के नामजद अभियुक्त रामाश्रय सिंह उर्फ टुना सिंह है। 02 मार्च को विभूतिपुर पुलिस अभियुक्त रामाश्रय सिंह के 15 वर्षीय पुत्र यशरंजन कुमार को हिरासत में लिया तो यशरंजन के दादा रामशरण सिंह ने पुलिस महानिरीक्षक से न्याय की गुहार लगाते हुए बताया कि 02 मार्च से 05 मार्च तक नाबालिक लड़का को नाजायज तरीके से हिरासत में रखना और मारपीट करना मानवाधिकार उल्लंघन का मामला परिलक्षित होता है। उन्होंने पुलिस महानिरीक्षक से अपने स्तर से जांच कर दोषी पर कानूनी कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

पूर्व मंत्री बालेश्वर राम की 96वीं जयंती मनाई गई

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत बीआरएनकेएस महाविद्यालय के सभागार में पूर्व मंत्री बालेश्वर राम की 96वीं जयंती प्राचार्य सूर्य देव प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में मनाई गई। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रांगण में अवस्थित उनके प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। वहीं वक्ताओं ने उन्हें महान समाजसेवी, शिक्षाप्रेमी एवं देश के निर्माण का अग्रणी नेता बताते हुए उनके योगदान का याद किया। मौके पर बिहार सरकार के पूर्व मंत्री डॉ० अशोक कुमार, प्रो० अमरनाथ झा, रंजू कुमारी, रतिरमण झा, अमरकांत झा, चन्द्रवीर, सत्यप्रकाश, राम विलास ठाकुर, चंदन कुमार, वैद्यनाथ शर्मा सहित महाविद्यालय के सभी कर्मी मौजूद थे।

रिमझिम फुहारों के बीच हर्षोल्लास के साथ रंगों का त्योहार होली संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर। समस्तीपुर जिले में 8 मार्च को रंगपर्व का त्योहार होली हर्षोल्लास और बारिश की रिमझिम फुहारों के बीच मनाया गया। बता दें कि सुबह मौसम में अचानक आए बदलाव से होली के त्योहार का जश्न दोगुना हो गया। कहीं पर तेज तो कहीं हल्की बारिश से वातावरण में ठंड का अनुभव हो रहा था, लेकिन इस मौसम में लोगों के बीच होली की मस्ती को दोगुना कर दिया। वहीं, बारिश और बादल के कारण होली पर सुबह से लोग सूर्य के दर्शन भी नहीं कर पाये, हालांकि बाद में जाकर धूप निकली। हालांकि, रंगोत्सव के महापर्व में डूबे लोगों पर बारिश का कोई फर्क नहीं पड़ा। लोगों ने काफी उत्साह के साथ होली के त्यौहार को मनाया। बारिश से होली के पर्व का जोश दोगुना हो गया था। चारों तरफ उत्साह का माहौल था। लोग एक दूसरे के घर जाकर होली की शुभकामनाएं दे रहे थे। सड़कों पर बच्चे और युवा बारिश में भीगकर एक-दूसरे को खूब जीभर के रंग लगाया।

हर्षोल्लास के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया गया होली व शबेबरात का त्यौहार

तारापुर (मुंगेर) । तारापुर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रंग अबीर का त्यौहार होली एवं मुस्लिम समाज के लोगों ने शबेबरात का त्यौहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से मनाया । गौरतलब है कि तारापुर के कुछ हिस्सों में 7 मार्च को भी लोगों ने होलिका दहन के बाद पूरे जख्म के साथ होली का त्यौहार मनाया । कोरोना संक्रमण के करीब 3 सालों के बाद क्षेत्र में बिना किसी घटना दुर्घटना के बीच लोगों ने अपने -अपने घरों के अलावे गांव में घूम- घूम कर एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर होली की बधाई दिया ।

संक्षिप्त खबरें

सीएनजी ऑटो में लगी अचानक आग बाल-बाल बचे यात्री, ऑटो जलकर खाक

करपी। किंजर थाना क्षेत्र के एनएच 110 पर किंजर पुनपुन नदी पुल पर अचानक सीएनजी ऑटो में आग लग गईं आग लगने से थोड़ा देर के लिए अफरा-तफरी का माहौल कायम हो गयो गनीमत रही कि जैसे ही ऑटो के इंजन से धुंआ निकलने लगा चालक और सवार झट से बाहर कूद गए किसी को समझ आता तब तक बीच पुनपुन नदी पुल पर ऑटो धू-धू कर जलने लगो ग्रामीणों ने इसकी सूचना अग्निशमन विभाग को दी सूचना के उपरांत अग्निशमन विभाग कि टीम घटनास्थल पर पहुंचकर आग बुझाने की कोशिश करती तब तक ऑटो जलकर खाक हो चुका थो घटना के दौरान लोगों की भीड़ लग गई गाड़िया जहां तहां रुक गई हालाकी अभी तक इसके बारे में जानकारी स्पष्ट नहीं हुआ है कि आग ऑटो में कैसे लगी है फिलहाल किंजर थाने के पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर जांच पड़ताल करने में जुट गई है।

नीरज सिंह राजपूत बनाए गए राष्ट्रिय सनातन योद्धा मंच के गया जिला उपसंयोगक

गया। डीएवी पब्लिक स्कूल कैंट एरिया गया के शारीरिक टीचर नीरज सिंह राजपूत को राष्ट्रिय सनातन योद्धा मंच बिहार गया के जिला उपसंयोगक बनाया गया है। यह जानकारी जिला संयोजक आकाश प्रियदर्शी ने दी है। राष्ट्रिय संरक्षक सचिन राज, वार्ड 51 के संयोगक विश्व रंजन उर्फ गोरे आदि लोगो ने बधाई दी है और उज्वल भविष्य की कामना की है।

सशस्त्र सीमा बल 29वीं वाहिनी को मिला इस साल का ऑपरेशनल अवार्ड

गया। लखीमपुर खेरी में सशस्त्र सीमा बल का 59वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में नित्यानंद रॉय, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री, विशिष्ट अतिथि अजय मिश्रा, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री एवं रश्मि शुक्ला, भा. पु. से.,महानिदेशक, स. सी. ब. एवं अन्य अधिकारीगण व कार्मिक उपस्थिति थे। कार्यक्रम के दौरान भव्य परेड का आयोजन स. सी. ब. के विभिन्न सीमान्त मुख्यालयों से आए अधिकारियों / कार्मिकों के द्वारा किया गया। परेड के उपरांत 29वीं वाहिनी, स. सी. ब.गया को पिछले वर्ष में प्रचालन संबंधी उपलब्धियों के कारण विशिष्ट प्रचालन वाहिनी का अवार्ड वाहिनी के कमांडेंट एच. के. गुप्ता को प्रदान किया गया।बटालियन में भी इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा गया।वाहिनी के सभी बलकर्मी विशिष्ट प्रचालन वाहिनी का अवार्ड मिलने से अति उत्साहित हैं। इस अवसर पर सशस्त्र सीमा बल के वरिष्ठ अधिकारी, 29वीं वाहिनी, सशस्त्र सीमा बल गया को विशिष्ट प्रचालन वाहिनी का अवार्ड मिलने पर शुभकामनाएं दिए।

पिस्टल व कारतूस के साथ हथियार कारोबारी गिरफ्तार अन्य दो कारोबारी भागने में रहा सफल

मुंगेर। मिजार्पुर बरहद गांव में गत बृहस्पतिवार को पुलिस द्वारा छापामारी कर हथियार कारोबारी मोहम्मद सज्जाद उर्फ साहेब उर्फ कनकटवा को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बताया कि उनके पास से चार पिस्टल तीन मैगजीन और दो जिंदा कारतूस बरामद किया गया है वही अन्य दो हथियार कारोबारी पुलिस को चकमा देकर भागने में सफल हो गया। एसडीपीओ राजेश कुमार ने बताया कि सूचना मिली की मिजार्पुर बरहद गांव में बड़े पैमाने पर हथियारों की खरीद परोख्त होने वाली है। मुफस्सिल थाना अध्यक्ष दलजीत झा के नेतृत्व में थाने की पुलिस की डीआइयु की टीम ने बुधवार को छापेमारी कर मोहम्मद शज्जाद को गिरफ्तार कर लिया गया उसके घर के भूसाघर से दो पिस्टल बरामद किया गया। जबकि एक पिस्टल घर के अंदर रखे बक्से और एक पिस्टल उसके कमर से बरामद किया गया है। उसके घर से दो कारतूस भी मिला। डीएसपी ने बताया कि छापेमारी के दौरान दो हथियार कारोबारी मिजार्पुर बरहद गांव निवासी छोटू और महताब आलम पुलिस को चकमा देकर भागने में सफल रहे हैं। हथियार कारोबारी से पूछताछ में शहजाद ने स्वीकार किया कि उनके खिलाफ तीन मामले मुश्किल थाना में पूर्व से दर्ज है जबकि गया जिला में वह कार्रवाइन के साथ गिरफ्तार हुआ था। पुलिस जानकारी लगा रही है कि हथियारों की डिलीवरी किसे देने वाला था वही फरार दोनों हथियार कारोबारी को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है।

मृतक के पात्र परिजन को मिलेंगे 5-5 डिसमिल जमीन एवं आवास योजना का लाभ

सरकार की योजनाओं से पीड़ित परिवार को लाभ दिलाने हेतु रखी जाएगी प्राथमिकता

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बाराचट्टी थाना क्षेत्र के बुमेर पंचायत अंतर्गत गूलरवेद गांव में घटित घटना को लेकर जिला पदाधिकारी गया डॉ त्यागराजन एसएम ने आज स्थल निरीक्षण किए हैं। सबसे पहले जिलाधिकारी ने विस्फोट स्थल का निरीक्षण किया गया है। इसके साथ ही पीड़ित परिवार से भी मिले एवं उन्होंने संताबना देते हुए कहा कि यह घटना काफी दुखद है। तत्पश्चात स्थानीय जनप्रतिनिधियों से भी मिले। जिस स्थान पर अभ्यास फायरिंग की जाती है उस स्थल पर भी निरीक्षण किए और किस किस प्रकार की अभ्यास फायरिंग की जाती है, उसकी भी जानकारी लिया गया है। अभ्यास फायरिंग के बीच कौन-कौन से गांव बीच में प्रभावित पड़ते हैं। उसका का जानकारी लिया गया है। आर्मी के पदाधिकारी के साथ बैठक किया गया है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ भी बैठक कर जानकारी लिया एवं उनकी समस्याओं को जाना गया एवं फायरिंग रेंज में पड़ने वाले गांव एवं टोलो का सर्वेक्षण करने का

निर्देश भूमि सुधार उप समाहर्ता शेरघाटी को दिया गया है। हाई रिस्क गांव का भी सर्वेक्षण कराने का निर्देश दिया गया है।

दोनों पक्ष को सुनते हुए ग्रामीणों को अस्वस्थ कराया कि सही ढंग से जांच होगी। पीड़ित परिवारों को हर तरह की सरकारी योजनाओं की मदद की जाएगी। तत्काल अगले 10 दिनों तक अभ्यास फायरिंग को बंद रखने का निर्णय लिया गया है। जिला पदाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम एवं स्थानीय विधायक ज्योति देवी ने भीमराव अंबेडकर आवासीय छात्रावास के दफ्तर में बुमेर पंचायत एवं आसपास के इलाके के ग्रामीणों के साथ विस्तार से बैठक करते हुए घटना के एक एक बिंदुबार जानकारी लिया है। इसके बाद *एसडीओ को दिए निर्देश पात्र पीड़ित को 5-5 डिसमिल भूमि और आवास योजना कराएं उपलब्ध अनुमंडल पदाधिकारी शेरघाटी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी बाराचट्टी को जिला पदाधिकारी के द्वारा निर्देश दिया गया कि है कि दस दिन के अंदर मृतक के आश्रितों को पांच-पांच डिसमिल जमीन सुरक्षित स्थान पर उपलब्ध कराएं। इसके साथ ही मुख्यमंत्री आवास योजना के द्वारा इन्हें आवास की व्यवस्था कराइए जाए। एसडीओ के निर्देश पर मृतक के आश्रितों को एक-एक क्विंटल चावल पीडीएस बिक्रेता के द्वारा मुहैया कराई गई है।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सरकार की अन्य जितने भी योजना में पात्रता रखते हैं ये देखते हुए उन्हें प्राथमिकता पर योजना का लाभ उपलब्ध करवाया जाएगा। इस घटना में 9 साल की बच्ची के माता-पिता की हुई मृत्यु पर जिला पदाधिकारी ने उस बच्ची को परवरिश योजना के द्वारा लाभ उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। बच्ची के पढ़ाई लिखाई तथा अन्य व्यवस्था बेहतर तरीके से करवाया जाए।

रोड़ेवाजी के मामले में आठ लोगो को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रात : किरण संवाददाता

पालीगंज। सिगोड़ी थाने के नदहरी ग्राम में पुलिस गाड़ी पर रोड़ेवाजी कर गाड़ी को छतिग्रस्त करने के आरोप में आठ लोगों को गिरफ्तार कर पुलिस ने शुक्रवार को जेल भेज दिया। जानकारी के अनुसार गुरुवार की शाम सिगोड़ी थाना क्षेत्र के नदहरी ग्राम के नवयुवको की ओर से होली पर्व के दूसरे दिन झुमटा निकाला गया था। उसी दौरान वहां दो युवक पाली किंजर मुख्य सड़क को पार करने लगा। जिसके दौरान एक मैजिक गाड़ी के चपेट में एक युवक आ गया। लेकिन वह बाल बाल बच गया। इस घटना से गुस्साये दोनों युवकों ने मैजिक गाड़ी के चालक को गाड़ी से खींच कर मारपीट करना शुरू कर दिया। मारपीट होते देख वहां से गुजर रहे एक मोटरसाइकिल सवार ने पुलिस को खबर कर दी। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस गश्ती दल ने युवक को पीटते चालक को बचाया। इससे आक्रोशित दोनों युवकों ने पुलिस के साथ भी गाली गलौज करने लगा। जिससे गुस्साए पुलिस ने एक युवक को पकड़ कर अपनी गाड़ी में बैठा कर धोखरा गांव की ओर चल दिया। वही दूसरा युवक वहां से भाग कर गांव में पहुंचा व ग्रामीणों से अपने साथी को गिरफ्तार होने की बात बताई। यह जानकर कुछ ग्रामीण युवक के साथ ईट पत्थर लेकर सड़क पर आ गए। उसी दौरान जैसे ही पुलिस की गाड़ी लौट रही थी की ग्रामीणों ने पुलिस गाड़ी पर ईट बरसाने लगे और पूरी गाड़ी को क्षतिग्रस्त कर दिया। वही पुलिस ने भाग कर अपनी जान बचाई व युवक को लेकर थाने पहुंची।जहां युवक ने पूछताछ के दौरान अपने साथियों का नाम बताया। वही देर रात गुरुवार को पुलिस ने नदहरि गांव में छापेमारी कर मोनू कुमार, परमानंद मिश्रा, गोलू मिश्रा, छोटू मिश्रा, सीताराम महतो, रौशन कुमार, रंजय कुमार व धनंजय कुमार को गिरफ्तार कर लिया। मामले की पुष्टि करते हुए पुलिस ने बताता की गिरफ्तार लोगो को जेल भेजा गया है।

विपरीत परिस्थितियों में अंधविश्वास पाखंड से लड़कर महिला स्कूल की स्थापना की थी सावित्रीबाई फुले : विनय कुशवाहा

प्रात : किरण संवाददाता

गया। महात्मा ज्योतिबा फुले क्रांतिकारी संघ के बैनर तले बांके बाजार के डी के किड्जी स्कूल के प्रांगण में देश की प्रथम महिला शिक्षिका महान समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले का पुण्यतिथि मनाया गया है। इस मौके पर महात्मा ज्योतिबा फुले क्रांतिकारी संघ के राष्ट्रीय संयोजक राजद के वरिष्ठ नेता विनय कुशवाहा ने माता सावित्रीबाई फुले के तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दिया गया है।

इस मौके पर विनय कुशवाहा ने कहा कि सावित्रीबाई फुले देश की प्रथम महिला शिक्षिका के साथ-साथ महान समाज सुधारक थी। उन्होंने छुआछूत, जाती- पाती, ऊंच-नीच, बाल विवाह जैसे तमाम कुरीतियों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लडी। उन्होंने विधवा विवाह को प्रोत्साहित कर समाज सुधार के लिए क्रांतिकारी कदम उठाया है। महिलाओं एवं बच्चियों के पढ़ने के लिए देश

में सबसे पहले महिला स्कूल का स्थापना किया एवं खुद पढ़ाना शुरू किया गया है।

उस समय धर्म के ठेकेदारों ने सावित्रीबाई फुले पर तरह-तरह के अल्नक्षणा लगाया। लड़कियों को पढ़ाने के लिए स्कूल जाती थी तो समाज के ठेकेदारों ने इन पर गोबर मल मूत्र फेंका करते थे तरह-तरह से प्रताड़ित करते थे इतना अपमान सहने के बावजूद सावित्रीबाई फुले ने हार नहीं मानी है। और बच्चियों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया और सफल रही है। सावित्रीबाई फुले इतनी बहादुर महिला थी की पाखंड और अन्याय के खिलाफ अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर लड़ाई लड़ती रही और सफलता हासिल की है।

विनय कुशवाहा ने कहा कि देश की महिलाओं को इनसे सीख लेकर पाखंड और अन्याय के खिलाफ निर्णायक लड़ाई को आगे बढ़ा कर जात पात छुआछूत ऊंच-नीच की भेद को खत्म करके नया राष्ट्र का निर्माण करें।पुण्यतिथि के अवसर पर केंद्र सरकार से मांग किया गया की शैक्षिक पाठ्यक्रम में सावित्रीबाई फुले की जीवनी को शामिल किया जाए। के साथ पूरे देश में सावित्रीबाई फुले का जन्म दिवस एवं पुण्यतिथि राजकीय समारोह के साथ मनाया जाए। हर राज्य में सावित्रीबाई फुले के नाम से महिला विश्वविद्यालय की स्थापना किया जाए ताकि देश की बेटियां पढ़ लिख कर और सशक्त एवं मजबूत बने।इस मौके पर शशि भूषण सिंह, सुषमा वर्मा, बसन्त यादव, राकेश शर्मा, उपस्थित थे।

लौकहा थानाध्यक्ष को एसपी ने प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/खुटौना। शुक्रवार को जिला प्रशासन मधुबनी द्वारा पुलिस कर्मियों के साथ होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। उक्त समारोह में जिला पदाधिकारी मधुबनी अरविन्द कुमार वर्मा एवं पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार के साथ जिला के तमाम पुलिस बल ने भाग लिया।

होली मिलन समारोह के मौके पर बीते दिनों बिहार पुलिस द्वारा किए गए जन सहभागिता रैली में हिस्सा लेने वाले पुलिस बल, पदाधिकारी एवं पुलिस दिवस पर आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में अपना रक्त देने वाले बिहार पुलिस के जवानों को मधुबनी के पुलिस कप्तान सुशील कुमार ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इसी कड़ी में लौकहा थाना के थानाध्यक्ष संतोष कुमार मंडल, पूअनि राजकिशोर पंडित, चौकीदार परमानंद दास एवं ज्योति कुमारी को डीएम और एसपी ने प्रशस्ति

पत्र देकर सम्मानित किया।बता दें कि उक्त रक्तदान शिविर में 58 पुरूष व 3 महिला पुलिस कर्मी को मिलाकर कुल 61 यूनिट रक्तदान किया गया। वहीं थानाध्यक्ष ने इस मौके पर खुशी जताते हुए अधिकारियों को धन्यवाद कहा व सफल जन सहभागिता रैली को लेकर थाना के सभी पुलिस कर्मियों को भी शुभकामना दी। उन्होंने कहा उन्हें गर्व है कि उनका दिया हुआ रक्त किसी के जीवन को बचाने के काम आएगा।लौकाहा थानाध्यक्ष एवं अन्य पुलिस कर्मियों को प्रशस्ति सम्मान पत्र मिलने पर लौकहा के मुखिया संजीव कुमार साह, सरपंच रॉबिन प्रसाद, पैक्स अध्यक्ष विनोद सिंह, गौरव कर्ण सहित अन्य लोगों ने खुशी जताई।

खुटौना प्रखंड में प्राकृतिक जलाशय वाले धरोहर बदहाल हैं

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/खुटौना। एक तरफ जहां बिहार सरकार जल जीवन हरियाली, जल संरक्षण को लेकर वाटर हार्वेस्टिंग और अमृत सरोवर जैसे योजनाओं की बात करती है वहीं हकीकत कुछ और ही बयां कर रही है।गर्मी का मौसम आ चुका है। तन को जलाने वाली भीषण गर्मी में अक्सर जलस्तर घट जाता है।

जगह जगह चापाकल से पानी निकलना बंद हो जाता है। खेत खलिहान इस कदर सूखने लगते हैं जैसे फसलों में आग लग जायेगी और मिट्टी में दरारें फट पड़ती है। और फिर बंजर नुमा सुखी घास वाले मैदान के सिवा दूर दूर तक

न तो हरियाली नजर आती है, न छांव और न प्याऊ। बताते चलें कि खुटौना प्रखंड में प्राकृतिक जलाशय वाले धरोहर बदहाल हैं। प्रखंड में कहीं भी न तो तालाब और न ही कुंआ (ईनार) की स्थिति अच्छी है। तालाब व पोखर के उड़ाही करण, घाट निर्माण और सौंदर्यीकरण के साथ साथ अमृत सरोवर योजना के नाम पर सरकारी राशि की लूट के सिवा कुछ भी नहीं होता।

वहीं प्रखंड के कई गावों लौकहा, बघमरिया, माधोपुर, धनुषी, ललमनियां, मेहशे समेत विभिन्न पंचायतों के गांवों में प्राचीन काल से बने कुओं की स्थिति दयनीय है। एक जमाने में कुआं लोगों के प्यास बुझाने से लेकर सारे दैनिक कार्यों में प्राकृतिक शुद्ध जल का मुख्य स्रोत हुआ करता था। लेकिन अब यह ऊपेक्षा का शिकार बना जीर्णोद्धार की बाट जोह रहा है।पूरे प्रखंड में लगभग 35 से 40 कुएं हैं। उनमें से अधिकतर या तो लोगों ने मिट्टी में दफन कर वहां की जमीन हड़प ली, या फिर कुआं पर ही कब्जा कर लिया या फिर कुआं है तो साफ पानी नहीं या फिर कुओं में कचड़ों का ढेर पड़ा है। हद तो तब है जब देवालयों में भी कुओं की स्थिति ठीक नहीं जबकि लोग उसी कुएं का पवित्र जल भगवान को चढ़ाते हैं। लौकहा के ब्रह्म स्थान परिसर स्थित कुआं में सड़ा हुआ पानी और कचड़ा है तो खुटौना के राधा कृष्ण मंदिर परिसर स्थित कुएं में मोटे मोटे चूहे नजर आते हैं।कहीं न कहीं जल संरक्षण की दिशा में अगर कोई सार्थक प्रयास किया जा सकता है तो सबसे पहले प्रखंड के सभी कुओं को चिन्हित कर उन्हें जीवंत करने की दिशा में पहल की जानी चाहिए।

पचवीर में अतिक्रमण पर चला प्रशासन का बुलडोजर

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। बच्चियों के साथ गैंगरेप की घटना के 48 घंटे के भीतर साहेबपुर कमाल थाना क्षेत्र के पचवीर में अतिक्रमणकारियों के खिलाफ प्रशासन का बुलडोजर चला। होली के दिन हुई गैंगरेप एवं रेप के प्रयास के जघन्य अपराध की घटना पंचवीर चौक स्थित जिस सरकारी स्कूल में घटित हुई थी, उस स्कूल के सामने अवैध रूप से बने तमाम पान, चाय की गुमटी व अतिक्रमण को प्रशासन ने शुक्रवार को हटा दिया। स्कूल में हुई घटना का एक कारण स्कूल के आसपास के अतिक्रमण को भी माना जा रहा था, जिससे स्कूल के भीतर की गतिविधियों के बारे में आसपास के लोगों को जानकारी नहीं मिल सकी थी।

प्रशासन ने आश्वस्त किया था कि तीन दिनों के अंदर अवैध रूप से जमा सड़क किनारे गुमटियों को अविलंब हटवा दिया जाएगा। जिसका असर गुरुवार को दूसरे दिन से ही देखने को मिल रहा था। गुरुवार की शाम से ही स्कूल के सामने पचवीर मोड़ पर मंदिर के समीप स्थापित गुमटियों को लोगों ने हटाना शुरू कर दिया था। इसके बाद शुक्रवार को भी उक्त विवादित स्थल पर बचे शेष अतिक्रमण को प्रशासन द्वारा हटाने का काम

युद्ध स्तर पर चल रहा है। उक्त अतिक्रमण को हटा लिए जाने के बाद प्रशासन ने जहां राहत की सांस ली है, वहीं स्थानीय लोगों ने संतोष प्रकट किया है।

पचवीर के स्थानीय लोगों का कहना था कि उक्त स्थल पर अपराध कर्मियों के द्वारा कई बार आपराधिक घटना को सुनियोजित ढंग से अंजाम दिया करता था। अपराधिक घटनाएं पूर्व में भी घटित हो चुकी है। बावजूद इसके गुमटी को हटाया नहीं जा रहा था। पान, चाय के आड़ में शराब का सेवन, बेचना गांजा का सेवन एवं बेचना भांग इत्यादि सभी आपराधिक घटनाओं को अपराध कर्मियों के द्वारा अंजाम दिया जाता था। उक्त विवादित स्थल पर अतिक्रमण को हटाने की मांग स्थानीय लोगों ने आक्रोशपूर्ण रवैया के साथ बलिया एसडीओ रोहित कुमार व एसडीपीओ कुमार वीर धीरेंद्र से गैंगरेप एवं छेड़छाड़ की घटना के बाद ही किया था।

बलिया में युवक की गोली मारकर निर्मम हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। अपराधियों ने जिले के बलिया थाना क्षेत्र में पुलिस को खुला चैलेंज देते हुए 24 घंटे के अंदर हत्या की दूसरी बड़ी घटना को अंजाम दिया है। हत्या की दूसरी वारदात बीती रात करीब 11 बजे बड़ी बलिया इलाके में घटित हुई, जहां अपराधियों ने 19 साल के एक युवक को गोलियों से छलनी कर मौत के घाट उतार दिया है। घटना के बाद बलिया थाना क्षेत्र में दहशत और आक्रोश का माहौल है। शव को पोस्टमार्टम के लिए शुक्रवार को बेगूसराय सदर अस्पताल भेजा गया, जहां पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस को हत्या के कारणों और हत्यारों का अभी तक पता नहीं चल सका है। पुलिस पूरे मामले पर नजर रखकर जांच कर रही है। वहीं स्थानीय लोगों ने एफएसएल टीम से जांच कराने तथा खोजी कुत्ते की मदद से घटना को अंजाम देने वाले अपराधियों की पहचान करने की मांग की है, ताकि उक्त हत्या की घटना में कोई निर्दोष ना

फंसे। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अज्ञात अपराधियों ने गुरुवार की रात करीब 11 बजे बलिया थाना क्षेत्र अंतर्गत बड़ी बलिया दक्षिणी पूर्वी पंचायत के वार्ड नंबर-1 निवासी विलायती यादव के 19 वर्षीय पुत्र अंकुश कुमार की गोली मारकर निर्मम हत्या कर दी। शव पर पांच से छह गोलियों के निशान पाए गए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि युवक अंकुश कुमार की हत्या किसी अन्य स्थल पर किए जाने के बाद शव को बड़ी बलिया उत्तरी पंचायत अंतर्गत रेलवे लाइन से उत्तर तांती टोला स्थल के समीप एक खुली जगह पर लाकर रख दिया गया है।

घरवालों ने बीती रात में 11:00 बजे सूचना मिलने पर युवक के शव को बरामद किया है। खून से लथपथ शव को ग्रामीणों एवं घरवालों के द्वारा उठाकर घर लाया गया। मृतक सात भाई में सबसे छोटा भाई था। घर वालों का आरोप है कि रात से ही बलिया पुलिस को हत्या किए जाने की सूचना दी जा रही थी, परंतु शुक्रवार की सुबह में पुलिस काफी विलंब से पहुंची। मृतक अंतिम बार रात्रि नौ बजे किसी अन्य मोबाइल से अपने घर पर फोन किया था, तब उसने गाय का दूध दूहने की जानकारी ली थी।

बलिया थाना पुलिस शुक्रवार की सुबह जब शव को पोस्टमार्टम के लिए ले जाने के हेतु थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में पहुंची। तब स्थानीय लोगों ने बलिया एसडीपीओ के पहुंचने पर ही शव पोस्टमार्टम के लिए सौंपने की बात पर अड़े हुए थे। बलिया एसडीपीओ कुमार वीर धीरेंद्र के पहुंचने और निष्पक्ष जांच का भरोसा दिए जाने के बाद ही शव को उठाया जा सका। स्थानीय लोगों ने बलिया एसडीपीओ से इस हत्याकांड की जांच में खोजी कुत्ता की मदद तथा एसआईटी गठित करने की मांग की है। स्थानीय लोगों में बलिया नगर परिषद के उप मुख्य पार्षद प्रतिनिधि अरविंद यादव, पूर्व मुखिया सोहन यादव, पूर्व मुखिया विनोद गुप्ता, पूर्व सरपंच ओवैस, मोहम्मद जैदी सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

महिलाओं के सम्मान से ही सार्थक होगा महिला दिवस

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। शुक्रवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के डीआर भवन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के बैनर तले अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह के तहत विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस विधिक जागरूकता कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव सतीश कुमार झा ने कहा कि आज बड़े ही हर्ष का दिन है कि हम सभी यहां अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह में महिलाओं को सशक्त करने व उनके लिए चलाई जा रही नालसा की योजनाओं की जानकारी देने के लिए उपस्थित हुए हैं। साथ ही सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सतीश कुमार झा ने कहा कि आज यहां उपस्थित आंगनबाड़ी की सहायिका एवं सेविका आशाबहू उतनी भाग्यता महिलाओं की भी है और आज मैं इस पावन अवसर पर आप सभी को प्रणाम करता हूं। इस कार्यक्रम में उपस्थित प्रभारी जिला एवं सत्र न्यायाधीश चंचल तिवारी ने उपस्थित सभी महिलाओं को कहा कि सरकार के द्वारा कई सारी जनकल्याणकारी योजनाएं आप लोगों के लिए चलाए जा रहे हैं। जिसका लाभ आप सभी को मिलना है। साथ ही उपस्थित जितने भी यहां लोग हैं सभी से अपील करता हूं कि महिलाओं के सम्मान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लें।

जनता के दरबार मे जिलाधिकारी कार्यक्रम के तहत कई प्राप्त शिकायतों का हुआ निष्पादन

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय में जिले भर से आए परिवादियों से मुलाकात कर उनकी शिकायतों को सुना एवं प्राप्त शिकायतों के त्वरित निष्पादन को लेकर संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश भी दिए। बताते चलें कि प्रत्येक सप्ताह शुक्रवार को जनता के दरबार में जिलाधिकारी कार्यक्रम के आयोजन के मौके पर जिलाधिकारी सभी परिवादियों से मुलाकात करते हैं और उनकी शिकायतों के निपटारे के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश भी देते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में आज कुल 53 परिवादी अपनी शिकायतों के साथ आए थे। हमेशा की तरह सबसे अधिक शिकायतें भूमि विवाद से संबंधित रहीं। वहीं कई लोग अपनी निजी समस्यायों के निराकरण हेतु भी आए थे।

फुलपरास प्रखंड के त्रिवेणी प्रसाद सिंह ने गुहार लगाते हुए कहा कि उनकी खतीयानी जमीन को कुछ दबंग लोगों द्वारा जबरन कब्जा किया जा रहा है। बिस्फी प्रखंड के परसौनी के रहने वाले जीवछ पासवान ने आवेदन देते हुए कहा कि उनकी निजी जमीन पर उन्हें घर बनाने में बाधा डाली जा रही है। स्थानीय सूरतगंज के रहने वाले प्रदीप कुमार राम ने जनहित को देखते हुए स्थानीय बाटा चौक के समीप खराब पड़े चापाकलो को दुरुस्त करवाया जाने का निवेदन किया है। लदनिया प्रखंड के कामेपट्टी की रहने वाली विमला देवी ने शिकायत कि है दबंगों द्वारा फर्जी कागज के आधार पर जबरन उनकी निजी जमीन बेची जा रही है। भौआडा के सचिन कुमार यादव एवं अन्य लोगों ने हवाई अड्डा परिसर को गंदगी मुक्त रखने के उद्देश्य से पर्याप्त इंतजाम किए जाने का अनुरोध किया है। खुटौना प्रखंड के नारायणपुर निवासी घूरन यादव ने बताया कि उनके वार्ड और आसपास के जन वितरण प्रणाली की दुकानों में खाद्यान्न के तौल में वजन की गड़बड़ी की जा रही है। जिलाधिकारी द्वारा आए हुए सभी परिवादियों से बारी बारी सारी शिकायतें सुनी गई और उनके परिवाद के निवारण हेतु आवश्यक निर्देश भी दिए गए।

सम्पादकीय

घटती निष्पक्ष सोच

अनादिकाल से मनुष्य समाज के क्रमिक विकास का मूल आधार ज्ञान ही रहा है। जैसे जैसे भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार होता गया, मनुष्य समाज उत्तरोतर विकास की सीढिां चढ़ता गया। ज्ञान का अर्थ हुआ, जानना। अर्थात उस विषय की सच्चाई को जानना। जब हम स्पष्टता से किसी विषय को जान लेते हैं तो उस विषय में विश्वास के साथ निर्णय लेकर कार्य कर सकते हैं। पूर्ण जानकारी पर आधारित कार्य ही विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। आज का कार्य कल आने वाले विकास का कारण बन जाता है, और इस तरह कार्य-कारण का ऐसा चक्र चल निकलता है जिससे विकास की गाड़ी सतत गतिशील रहती है। किन्तु किसी भी विषय की वास्तविक सच्ची जानकारी के लिए निष्पक्ष मन की जरूरत होती है। जितने भी शोध कार्य किए जाते हैं उनका परिणाम सच के नजदीक तभी आता है जब वे निष्पक्ष मन द्वारा संचालित होते हैं। भौतिक ज्ञान का क्षेत्र इसे समझने के लिए सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है।

यदि आपका मन किसी पूर्व आग्रह से ग्रस्त है तो आपके द्वारा प्राप्त ज्ञान सत्य के नजदीक नहीं होगा, जिस पर आधारित कार्य में आप सफल नहीं हो सकते और असफलता आपको दोबारा सोचने पर बाध्य कर देती है और आप नए सिरे से विषय का सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं। यदि आप रोगी का इलाज कर रहे हैं तो रोग नियंत्रित नहीं होगा, यदि कोई भी अन्य भौतिक कार्य कर रहे हैं तो वह सही नहीं होगा। आप दोबारा गलती सुधार कर ही आगे बढ़ सकते हैं, और इसके लिए जितना भी समय लगे आपको इंतजार करना पड़ेगा। तमाम वैज्ञानिक विकास इसी स्तर के ज्ञान के क्रमिक विकास पर निर्भर रहता हुआ आगे बढा है। इसी तरह सामाजिक ज्ञान के आधार पर ही राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक विकास का सफर तय हुआ है। मनुष्य समाज चिर काल तक सुखी, शांत और समृद्ध जीवन जीने की इच्छा रखता है। इसके लिए किसी को ज्यादा सिखाने की भी जरूरत नहीं होती, यह उसकी स्वाभाविक वृति ही है।

किन्तु ऐसा जीवन जीने के लिए प्रयास दो तरह से किए जा सकते हैं। एक तो केवल अपने लिए व्यवस्था बनाने के लिए संघर्ष करने का मार्ग है। इस रास्ते पर चल कर हमें दूसरे से छीनने में भी कोई दोष नहीं दिखाई देगा। तो हम छीना झपटी वाला समाज बना लेंगे और सुख शांति के बदले दुःख और अशांति ही पैदा कर लेंगे। और हमारी समृद्धि भी एक दूसरे के लिए दुःख और अशांति पैदा करने के साधन इकठ्ठा करने में ही खप जाएगी। तमाम दावों, प्रति दावों के बावजूद अभी तक मनुष्य समाज वैज्ञानिक और तकनीकी विकास से अर्जित शक्ति का एक बड़ा भाग इसी दृष्टि से प्रयोग कर रहा है। इसीलिए दुनिया खेमों में बंद है, रोज बड़े बड़े हथियार तैयार हो रहे हैं, दूसरा कर रहा है, इसलिए हम न करें तो पिट जाएंगे और गुलाम होने का खतरा मंडराने लगेगा। जिन देशों ने गुलामी झेली है, वे स्वाभाविक तौर पर इस विषय में अधिक संवेदनशील हैं, और हथियारों की दौड़ में अग्रणी होना चाहते हैं। वैश्विक स्तर पर सामूहिक सोच विकसित करके ही इस दिशा में कोई पहल करने के बारे में सोचा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ हालांकि इस तरह की वैश्विक कल्याणकारी कुछ पहलें कर भी रहा है, किन्तु सशस्त्र संघर्षों को रोकने के बारे में असमर्थ ही प्रतीत होता है। इसलिए किसी देश को भी अंतरराष्ट्रीय संघर्ष की दौड़ से रोकने का कोई तर्क बचता नहीं है।

करो योग और रहो निरोग

भूपिंदर सिंह

विकसित देशों की तरक्की में वहां के फिट नागरिकों का बड़ा योगदान है। जब तक ग्रामीण परिवेश में अधिकांश जनसंख्या रही तब तक अलग से किसी भी फिटनेस कार्यक्रम की जरूरत नहीं थी। जब से दैनिक जीवन में भौतिक सुख-सुविधाओं का विकास हुआ है तभी से फिटनेस कार्यक्रम की जरूरत महसूस हो रही है। स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। बिना अच्छे स्वास्थ्य के धन दौलत, पद प्रतिष्ठा व अन्य भौतिक सुख सुविधाएं सब बेमानी लगते हैं। जन मानस का स्वास्थ्य उत्तम हो, इस सबके लिए इस कॉलम के माध्यम से बार बार योग के बारे में जानकारी देकर योग को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता रहा है। दौड़ती-भागती जीवन शैली के कारण मनुष्य के पास अपने लिए कोई भी कार्यक्रम नहीं है जो उनके स्वास्थ्य को सुधार कर व्यवस्थित रख सके।

आज मानव ने विज्ञान में नए नए शोध कर प्रौद्योगिकी व चिकित्सा क्षेत्र में इतनी प्रगति कर ली है कि इसके कारण जीवन काफी आसान तो हो गया है, मगर शारीरिक श्रम जो पहले यूं ही दिनचर्या में आसानी से हो जाता था, अब उसके लिए आज अलग से फिटनेस कार्यक्रम चाहिए होता है। समय बचाती दुनिया के लिए योग मुख्य विकल्प है जो कम श्रम कर अधिक फिटनेस दे सकता है। अब आम जन मानस के लिए योग के बारे में जानना जरूरी हो जाता है। पहले भी कई बार इस कॉलम के माध्यम से योग के बारे में लिखा जाता रहा है ताकि आम जनमानस इसे अपना कर स्वास्थ्य लाभ कर सकें। सैकड़ों वर्ष पूर्व महर्षि पतंजलि ने योग को लिखित रूप में संग्रहित किया और योग सूत्र की रचना की। योग सूत्र की रचना के कारण पतंजलि को योग का जनक कहा जाता है। योग के महान ग्रंथ में योग के बारे में कहा गया है कि मन की वृतियों में नियंत्रण करना ही योग है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि यह अष्टांग योग के आठ सूत्र हैं। आठों अंगों में प्रथम दो यम व नियम को नैतिक अनुशासन, आसन, प्राणायाम व प्रत्याहार को शारीरिक अनुशासन व धारणा, ध्यान, समाधि को मानसिक अनुशासन बताया गया है। योग हमें यम एवं नियम द्वारा व्यक्ति के मन और मस्तिष्क को ठीक करने की सलाह देता है। आसन और प्राणायाम करने से पूर्व यदि व्यक्ति यम एवं नियमों का पालन नहीं करता है तो उसे योग से पूर्ण स्वास्थ लाभ नहीं मिल सकता है।

यम और नियम की विस्तार से चर्चा जरूरी है। संयम मन, वचन और कर्म से होना चाहिए। इसका पालन न करने से व्यक्ति का जीवन व समाज दोनों दुष्प्रभावित होते हैं। इससे मन मजबूत और पवित्र होता है तथा मानसिक शक्ति बढ़ती है। सत्य, अहिंसा, असतेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह यह नियम व्यक्तिगत नैतिकता के हैं। मनुष्य को कर्तव्य परायण बनाने तथा जीवन को सुव्यवस्थित करने हेतु पांच नियमों का विधान किया गया है । ये नियम हैं शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्राणिधान। यम यानि मन, वचन एवं कर्म से सत्य का पालन व मिथ्या का त्याग। जिस रूप में देखा, सुना एवं अनुभव किया हो उसी रूप में उसे बतलाना सत्य है। अहिंसा दूसरा सूत्र है। इस में किसी को मारना ही केवल हिंसा का रूप नहीं है, बल्कि किसी भी प्राणी को कभी भी किसी प्रकार का दुख न पहुंचाना अहिंसा है। असतेय अर्थात चोरी न करना।

छल से, धोखे से, झूठ बोलकर, बेईमानी से किसी चीज को प्राप्त करना भी चोरी है। जिस पर अपना अधिकार नहीं उसे लेना भी इसी श्रेणी में आता है। ब्रह्मचर्य मन, वचन एवं कर्म से यौन संयम अथवा मैथुन का सर्वथा त्याग करना ब्रह्मचर्य है। सभी इंद्रिय जनित सुखों में संयम बरतना। अपरिग्रह अपने स्वार्थ के लिए धन, संपति एवं भोग की सामग्री में संयम न बरतना परिग्रह है। इसका अभाव अपरिग्रह है। आवश्यकता से अधिक संचय करना अपरिग्रह है। दूसरों की वस्तुओं की इच्छा न करना। मन, वचन एवं कर्म से इस प्रवृति को त्यागना ही अपरिग्रह है। नियमों में शौच के अंतर्गत पानी मिट्टी आदि के द्वारा शरीर, वस्त्र, भोजन, मकान आदि के मल को दूर करना बाह्य शुद्धि माना जाता है। सद्भावना, मैत्री, करुणा आदि से की जाने वाली शुद्धि आंतरिक शुद्धि मानी जाती है। केवल अपने भौतिक शरीर का ध्यान रखना पर्याप्त नहीं है। बल्कि अपने मन के विचारों को पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना जरूरी है। शरीर और मन दोनों की शुद्धि।

संतोष दूसरा नियम है। इसमें कर्तव्य का पालन करते हुए जो कुछ उपलब्ध हो, जो कुछ प्राप्त हो, उसी में संतुष्ट रहना। किसी प्रकार की तृष्णा न करना। तीसरा नियम है तप। इस नियम में अपने वर्ण, आश्रम, परिस्थिति और योग्यता के अनुसार स्वधर्म का पालन करना। व्रत, उपवास आदि भी इसी में शामिल किया जाता है। यानि कि स्वयं से अनुशासित दिनचर्या में रहना है। स्वाध्याय चौथा नियम है जिससे कर्तव्य का बोध हो सके, मतलब शास्त्र का अध्ययन करना। महापुरुषों के वचनों का अनुपालन भी स्वाध्याय के अंतर्गत आता है। ईश्वर प्राणिधान पांचवां नियम है। ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण व संपूर्ण श्रद्धा रखना। फल की इच्छा का परित्यागपूर्वक समस्त कर्मों का ईश्वर को समर्पण करना ईश्वर प्राणिधान कहलाता है। हजारों साल पहले भारतीय शोधकताओं ने योगिक क्रियाओं से होने वाले लाभों को समझ लिया था जो आज की चिकित्सा व खेल विज्ञान में योग का प्रयोग खूब हो रहा है।

योग के नियमों का पालन करने के बाद अगर यौगिक क्रियाओं को किया जाता है तो मानव में शारीरिक व मानसिक स्तर पर आश्चर्यजनक रूप से अलौकिकता सुधार होता है। आज आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में इनसान को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी हो जाता है। आज जब मनुष्य के पास हर सुख सुविधा आसानी से उपलब्ध है।

जी-20 : महिलाओं के नेतृत्व में विकास की पहल

कोविड-19 महामारी से लेकर चल रहे जलवायु संकट तक, अब यह बात स्वीकार की जा चुकी है कि किसी भी संकट का प्रभाव लैंगिक आधार पर होता है। इसमें महिलाओं और लड़कियों को ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। उनकी सुरक्षा, आजीविका और स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है। भारत की अध्यक्षता में जी-20 महिलाओं और लैंगिक समानता पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महिलाओं की पूंजी तक पहुंच, उद्यमशीलता और श्रम शक्ति की भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण मसलों का अनिवार्य रूप से समाधान करने पर जोर दिया है। घरेलू मोर्चे पर, भारत सरकार ने जीवन के सभी पड़ाव में महिलाओं के समग्र विकास की प्रतिबद्धता के साथ ह्यआत्मनिर्भर भारत विकास के एजेंडे में महिला सशक्तिकरण को केंद्र में रखने का निर्णय लिया। ह्यबेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के कारण 2014 से जन्म के समय लिंगानुपात में 16 अंकों का सुधार हुआ है।

अमिताभ कांत
लेखक जी-20 शेरपा और नीति आयोग, भारत सरकार के पूर्व सीईओ हैं। यह उनके निजी विचार हैं

भारत को जी-20 की अध्यक्षता एक महत्वपूर्ण मोड़ और उपयुक्त समय पर मिली है। पिछले तीन वर्षों में संकट का सामना कर चुके दुनियाभर के देश बेहतर स्थिति में पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। कोविड-19 महामारी से लेकर चल रहे जलवायु संकट तक, अब यह बात स्वीकार की जा चुकी है कि किसी भी संकट का प्रभाव लैंगिक आधार पर होता है। इसमें महिलाओं और लड़कियों को ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। उनकी सुरक्षा, आजीविका और स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है।

भारत की अध्यक्षता में जी-20 महिलाओं और लैंगिक समानता पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महिलाओं की पूंजी तक पहुंच, उद्यमशीलता और श्रम शक्ति की भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण मसलों का अनिवार्य रूप से समाधान करने पर जोर दिया है।

घरेलू मोर्चे पर, भारत सरकार ने जीवन के सभी पड़ाव में महिलाओं के समग्र विकास की प्रतिबद्धता के साथ ह्यआत्मनिर्भर भारत विकास के एजेंडे में महिला सशक्तिकरण को केंद्र में रखने का निर्णय लिया। ह्यबेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के कारण 2014 से जन्म के समय लिंगानुपात में 16 अंकों का सुधार हुआ है। माइक्रो-फाइनेंस प्रदान करने वाली मुद्रा योजना में 70 फीसदी से अधिक लाभार्थी महिलाएं हैं। एकीकृत पोषण सहायता कार्यक्रम, मिशन पोषण 2.0 के जरिए 1.2 करोड़ से अधिक गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं की देख-रेख की गई है। इसके अलावा, कामकाजी महिला छात्रावासों की स्थापना से लेकर कई कौशल विकास कार्यक्रमों का शुभारंभ और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं हिंसा से मुक्ति की पहल- ये सभी भारत की महिलाओं की सुरक्षा, सुविधा और स्वाभिमान सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिए जाने के उदाहरण हैं।

तेजी से और हमारे समाज के परंपरागत लोकाचार के अनुरूप, सरकार भी समाज के स्तर पर सार्थक परिवर्तन लाने के लिए ह्यनारी शक्तिह्न की महत्ता को पहचान रही है। सीधे तौर पर कहें तो महज विकास के लाभार्थियों के रूप में नहीं, बल्कि विकास के प्रेरक और बदलाव के वाहक के रूप में महिलाओं की भूमिका पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

2023 में भारत के नेतृत्व में जी-20 के प्रयासों को आगे बढ़ाने के साथ ही अब समय आ गया है कि हम महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के एजेंडे को भी आगे बढ़ाएं। यह जानते हुए कि जेंडर एक ऐसा विषय है जिससे कई चीजें जुड़ी होती हैं और जो दूसरी लगभग सभी विकास संबंधी संभावनाओं को प्रभावित करती हैं, हम आशा करते हैं कि जी-20 एजेंडे और इससे जुड़े समूहों में लैंगिक समानता पर नए सिरे से जोर दिया जाएगा।

विशेष रूप से, हम निम्नलिखित विषयों पर ठोस कदम उठाए जाने की उम्मीद करते हैंः पहला, महिलाओं के डिजिटल और वित्तीय समावेशन का समर्थन। वैश्विक स्तर पर लगभग आधी (42%) महिलाएं एवं लड़कियां औपचारिक वित्तीय प्रणाली से बाहर हैं। वित्तीय समावेशन दरों में प्रगति के बाद भी, लैंगिक अंतर कम नहीं हुआ है और यह 7% का अंतर बना हुआ है। डिजिटल प्रौद्योगिकी नवाचारों (विशेष रूप से सूचना एवं संचार के लिए) में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में तेजी लाने की क्षमता है। अभी, दोनों डिजिटल प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षा तक पहुंच में डिजिटल लैंगिक अंतर बरकरार है। भारत ने जेएएम या जन धन-आधार-मोबाइल प्लेटफॉर्म के माध्यम से महिलाओं के लिए डिजिटल वित्तीय समावेशन को प्राथमिकता दी है। इसकी मदद से कई महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सीधे महिलाओं तक पहुंच सके हैं और उन्हें मजबूती देने के साथ आर्थिक रूप से सशक्त भी किया है। जी-20 के माध्यम से हमें महिलाओं के डिजिटल एवं वित्तीय समावेशन को मजबूत करने के लिए इसी तरह की ठोस पहलों पर ध्यान देना चाहिए।

दूसरा, विकास में समान रूप से भागीदार बनाने के लिए महिलाओं की क्षमताओं को मजबूत करना। यह अर्थव्यवस्था और समाज दोनों में महिलाओं की भागीदारी में निरंतरता सुनिश्चित करने के साथ ही उनके प्रवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। उदाहरण के तौर पर, पूरी दुनिया में शिक्षा को सशक्तिकरण का आधार माना गया है, इसके बावजूद केवल 49 प्रतिशत ने प्राथमिक शिक्षा में लैंगिक समानता हासिल की है। निम्न माध्यमिक शिक्षा में यह आंकड़ा 42 प्रतिशत और उच्च माध्यमिक शिक्षा में 24 प्रतिशत ही है। पूरी दुनिया में करीब 1.1 अरब महिलाएं और लड़कियां औपचारिक वित्तीय प्रणाली से बाहर हैं, इनमें से कइयों की डिजिटल तकनीक तक सीमित पहुंच है। इसी प्रकार से, दुनियाभर के देशों में काफी ज्यादा देखभाल का काम महिलाएं बिना वेतन के करती हैं। ऐसे में यह महत्वपूर्ण है कि जी-20 साथ मिलकर काम करे और महिलाओं के जीवन में एवं उनके कार्यस्थल पर लंबे समय से चली आ रही अड़चनों को दूर करने के लिए आम सहमति बनाकर फैसले लिए जाएं।

तीसरा, निर्णय लेने के सभी स्तरों पर महिला नेतृत्व को सक्षम बनाना। आज, भारत में प्रशासनिक कार्यालयों में 1.90 करोड़ से अधिक महिलाएं, पंचायती राज संस्थानों के लिए चुनी गई 17,000 से अधिक महिलाएं और रक्षा बलों में 10,000 से अधिक महिलाएं कार्यरत हैं। महिलाओं के नेतृत्व में विकास के लिए ऐसा दृष्टिकोण उनकी अद्वितीय संभावनाओं, अनुभवों और नेतृत्व शैली को सामने लाने के लिए महत्वपूर्ण होगा, बदले में महिलाएं अधिक समावेशी और प्रभावी निर्णय लेने की स्थिति में पहुंच सकेंगी।

आखिर में, विभिन्न पहलों से मिले परिणाम की स्थिरता को सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए, अलग-अलग लैंगिक डेटा प्रणाली को प्राथमिकता में रखना जरूरी होगा। इस डेटा को इकट्ठा और साझा करने पर विशेष ध्यान देना लैंगिक समानता की दिशा में हो रही प्रगति की निगरानी एवं लक्षित प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण होगा।

दुनिया ने जिन संकट का सामना किया है, उसने हमें अपने सामान्य विकास लक्ष्यों को हासिल करने से पीछे धकेल दिया है- भारत की जी-20 अध्यक्षता हमें अगले चरण के विकास के लिए एजेंडा तय करने का अवसर प्रदान करती है। ऐसे मौके पर, यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम महिलाओं को अपने प्रयास के केंद्र में रखें ताकि एक बेहतर कल मिल सके।

वसुंधरा ने दिखाया भाजपा आलाकमान को दम

वसुंधरा राजे द्वारा यह एक तरह से सीधे भाजपा आलाकमान व अपने विरोधियों को चैलेंज के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि वसुंधरा राजे का जन्मदिन आठ मार्च को आता है। मगर उन्होंने चार दिन पूर्व ही शेखावाटी क्षेत्र के सालासर में अपने जन्मदिन के बहाने एक बड़ी जनसभा का आयोजन कर अपनी ताकत का अहसास करवाया है। वसुंधरा राजे ने अपना जन्मदिन मनाने के लिए उसी दिन का चयन किया जिस दिन भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा जयपुर में विधानसभा का घेराव किया जाना था। विधानसभा का घेराव करने के कार्यक्रम को प्रदेश भाजपा द्वारा प्रायोजित किया जा रहा था। उसी के समानांतर वसुंधरा राजे का कार्यक्रम करना कुछ अलग ही कहानी बयां करता है। 2018 का विधानसभा चुनाव हार जाने के बाद वसुंधरा राजे पार्टी में अलग-थलग पड़ गई है।

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है

राजस्थान में भाजपा की वरिष्ठ नेता व पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने चूरू जिले के सालासर बालाजी मंदिर क्षेत्र में अपने जन्मदिन मनाने के बहाने अपनी ताकत का एहसास कराया है। वसुंधरा राजे द्वारा यह एक तरह से सीधे भाजपा आलाकमान व अपने विरोधियों को चैलेंज के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि वसुंधरा राजे का जन्मदिन आठ मार्च को आता है। मगर उन्होंने चार दिन पूर्व ही शेखावाटी क्षेत्र के सालासर में अपने जन्मदिन के बहाने एक बड़ी जनसभा का आयोजन कर अपनी ताकत का अहसास करवाया है। वसुंधरा राजे ने अपना जन्मदिन मनाने के लिए उसी दिन का चयन किया जिस दिन भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा जयपुर में विधानसभा का घेराव किया जाना था। विधानसभा का घेराव करने के कार्यक्रम को प्रदेश भाजपा द्वारा प्रायोजित किया जा रहा था। उसी के समानांतर वसुंधरा राजे का कार्यक्रम करना कुछ अलग ही कहानी बयां करता है।

2018 का विधानसभा चुनाव हार जाने के बाद वसुंधरा राजे पार्टी में अलग-थलग पड़ गई है। पार्टी के बड़े कार्यक्रमों में भी वह अक्सर अनुपस्थित रहती है। प्रदेश भाजपा के संगठन में भी वसुंधरा विरोधियों की भरमार है। यहां तक कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया वसुंधरा विरोधी खेमे के माने जाते हैं। विद्यार्थी परिषद की पृष्ठभूमि से आए सतीश पूनिया राष्ट्रीय स्वयं संघ के नजदीकी है तथा संगठन में वर्षो से विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। जाट समाज से आने वाले पूनिया अपनी सौम्य छवि के कारण राजस्थान भाजपा में खासे लोकप्रिय भी है। इसी के चलते वसुंधरा राजे पूनिया को पसंद नहीं करती है।

इसी साल के अंत में राजस्थान विधानसभा के चुनाव होने हैं। ऐसे में वसुंधरा राजे को लगता है कि यदि उनकी इसी तरह चुनाव में भी उपेक्षा की गई तो उनका राजनीतिक प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा। इसी आशंका के चलते वह भाजपा की मुख्यधारा में आने के लिए पूरा जोर लगा रही है। सालासर का कार्यक्रम भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है। वसुंधरा राजे चाहती है कि अगले विधानसभा चुनाव में पार्टी आलाकमान उन्हें एक बार फिर नेता प्रोजेक्ट कर चुनाव लड़े। ताकि चुनाव में जीतने पर वह फिर से मुख्यमंत्री बन सके। मगर भाजपा आलाकमान वसुंधरा राजे को किसी भी परिस्थिति में नेता प्रोजेक्ट कर चुनाव नहीं लड़ना चाहता है। पार्टी आलाकमान द्वारा इस बात का खुलकर इजहार भी किया जाता रहा है। भाजपा आलाकमान चाहता है कि राजस्थान में नया नेतृत्व आगे आए। वसुंधरा राजे राजस्थान की राजनीति में लंबी पारी खेल चुकी है। ऐसे में उनके स्थान पर नए नेताओं को आगे करने से आने वाले समय में पार्टी को नया नेतृत्व मिलेगा। इसी सोच के तहत भाजपा आलाकमान प्रदेश में सतीश पूनिया, गजेंद्र सिंह शेखावत, कैलाश चौधरी, दीया कुमारी, जोगेश्वर गर्ग, राज्यवर्धन सिंह राठौड, रामलाल शर्मा, मदन दिलावर, अनिता भदेल, ओम बिरला, सीपी जोशी, स्वामी सुमेधानंद सरस्वती, अश्विनी वैष्णव जैसे नए व युवा चेहरों को आगे बढ़ा रहा है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे गुलाबचंद कटारिया को भी इसी सोच के तहत असम का राज्यपाल बनाया गया है। ताकि उनके स्थान पर उदयपुर डिवीजन में नया नेतृत्व उभर सके। जिस तरह से गुजरात विधानसभा चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी, उप मुख्यमंत्री रहे नितिन पटेल सहित बहुत से वरिष्ठ नेताओं के टिकट काटकर उनके स्थान पर नए लोगों को मौका दिया गया था। उसी तर्ज पर पार्टी आलाकमान राजस्थान में भी बदलाव करना चाहता है।

अगले विधानसभा चुनाव के दौरान जहां अधिक उम्र वाले विधायकों के टिकट कटना तय माना जा रहा है। उसके साथ ही बहुत से ऐसे नेताओं के टिकट भी कटेंगे जिनकी क्षेत्र में परफॉर्मेंस अच्छी नहीं मानी जा रही है। इसमें वसुंधरा राजे समर्थक बहुत से मौजूदा विधायकों के नाम भी शामिल है। इसी बात से वसुंधरा समर्थक चिंतित नजर आ रहे हैं। वसुंधरा राजे समर्थक भवानी सिंह राजावत का पिछले विधानसभा चुनाव में लाडपुरा से टिकट काटकर उनके स्थान पर कोटा की महारानी कल्पना देवी को भाजपा प्रत्याशी बनाया गया था। जो चुनाव भी जीत गयी थी। अब भवानी सिंह राजावत के पास चुनाव लड़ने के लिए कोई क्षेत्र नहीं है।

ऐसे में यदि वसुंधरा समर्थक अन्य नेताओं के टिकट भी कटते हैं तो उनके सामने चुनाव लड़ने का विकल्प ही नहीं बचेगा। वसुंधरा समर्थकों को पता है कि वह सब लोग चुनाव अपने दम पर नहीं बल्कि पार्टी के निशान पर जीतते हैं। ऐसे में यदि उनके पास पार्टी का निशान नहीं रहेगा तो चुनाव जीतने का तो सवाल ही नहीं होगा।

समर्थकों का दबाव व खुद को मुख्यधारा में शामिल करवाने के लिए ही वसुंधरा राजे ने अपने जन्मदिन के बहाने रैली कर पार्टी आलाकमान को खुला संदेश दिया है कि उनकी ताकत को कम कर नहीं आंका जाए। प्रदेश में आज भी उनका जनाधार बरकरार है। वसुंधरा राजे के कार्यक्रम में गंगानगर सांसद निहालचंद मेघवाल, चूरु सांसद राहुल कस्वां, जयपुर सांसद रामचरण बोहरा, झालावाड़ सांसद व उनके पुत्र दुष्यंत सिंह, टोंक सवाई माधोपुर सांसद सुखबीर जौनपुरिया, करौली-धौलपुर सांसद मनोज राजोरिया सहित करीबन दो दर्जन विधायक, कई पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक, पूर्व सांसद भी शामिल हुए।

हालांकि भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव व राजस्थान के प्रभारी अरुण सिंह भी जयपुर के कार्यक्रम में शामिल होने के बाद रात को सालासर पहुंचकर वसुंधरा राजे को उनके जन्मदिन की बधाई दी। अरुण सिंह का वसुंधरा के कार्यक्रम में पहुंचना भाजपा आलाकमान का डैमेज कंट्रोल करना ही था। भाजपा आलाकमान चाहता है कि चुनाव तक वसुंधरा राजे को ऐसे ही लटकाए रखा जाए। ताकि वह पार्टी से अलग जाकर कोई कदम नहीं उठा सके। मगर वसुंधरा राजे इस बात से पूरी तरह वाकिफ है कि उन्हें जो कुछ भी करना है चुनाव से पूर्व ही करना है। चुनाव की घोषणा होने के बाद उनके पास ज्यादा विकल्प नहीं बचेंगे। अपनी सालासर रैली में वसुंधरा राजे ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई, पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत की जमकर तारीफ की। भैरोंसिंह शेखावत को उन्होंने अपना राजनीतिक गुरु तक बताया जिनकी अंगुली पकड़ कर उन्होंने राजनीति में चलना सीखा।

रिजिजू का राहुल गांधी को पप्पू कहना

सनत जैन

केंद्रीय कानून मंत्री किरण रिजिजू ने कांग्रेस के बड़े नेता राहुल गांधी को एक बार फिर पप्पू कहकर संबोधित किया। इससे कांग्रेस के नेता भड़क गए हैं। कांग्रेस समाचार विभाग के प्रमुख जयराम रमेश ने इसके जवाब में कानून मंत्री किरण रिजिजू को कलंक कहा है। राहुल गांधी ने कैंब्रिज में जो भाषण दिया था, उसका वीडियो ट्वीट करते हुए उन्होंने लिखा था कि कांग्रेस के स्वघोषित राजकुमार ने सारी हदें लांघ दी हैं। यह आदमी भारत की एकता के लिए बेहद खतरनाक है। यह लोगों को भारत को बांटने के लिए उकसा रहा है। रिजिजू ने एक-दूसरे ट्वीट में लिखा था कि भारत के लोग जानते हैं कि राहुल गांधी पप्पू है। लेकिन विदेशियों को पता नहीं है कि राहुल गांधी हकीकत में पप्पू है। राहुल के फूलिश स्टेटमेंट पर प्रतिक्रिया देने की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा, भारत की छवि को बिगाड़ने के लिए वह इस तरीके के बयान दे रहे हैं।

इन दोनों ट्वीट के जवाब में कांग्रेस नेता भड़क कर पलटवार कर रहे हैं। जयराम रमेश की टिप्पणी तो ऊपर लिखी जा चुकी है। जिसमें उन्होंने रिजिजू को कलंक बताया। वहीं सोशल मीडिया विभाग के प्रभारी सुप्रिया श्रीनेत ने कानून मंत्री पर पलटवार करते हुए कहा, रिजिजू का अस्तित्व सिर्फ राहुल गांधी पर झूठे आरोप लगाने के कारण ही टिका हुआ है. इसलिए वह इस तरह के आरोप लगाते हैं।

भारत की राजनीति में जिस तरह से आरोप-प्रत्यारोप के दौर चल रहा है। उसमें शब्दों की मयार्दा भी कहीं से कहीं तक देखने को नहीं मिलती है। जितने नीचे जाकर गुंडागर्दी की भाषा में एक दूसरे के लिए शब्दों का उपयोग कर सकता है, वह कर रहा है। जिस तरीके की स्थितियां देखने को मिल रही हैं। उसके बाद ऐसा लगने लगा है कि जो सत्ताधारी दल है, वह अपने आप को सर्वोच्च बताने के लिए सुप्रीम कोर्ट को भी अपने अधीन बनाना चाहता है। हाल ही में उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने एक बयान दिया उसमें उन्होंने सरकार और सरकार के निर्णयों एवं संसद को सर्वोच्च बताया। संविधान केवल मार्गदर्शी है। इसका मतलब यही हुआ कि आपातकाल जब इंदिरा गांधी ने लगाया था, संसद ने उसकी मंजूरी दी थी। उस समय इंदिरा गांधी की सरकार का निर्णय सही थी। इंदिरा गांधी को हाईकोर्ट में गवाही के लिए नहीं जाना चाहिए था। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने जब इंदिरा गांधी का चुनाव अवैध घोषित किया था, वह भी गलत था। भाजपा नेता सत्ता के मद में कुछ भी बोल रहे हैं। धीरे-धीरे करके संविधान की सारी मयार्दा खत्म हो रही हैं। कहीं पर भी नैतिकता नहीं रह गई है। अब ऐसा लगने लगा है कि अब हम गुंडों के राज में रह रहे हैं। राजनेताओं की भाषा गुंडों वाली ही है। गैंगवार की तरह राजनीतिक दल एक दूसरे के ऊपर हमलावर हैं। वह अपने तीखे हमले से सामने वाले को हर तरह से प्रताड़ित करने ओर उसे भयभीत करने का प्रयास कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों से कांग्रेस इस मामले में कुछ मयार्दा का पालन करती हुई दिखती थी। जिसके कारण भाजपा के नेता लगातार आक्रमक होते रहे। लेकिन लगता है कि अब कांग्रेस ने भी समझ लिया है, कि गुंडागर्दी की लड़ाई गुंडागर्दी से ही लड़ी जाएगी। इसके लिए वह भी कोई ऐसा मौका नहीं छोड़ रही है, जिसमें उसे ऐसा लगे कि उसने क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं दी है। कांग्रेस भी अब भाजपा और संघ के पुराने मुद्दों पर उनको घेर रही है। आम जनता भी कहने लगी है, कि गुंडे का अस्तित्व उसकी आक्रामकता के कारण होता है। कुछ इसी तरीके की स्थिति अब कांग्रेस ने भी बिना हानि लाभ के भाजपा को उसी तरह से जवाब देना सीख लिया है। जिस तरह से भाजपा के नेता वार करते हैं। कहा जाता है सत्ता, स्त्री और धन उन्हीं हाथों में सुरक्षित रहता है, जहां आक्रमकता बनी रहती है। भीरु और डरपोक लोगों के हाथ में ना तो सत्ता सुरक्षित रहती है। नाही स्त्री और ना ही धन। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का यह आक्रमक स्वरूप जनता को विश्वास दिला पाने में कामयाब हो रहा है। कांग्रेस आम जनता की लड़ाई लड़ने में सक्षम है।

संक्षिप्त खबरें

युवक ने खाया कीटनाशक की दवा, इलाज के दौरान हुई मौत

गोपालगंज ।जिले के मांझागढ थाना क्षेत्र के गुलाम हुसैन टोला गांव में एक युवक के पेट में दर्द होने पर युवक ने गलती से कीटनाशक की दवा खा लिया।कीटनाशक की दवा खाने के बाद युवक की स्थिति खराब हो गई। जिसके बाद स्वजनों ने इलाज के लिए युवक को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया।जहां इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई।विदित हो कि शुक्रवार को मांझागढ थाना क्षेत्र के गुलाम हुसैन टोला गांव के इरफान अली का पुत्र अब्दुल कलाम 40 वर्षीय के पेट में अचानक दर्द होने लगी।दर्द होने पर युवक ने घर में रखे कीटनाशक की दवा को दर्द की दवा समझ कर गलती से खा लिया। जिसके बाद युवक की हालत बिगड़ने लगी, युवक की हालत बिगड़ते देख स्वजनों ने युवक को इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से चिकित्सकों ने बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल में भेज दिया। जहां युवक का इलाज के दौरान मौत हो गई।घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक का शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। वहीं घटना के बाद स्वजनों में कोहराम मच गया।मृतक मांझा बाजार में सिलाई का काम करता है। मृतक के दो पुत्र हैं।

फॉर्म अप्लाई करने गई युवती का अपहरण

गोपालगंज।फार्म अप्लाई करने के लिए विजयीपुर थाने के मुशहरी बाजार गई भोरे थाने के एक गांव की युवती का अपहरण कर लिया गया। मामले को लेकर युवती की मां ने अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है।कहा है कि 3 मार्च को उनकी बेटी फॉर्म अप्लाई करने के लिए मुसहरी जाने की बात करते हुए घर से गई थी।लेकिन देर रात तक लौट कर नहीं आई।काफी खोजबीन के बाद भी जब उसका पता नहीं चला तब युवती की मां ने अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई।पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पति-पत्नी और बेटी को मारपीट कर सोने की चेन छीने

गोपालगंज ।जिले के भोरे थाने के शाहपुर गांव की एक महिला, उसके पति तथा पुत्री को उसी गांव के कुछ लोगों ने शराब के नशे में आकर गाली गलौज और मारपीट करते हुए सोने की चेन छीन लिया।मामले को लेकर गांव के रमेश यादव की पत्नी सावित्री सेवी ने अपने ही गांव के जितेंद्र चैबे, अतुल चैबे, सुनील चैबे, मुन्ना चैबे, पार्वती देवी, रीना देवी, कुमकुम देवी और दुर्गावती देवी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। कहा है कि वह अपने दरवाजे पर थी, तभी सभी आरोपित शराब के नशे में घर में आकर गाली गलौज करने लगे।मना करने पर मारपीट की घटना को अंजाम दिया गया।बचाने के लिए आयी बेटी फूल कुमारी देवी तथा पति रमेश यादव को भी मारपीटकर घायल कर दिया गया।

महिला के साथ की छेड़खानी

गोपालगंज ।जिले के भोरे थाने के एक गांव की महिला के साथ उसी के गांव के युवक ने छेड़खानी की है। मामले को लेकर पीड़िता ने युवक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। कहा गया है कि पीड़िता अपने दरवाजे पर झाड़ू लगा रही थी, तभी उसी के गांव का राजा मद्धेशिया आया और गलत नियत से छेड़खानी करने लगा।विरोध करने पर मारपीट कर घायल कर दिया तथा जाति सूचक शब्द कह कर प्रताड़ित भी किया।

शराब के नशे में सगे भाइयों को मारपीट कर किया घायल

गोपालगंज।जिले के भोरे थाने के जैतपुरा गांव में सगे भाइयों को शराब के नशे में मारपीट कर घायल कर दिया गया।मामले को लेकर पीड़ित ने थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है।बताया जाता है कि गांव के बनारसी गोंड़ अपने छोटे भाई काशी गोंड़ के साथ दरवाजे पर बैठकर बातचीत कर रहे थे।इसी दौरान उसी गांव के राजकुमार गोंड़ तथा नंदू गोंड़ लाठी, डंडा, भाला और फरसा से लैस होकर आए और मारपीट की घटना को अंजाम दिए।

शराब के नशे में एक गिरफ्तार

गोपालगंज ।जिले के भोरे थाने की पुलिस ने शराब के नशे में एक युवक को गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार युवक धरहरा गांव का मोहन ठाकुर है।बताया जाता है की जांच में शराब पीने की पुष्टि होने के बाद शुक्रवार को युवक को बांड भरने के लिए उत्पाद स्पेशल कोर्ट में भेज दिया गया।

लामिचैर में सामूहिक विवाह आज

गोपालगंज प्रातः किरण संवाददाता जिले के भोरे प्रखंड के लमीचैर पश्चिम टोला स्याही नदी के तट पर बाबा भूतनाथ शांति सेवा संस्थान लामीचैर के तत्वावधान में शनिवार को होनेवाले सामूहिक विवाह की सारी तैयारियां पूरी कर ली गयी है। इस बार 16 जोड़ों का विवाह होगा। उक्त जानकारी कार्यक्रम के आयोजक डॉ शेखर रंजन मल्लिक उर्फ बंगाली बाबू एवं जनार्दन यादव ने संयुक्त रूप से दी है।

रंग व गुलाल से सरोबार हुआ गांव से लेकर शहर जिले मे हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी होली

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

प्यार, प्रेम और रंगों का त्योहार होली पूरे जिले में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बच्चे-बुढे, युवक-युवतियाँ रंगो में सरोबार दिखे। होली की खुमारी सुबह से ही लोगों पर छाने लगी थी। गली-मुहल्लों में छोटे से लेकर बडे तक हाथो में रंग लिये टोलियो के दौरान घुमते नजर आये। एक दुसरे पर रंग डालते हुए खुशीया बॉट रहे थे। छिटपुछ घटनाओं को छोड़कर नगर तथा आसपास क्षेत्रो में होली का त्योहार शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। पारम्परिक होली गीत को गाते हुए गांवो में सबके दरवाजे पर साज बाज के साथ खुशीया बॉटते नजर आ रहे थे। रंगो के त्योहार होली इसबार जमकर गांव से शहर तक मनाया गया। वैसे तो पुलिस ने शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए पूर्व से चिन्हित 300 स्थानो पर दण्डाधिकारी व पुलिस पदाधिकारियो की तैनाती कर रखी थी। वही सभी थानाध्यक्षो के द्वारा शांति समिति की बैठक कर हुडदंगीयो पर कारवाई करने की चेतावनी दे दी गयी थी। जिसके बाद हुडदंगी कही भी नजर नही आये। गांवो में जहॉ युवको तथा पुरूषो की टीम होली गीत में मग्न नजर आ रहे थे। वही युवतीयो का टीम हाथ में गुलाल लिये हर घरो के अंदर दस्तक देकर महिलाओ को गुलाल लगाकर अपना खुशी इजहार कर रही थी। मजे की बात तो यह रही कि अधिकांश मुहल्ले और टोलो में युवको ने कपडा फाड होली जमकर मनाया। कई स्थानो पर प्रशासन के हिदायत दिये जाने के बाद भी युवक एक दुसरे पर किचड व मिट्टी फेकते देखे गये। मांझा संवाददाता के अनुसार रंगो की होली हर गांवो में हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी। सुबह से रंगो में डुबते देखे गये। वही दोपहर के बाद एक दुसरे से गले मिलाकर गुलाल व अबीर लगाकर भाईचारा का प्रतिक दिखाया गया। हर गांव में ढोलक व झाल लेकर फाग गीत गाते हुए टोलिया गुजर रही थी। बरौली संवादाता के अनुसार प्रखण्ड में होली हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी। वहीं पुलिसकर्मियो ने भी लोगों के बीच जमकर गुलाल उड़ाया। फुलवरिया संवाददाता के अुनसार पूरे प्रखण्ड में होली महापर्व धुमधाम के साथ मनायी गई। बच्चे-बुढे सभी ने इसबार होली का आनंद उठाया। कई स्थानों पर होली मिलन समारोह का आयोजन भी किया गया। उचकागांव संवाददाता के अनुसार होली महापर्व पूरे प्रखंड में आपसी प्रेम और प्यार के बीच शांतिपूर्ण मनायी गयी। जनप्रतिनिधि और पुलिस प्रशासन ने भी लोगों के बीच जमकर गुलाल उडाये। युवतियो ने अपने-अपने घरो के छत पर खड़े होकर लोगों पर गुब्बारो से भरी रंग फेंककर होली मनायी। हथुआ संवाददाता के अनुसार मीरगंज शहर में जमकर गुलाल उडाये गये। वही सडक पर गुजरने वाले हर लोगो पर जमकर रंग व अबीर फेंके गये। इसी प्रकार का नजारा हथुआ बाजार सहित सभी गांवो में देखा गया।

दिन में सदका-खैरात इबादत पूरी रात

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

गुनाहों से निजात दिलाने की रात शब-ए-बरात को लोगों ने न सिर्फ अपने गुनाहों से तौबा की, बल्कि पूरी रात इबादत में गुजारी। घरों एवं मस्जिदों में कुरान की तिलावत हुई। साथ ही लोगों ने पूर्वजों की कब्र पर जाकर उनकी बख्शिश के लिए फातिहा पढ़ा। शब ए बरात को लेकर खास तैयारी की गई थी। मस्जिदों एवं बुजुर्गों की दरगाहों को रंग बिरंगे लाइट से सजाया गया था। मंगलवार की सुबह से ही घरों में लजीज पकवान और तरह-तरह के हलवे बनाए जाने लगे। शाम को अर्स की नमाज फातिहा दिलाया गया और उसे गरीबों में तकसीम किया गया। इसके बाद शुरू हुआ इबादत का सिलसिला। मंगलवार की रात से बुधवार की तड़के तक इबादत का सिलसिला चलता रहा। ऐसा माना जाता है कि अल्लाह इस रात को फरियाद करने वालों के सारे गुनाहों को माफ कर देते हैं। साथ ही नफिल नमाज का सबाब दोगुना कर देते हैं। साथ ही कुरान की तिलावत करने वालों पर अल्लाह की खास रहमत होती है। शहर के प्रमुख मस्जिदों में इबादत व दरगाहों और कब्रिस्तानों पर पूरी रात फातिहा व जियारत का दौर चला। इस मौके पर मस्जिदों, दरगाहों को रोशनी से सजाया गया था। शहर के दरगाह मोहल्ले के अलावा जिले के तमाम दरगाह व कब्रिस्तानों जहां लोगों के पूर्वज दफन हैं, वहां पूरी रात चहल पहल का नजारा दिखा। शब-ए-बरात को देखते हुए कई लोगों ने मस्जिदों में पहुंचकर कुरान की तिलावत की तथा गुनाहों से तौबा किया।

संदीप गिरी बने भाजपा के जिलाध्यक्ष, नेताओं ने दी बधाई

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

संदीप गिरी उर्फ मंटू गिरी को भाजपा का नया जिलाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। गोपालगंज विधानसभा के लछवार पंचायत के निवासी संदीप गिरी उर्फ मंटू गिरी वर्तमान में भाजपा के जिला महामंत्री थे। संदीप गिरी को भाजपा जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर हर ओर खुशी की लहर है। तमाम सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से उन्हें बधाई देने वालो का तांता लगा हुआ है। जिला भाजपा कार्यालय पर स्वागत समारोह आयोजित कर नए जिलाध्यक्ष का स्वागत और अभिनंदन किया गया। नया अध्यक्ष मनोनीत होने पर निवर्तमान जिलाध्यक्ष विनोद कुमार सिंह, एमएलसी राजीव कुमार उर्फ गप्पू सिंह, जनक राम, प्रदेश उपाध्यक्ष मिथिलेश तिवारी, विधायक रामप्रवेश राय, सदर विधायक कुसुम देवी, राजू चैबे, लखन तिवारी, चंद्रमोहन पांडेय, राजेश सहनी, राकेश सिंह, चितलाल प्रसाद, दीपक कुमार दीपू, जयहिंद प्रसाद, चंदन तिवारी आदि ने प्रदेश एवं राष्ट्रीय नेतृत्व को बधाई दी है। जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर संदीप गिरी उर्फ मंटू गिरी ने कहा कि भाजपा संगठन ने मुझे जो जिला अध्यक्ष का दायित्व सौंपा है उस पर मैं खरा उतरने का प्रयास करूंगा। उन्होंने कहा कि मैं जिले के सभी नेताओं एवं कार्यकताओं के साथ प्रदेश नेतृत्व का ऋणी हूं जो मुझे इस मुकाम तक पहुंचाया। सभी कार्यकर्ता के सहयोग से प्रत्येक बूथ को मजबूत करके हर घर में भाजपा को पहुंचाना है।

गोपालगंज में बकरी के विवाद को लेकर भिडे दो समुदाय

विजयीपुर थाने के रामपुर गांव की घटना, पुलिस ने पांच लोगो को किया गिरफ्तार

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के विजयीपुर थाने के रामपुर गांव में बकरी के विवाद को लेकर दो समुदाय के लोग आपस में भीड गए। इस दौरान एक समुदाय के लोगो ने दुसरे समुदाय के युवक के घर पर हमला बोल दिया। जिसके बाद गांव में तनाव का माहौल व्याप्त हो गया। सूचना पाकर पंहुची पुलिस ने दोनो समुदाय के पांच लोगो को गिरफ्तार कर लिया। वही गांव में तनाव को देखते हुए पुलिस की टीम फ्लैग मार्च व कैंप कर रही है। बताया जाता है कि रामपुर गांव में एक समुदाय के युवक की बाइक से बकरी को टक्कर लग गयी। जिसके बाद दुसरे समुदाय के लोगो ने युवक के घर पर हमला बोल दिया। जिसके बाद पूरे गांव में तनाव का माहौल हो गया। सूचना पाकर पंहुची पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुए एक समुदाय से तीन व दुसरे समुदाय से दो लोगो को गिरफ्तार कर लिया। वही तनावपूर्ण माहौल को देखते हुए भारी संख्या में पुलिस बल की तैनाती की गयी है। इसके साथ ही गांव में पुलिस शांति समिति की बैठक व फ्लैग मार्च कर लोगो से शांति बनाये रखने की अपील कर रही है। एसपी के निर्देश पर पुलिस दोनों समुदाय के घर पर होली की रात्रि से ही कैम्प कर रही है। गुरुवार को अहियापुर पंचायत भवन पर दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों जनप्रतिनिधियों के साथ प्रशासन ने शांति समिति की एक बैठक किया। बैठक मेंएसपी स्वर्ण प्रभात पहुंच कर दोनों पक्षों की बात को सुनने के बाद अपने अधिकारियों के साथ बैठक किया। जहाँ हथुआ डीएसपी नरेश कुमार, मीरगंज पुलिस निरीक्षक, विजयीपुर बीड़ीओ, सीओ तथा थानाध्यक्ष के साथ बैठक कर आवश्यक निर्देश दिए। एसपी ने कहा के इस मामले में जो भी दोषी होगें उस पर आवश्यक करवाई की जायेगी।

फुलवरिया में रंगों का त्योहार होली व शब ए बारात शांतिपूर्ण संपन्न

होली के रंगों में सराबोर हुआ गांव किसी भी तरह की अप्रिय घटना की सूचना नहीं

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

होली के रंगों में पूरा क्षेत्र सराबोर हो गया था। वही मुस्लिम समुदाय का शब ए बारात व रंगों का त्यौहार होली शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया। पूरे क्षेत्र में किसी भी तरह का अप्रिय घटना की सूचना नहीं है। हालांकि जिला व अनुमंडल प्रशासन द्वारा प्रतिनियुक्त किए गए दंडाधिकारी अपने-अपने प्रतिनियुक्ति स्थल पर पुलिस बल के साथ तैनात देखे गए।

सीओ खुशबू खातून, बीडीओ अजीत कुमार रौशन, थानाध्यक्ष अब्दुल मजीद मजीद, ओपी अध्यक्ष अशोक कुमार पुलिस बल के साथ क्षेत्र का पेट्रोलिंग करते नजर आए. लोग अपने-अपने घरों पर परिजनों के साथ रंगों का त्योहार होली मनाने में मग्न रहे। गणमान्य लोग विभिन्न समुदाय व जाति धर्म के लोगों के घर पर जाकर रंग गुलाल अबीर लगाते देखे गए। साथ ही एक दूसरे को होली का मुबारकबाद भी दिए। प्रखंड प्रमुख मुन्नी खातून के प्रतिनिधि मोहम्मद सरफराज द्वारा आयोजित मीठा भोजन में पंचायत क्षेत्र के सभी समुदाय व जाति के लोग शामिल होकर होली के अवसर पर बने व्यंजन का स्वाद लिए।

ग्राम पंचायत राज कररिया उर्फ बहरी की मुखिया नगमा खातून के प्रतिनिधि फिरोज अंसारी, कोयलादेवा मुखिया सीता देवी के प्रतिनिधि रमेश सिंह कुशवाहा, पैक्स के मंडल अध्यक्ष राजेश मिश्र उर्फ बबलू मिश्र, उप प्रमुख रंजना कुमारी तिवारी के प्रतिनिधि विपिन तिवारी अपने-अपने टोली के साथ पूरे गांवों में घूम कर एक दूसरे को होली की शुभकामनाएं दिए।

दुर्घटना में मौत मामले में बाइक चालक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

गोपालगंज। बुधवार की देर शाम को थाने के कल्याणपुर गांव के पास सड़क दुर्घटना में हुई अधेड़ बाइक चालक की मौत मामले में मृतक के भाई और गोपालपुर थाने के विक्रमपुर गांव के निवासी बृजकिशोर शाह ने भोरे थाने के कल्याणपुर गांव के बाइक चालक रंजय पटेल के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है।कहा है कि उनके भाई हीरालाल साह अपने नाबालिक पुत्र अंकित कुमार तथा रिश्तेदार रामनगर गांव के छबीला शाह के साथ बुधवार की देर रात को बाइक से अपने घर विक्रमपुर लौट रहे थे।तभी रास्ते में कल्याणपुर गांव के पास उसी गांव के रंजय पटेल ने लापरवाही और तेजी से बाइक चलाते हुए आकर हीरालाल साह की बाइक में टक्कर मार दिए, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

भोरे में भारी मात्रा में शराब के साथ तीन गाड़ी जब्त, चार गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज। जिले के भोरे पुलिस द्वारा होली को लेकर शराब के खिलाफ चलाये गये अभियान में भारी मात्रा में शराब बरामद किया गया। इस दौरान जहां चार कारोबारी गिरफ्तार किये गये, वहीं तीन पुलिस को चकमा देकर फरार होने में कामयाब रहे।

इस दौरान पुलिस ने दो बाइक के साथ एक टेंपू को जब्त कर लिया। मामले में उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया। पुलिस ने पहली और दूसरी कार्रवाई जगतौली ओपी के पास की। जहां गुप्त सूचना के आधार पर पैदल शराब लेकर आ रहे मीरगंज थाना क्षेत्र के दूबे सरीसवां के उमेश कुमार को 24 बोतल शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। यह कार्रवाई अभी चल ही रही थी कि इसी बीच दो बाइक सवार वहां पहुंचे, जिनकी तलाशी लेने पर चार बोतल विदेशी शराब बरामद किया गया। इस दौरान बाइक को जब्त करते हुए फुलवरिया थाना क्षेत्र के राजपुर गांव के धनंजय साह एवं नीलेश यादव को गिरफ्तार कर लिया। तीसरी कार्रवाई महरादेउर में हुई। जहां पुलिस को देखकर एक कारोबारी बाइक छोड़कर फरार हो गया। उसके बाइक से 27 लीटर चुलाई शराब बरामद किया गया। फरार हुए व्यक्ति की पहचान खलवां गांव बिन टोली के गुलाब बिन के रूप में की गई। चैथी और पांचवी कार्रवाई बलवां मुसहर टोली में नवाब मंडल और हृदयानी मंडल के घर पर हुई। दोनों के घर से चार-चार लीटर शराब बरामद किया गया। दोनों पुलिस को चकमा देकर फरार हो गये। आखिरी कार्रवाई थाना क्षेत्र कुकुर भुंक्का मोड पर की गई। जहां एक टेंपू की तलाशी लेने पर उसमें से 17 बोतल शराब बरामद किया गया। इस दौरान टेंपू चला रहे भोरे उत्तर टोला को सुचिंद्र पटेल उर्फ भोला पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया।

फुलवरिया में पांच दिनों बाद तालाब से किसान का शव हुआ बरामद

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के फुलवरिया थाना क्षेत्र के इमुलिया माझा गांव के एक प्राचीन तालाब से पांच दिनों बाद एक वृद्ध किसान का शव बरामद हुआ। किसान का शव बरामद होते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक किसान इमूलिया मांझा गांव के निवासी स्वर्गीय चंद्रदीप चैधरी का 70 वर्षीय वृद्ध पुत्र बद्री चैधरी बताए जाते हैं। मृतक के दिव्यांग पुत्र बलिराम चैधरी ने बताया कि गत रविवार की अहले-सुबह जब मैं सोकर उठा तो देखा कि मेरे पिता बिस्तर से गायब हैं। जिसके बाद उनका काफी खोजबीन किया गया, लेकिन कहीं कोई सुराग नहीं मिल सका। जिसके बाद घर के बगल में तालाब के पास उनका लूंगी, लाठी तथा कुर्ता दिखाई दिया। जिसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही अंचलाधिकारी खुशबू खातून, बीडीओ अजीत कुमार रोशन तथा थानाध्यक्ष अब्दुल मजीद पहुंचकर स्थानीय गोताखोरों से काफी खोजबीन कराया। परंतु तालाब में कहीं से कोई उनका सुराग नहीं मिल पाया। शुक्रवार की दोपहर उनका फुला हुआ शरीर तलाक के ऊपर पानी में तैरता हुआ दिखाई दिया। जिसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष अब्दुल मजीद वह थाने में पदस्थापित एसआई धनंजय कुमार सिंह के अलावे प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि मोहम्मद सरफराज पहुंचे। जहां शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल गोपालगंज भेज दिया। वहीं मृतक बद्री चैधरी का शव देखते ही वृद्ध पत्नी लालमति देवी, पुत्री विगन देवी, मीना देवी तथा दिव्यांग पुत्र बलिराम चैधरी का रो-रो कर बुरा हाल है। किसान का शव मिलते ही गांव में मातमी सन्नाटा पसर गया। परिजनों ने बताया कि वह मिलनसार व्यक्ति थे।

श्रीपुर में दो बाइकों की आमने-सामने की टक्कर में पांच घायल, हालत गंभीर

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया थाने के सहायक श्रीपुर ओपी क्षेत्र के मिश्र बतरहां बाजार-श्रीपुर कांटा बाजार मुख्य पथ के नवका मलाही टोला गांव के समीप दो बाइकों की आमने-सामने की जोरदार टक्कर में पांच लोग खून से लहूलुहान हो गए। सड़क के किनारे खून से लथपथ घायल मदद की राह में तड़प रहे थे। राहगीरों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही श्रीपुर ओपी अध्यक्ष अशोक कुमार व थाने में पदस्थापित एसआई रमेश दास पुलिस बल के जवानों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। जहां सभी घायलों को आनन-फानन में ग्रामीणों की मदद से स्थानीय मरछियां देवी रेफरल अस्पताल फुलवरिया में दाखिला कराया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए सभी घायलों को सदर अस्पताल गोपालगंज रेफर कर दिया। जहां सदर अस्पताल के चिकित्सकों ने तीन घायलों की स्थिति नाजुक देख बेहतर इलाज के लिए गोरखपुर मेडिकल हॉस्पिटल के लिए रेफर कर दिया। जहां इलाज जारी है। घायलों में हथुआ थाना क्षेत्र के सिंगहां गांव के निवासी हरकेश चैहान का पुत्र कुंदन कुमार चैहान के रूप में पहचान की गई है, जबकि दूसरे बाइक पर फुलवरिया थाना क्षेत्र के जटहां गांव के निवासी कुंदलाल सिंह का पुत्र धर्मेंद्र कुमार सिंह उनकी पत्नी संजू देवी, पुत्री संजना कुमारी तथा पुत्र प्रिंस कुमार के रूप में पहचान की गई है। परिजनों ने बताया कि धर्मेंद्र कुमार सिंह अपने घर से कटेया थाना क्षेत्र के चैतरवा गांव में अपने ससुराल पूरे परिवार के साथ जा रहे थे। इसी बीच दो बाइकों की टक्कर में सभी लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। श्रीपुर ओपी में पदस्थापित एसआई रमेश दास ने बताया कि पांचों घायलों में से तीन की स्थिति नाजुक बनी हुई है। दुर्घटना के बाद घायलों को अस्पताल पहुंचा दिया गया। उसके बाद घायलों के परिजनों को दुर्घटना की सूचना दी गई। जहां परिजन पहुंचकर अपनी देखरेख में बेहतर ढंग से चिकित्सकों से इलाज करा रहे हैं। समाचार प्रेषण तक इस दुर्घटना के बाद थाने में कोई लिखित शिकायत घायलों के द्वारा नहीं दर्ज कराई गई थी।

दो बाइकों की सीधी टक्कर में एक की मौत, तीन जख्मी

गोपालगंज। जिले के भोरे थाना क्षेत्र के कल्याणपुर हाई स्कूल के पास हुस्सेपुर- कल्याणपुर मुख्य मार्ग पर दो बाइकों के बीच सीधी टक्कर हो गई। इस हादसे में एक अधेड़ की मौत हो गयी। जबकि तीन लोग घायल हो गए। आसपास के लोगों की मदद से सभी घायलों को इलाज के लिए भोरे रेफरल अस्पताल लाया गया। जहां से तीनों घायलों को रेफर कर दिया गया। घायलों में दो की स्थिति नाजूक बनी हुई है। बताया जाता है कि गोपालपुर थाना क्षेत्र के विक्रमपुर गांव निवासी हीरालाल साह अपने पुत्र अंकित साह के साथ होली के दिन भोरे थाना क्षेत्र के तिवारी बगहवां में अपने रिश्तेदार के घर गये थे। देर शाम वो अपने घर लौट रहे थे। अभी वे कल्याणपुर हाई स्कूल के पास पहुंचे थे कि विपरीत दिशा से आ रही बाइक से उनकी सीधी टक्कर हो गयी। इस घटना में हीरालाल साह ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। जबकि उनके पुत्र अंकित साह और रामनगर गांव के छबीला साह भी घायल हो गये। वहीं दूसरी बाइक पर सवार कल्याणपुर के रंजन पटेल बुरी तरह घायल हो गये। आसपास के लोगों ने घटना की जानकारी पुलिस को देते हुए, तीनों घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

होली खेलने के दौरान दो पक्षों में झडप, एक दर्जन घायल, सभी घायलों को सदर अस्पताल में कराया गया भर्ती

सिधवलिया थाने के बुचेया गांव की घटना, दोनो पक्षों से आठ लोग किए गए गिरफ्तार, पुलिस कर रही कैंप

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के सिधवलिया थानाक्षेत्र के बुंचेया में होली खेलने के दौरान दो पक्षों में हिंसक झडप हो गयी। झडप के दौरान दोनो पक्षों से करीब एक दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगो की मदद से घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया।

वही सूचना पाकर पंहुची पुलिस ने दोनो पक्षों से आठ लोगो गिरफ्तार कर लिया है। गांव में तनाव को देखते हुए बीएमपी के अलावे चार थानों की पुलिस कैंप कर रही है। बताया जाता है कि बुचेया गांव में होली पर्व के दौरान रंग खेलने को लेकर दो पक्ष आपस में भिड गए। देखते हुए देखते दोनो पक्षों में हिंसक झडप शुरू हों गयी। इस दौरान दोनो पक्षो से करीब एक दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस मामले को लेकर दोनों पक्षो से एक दूसरे पर 27 लोगो के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। एक पक्ष के अविनाश कुमार ने 17 लोगो के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करायी है। वही दुसरे पक्ष से संतोष कुमार ने दस लोगो के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करायी है।

दोनो पक्ष के आठ लोगो को पुलिस ने किया गिरफ्तारः प्राथमिकी दर्ज होने के बाद पुलिस ने दोनो पक्षो के चार, चार लोगों को गिरफ्तार किया है। एक पक्ष के हिम्मतपुर गांव के बलवंत सिंह, बुंचेया कलीटोला गाँव के विवेक कुमार उर्फ मंजीत सिंह, अविनाश कुमार उर्फ राजन सिंह तथा अंकित कुमार को गिरफ्तार किया गया है। जबकि दूसरे पक्ष से बुंचेया कलीटोला गाँव के दिनेश राय, नन्दजी राय, संतोष कुमार तथा राजेश राय को गिरफ्तार किया गया है। बाकी अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है।

एसपी ने थाने पहुंच मामले की ली जानकारीः घटना के बाद गुरुवार को जिले के एसपी स्वर्ण प्रकाश सिधवलिया थाने पहुंचे और घटना की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने कई बिंदुओं पर थानाध्यक्ष धनंजय कुमार को दिशा निर्देश दिया। उन्होने बताया कि होली खेलने के को लेकर विवाद नही हुआ है। बल्कि बाइक की चाबी छीनने को लेकर दो पक्षों में विवाद हुआ है। फिलहाल स्थिति सामान्य है।

एसडीपीओ और डीसीएलआर ने प्रबुद्धजनों के साथ किया शांति समिति की बैठकः घटना के बाद सिधवलिया के गोपालजी मैरेज हॉल में एसडीपीओ संजीव कुमार तथा डीसीएलआर ने गाँव के प्रबुद्ध व्यक्तियों तथा दोनो पक्षो के नाते, रिश्तेदारों के साथ शांति समिति की बैठक की। बैठक में घटना की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए अपने, अपने मत रखे गए तथा सभी पक्षो को शांति बनाकर आपसी भाईचारे से रहने की अपील की गई। बैठक में जिला परिषद सदस्य ज्योति भूषण कुँवर उर्फ प्रिंस नेता, त्रिलोकी प्रसाद, विरुलाल मांझी, विनोद मांझी, लालबदन राय, भानुप्रताप सिंह, सुरेश सिंह, रामा पहलवान, प्रभुनाथ गुप्ता, चंद्रिका राय, डॉ गणेश राय सहित सिधवलिया, महम्मदपुर तथा बैकुंठपुर के थानाध्यक्ष उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

पूर्णरूपेण शराबबंदी कराने को लेकर आगजनी कर घंटों मुख्य सड़क मार्ग को बाधित कर किया प्रदर्शन

भागलपुर। इन दिनों पूरे बिहार में शराबबंदी है फिर भी शराब हर जगह मिल जाते हैं, उक्त मामले को लेकर स्थानीय पर्वती इलाके के युवाओं ने एक जुट होकर विश्वविद्यालय के मुख्य सड़क मार्ग पर आगजनी कर घंटो जामकर प्रदर्शन किया है। इस दौरान प्रदर्शनकारियों का कहना था कि शराबबंदी पूर्णरूपेण हो शराब बंदी होने के बावजूद जिले के कई क्षेत्रों में मोटी रकम कमाई के साथ शराब उपलब्ध कराने के साथ लोगों को मिल रही हैं। जिसके चलते हम लोग काफी हलकान वह परेशान है, साथ ही उन्होंने विश्वविद्यालय थाना प्रभारी को भी निशाना साधते हुए कहा कि इनकी भी मिली भगत है, जिसके चलते इस इलाके में शराब मिल रही है। उन्हें जल्द से जल्द बर्खास्त किया जाए। वही प्रदर्शन करने वाले लोगों को लेकर जिले के कई थाना पुलिस पदाधिकारी के साथ साथ अन्य पुलिस अधिकारियों की टीम मौके पर पहुंच कर आक्रोशित भीड़ को शांत करने की कवायद में जुट गयी है।

भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित जिला अध्यक्ष संतोष साह को केंद्रीय मंत्री चौबे ने दी बधाई व शुभकामनाएं

भागलपुर। भारतीय जनता पार्टी 2024 और 25 के चुनावी रणनीति को अभी से सुदृढ़ करना शुरू कर दिया है। जिसको लेकर भारतीय जनता पार्टी बिहार प्रदेश के 48 संगठन के जिलों के लिए कई कार्यकताओं को जिला अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। जिसकी मुहर लग गई है, वही भागलपुर से संतोष साह को इसका भार दिया गया है, और उनसे उम्मीद जताई जा रही है कि जल्द से जल्द पार्टी को और मजबूत करें, और आगामी 2024 और 25 में भारतीय जनता पार्टी भारी बहुमत से भागलपुर के सीट पर जीत को सुनिश्चित करें। इसको लेकर केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे ने भागलपुर के नवनिर्वाचित जिला अध्यक्ष संतोष साह को फूल माला पहनाकर व पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया है। इस दौरान उन्होंने कहा यह जिलाध्यक्ष बचपन से अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित है, यह शुरू से आरएसएस से जुड़े हुए हैं। इसनके द्वारा अपनी पार्टी के लिए मजबूत हिस्सा भी रहा है और उम्मीद है की अपनी पार्टी के लिए यह अच्छा करेंगे।

हुसैनाबाद के एक युवक की उसके ससुराल में हुई संदिग्ध हालत में मौत

भागलपुर। मौजाहिदपुर थाना क्षेत्र के हुसैनाबाद के रहने वाले मोनू की मौत संदिग्ध अवस्था में उसके ससुराल बांका के अमरपुर में हो गई। मृतक युवक होली के एक दिन पूर्व होली मनाने के लिए अपने ससुराल अमरपुर गया हुआ था। वही कल ससुराल में डोरा पर्व को लेकर पूरा परिवार जुटा हुआ था, इसी दौरान शाम को घर के सभी लोगों ने एक साथ भोजन में मीट और चावल खाने पीने के बाद सोने चले गए थे। इसी क्रम में मोनू पहले सौचालय गया और वहां से आने पर उसके गर्दन में और सर में दर्द होने के साथ-साथ उसे बेचैनी होने लगी और कुछ देर के बाद ही उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने के बाद हुसैनाबाद से भाई और परिजन अमरपुर पहुंचे, और वहां से युवक के शव को लेकर भागलपुर पहुंचे। वही मौत को लेकर आसपास के लोग कई तरह के सवाल खड़े कर रहे हैं। वही परिजनों का कहना है कि किसी तरह की कोई बात नहीं थी।

बिहार के 40 सीट पर खिलेगा कमल : चौबे

भागलपुर। केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे भागलपुर पहुंचने पर प्रेसवार्ता के दौरान उन्होंने महागठबंधन को निशाना बनाते हुए जमकर बरसे है, केंद्रीय मंत्री चौबे ने कहा कि आगामी 2024 हमारे लिए बड़ा ही शानदार वर्ष होने जा रहा है और 2025 में हमारे लिए चुनौती का विषय है। आगामी 2024 के चुनाव में बिहार के 40 सीट पर हमारी जीत सुनिश्चित है। महागठबंधन को जनता इस बार तमाचा मार कर औंधे मुंह नीचे गिरा देगी। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी ने पूरे देश और दुनिया में पार्टी के गौरव को गौरवान्वित किया है। ऐसे प्रधानमंत्री जिन्होंने देश की सुरक्षा देश के विकास के लिए समर्पण की भावना से अपना कार्य कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में फिर से देश के अंदर देश की जनता के आशीर्वाद से विकास सुरक्षा व देश की संस्कृति और सभ्यता को फिर से मोहर लगाकर दो तिहाई से ज्यादा बहुमत से 2024 में सरकार बनने जा रही है, और बिहार में 40 सीटों में 40 सीट बीजेपी की होगी, जिसमें 36 सीट तो निश्चित रूप से जीतेंगे, वही 4 सीट पर रणनीति चल रही है।

विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में मेदांता रांची ने किया विशेष आयोजन, महिला कर्मियों को किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

रांची। विश्व महिला दिवस के मौके पर मेदांता अब्दुर्रजाक अंसारी मेमोरियल विवर्स अस्पताल रांची की तरफ से शुक्रवार को विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें महिला कर्मियों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन और केक काटने के साथ हुई। कार्यक्रम में विश्व महिला दिवस को ध्यान में रखकर फैशन शो का आयोजन किया गया ,साथ ही वैसी महिलाओं जिनका हमारे जीवन में अहम योगदान है। उस पर आधारित शो का भी आयोजन किया गया। जिसमें यह दिखाने की कोशिश की गई कि एक मां, बहन, बेटी और बीवी के रूप में महिलाओं का कितना योगदान होता है। कार्यक्रम में विभिन्न महिलाओं ने अपनी अपनी कविताओं का भी गायन किया। इस मौके पर विशेष रूप से मेदांता विमेन ऑफ करेज अवार्ड भी दिया गया। यह अवार्ड विशेष रूप से उन महिला कर्मियों के लिए था जो विपरीत हालात में भी अपने कर्तव्य को नहीं भूलती हैं। आयोजन में मेदांता अब्दुर्रजाक अंसारी मेमोरियल विवर्स अस्पताल रांची

ने अपने सारे महिला कर्मियों को गिफ्ट कार्ड भी प्रदान किया। इस मौके पर मेदांता अब्दुर्रजाक अंसारी मेमोरियल विवर्स अस्पताल रांची के हॉस्पिटल डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि न केवल चिकित्सा बल्कि सामाजिक कार्यों में भी मेदांता अब्दुर्रजाक अंसारी मेमोरियल विवर्स अस्पताल रांची अपनी बराबर सहभागिता रखता है। इस तरह के कार्यक्रम का उद्देश्य विशेष रूप से महिला कर्मियों में ऊर्जा के संचार के साथ ही उनके जिम्मेदारी और कर्तव्यनिष्ठा को और मजबूत करना है। आयोजन में मेदांता अब्दुर्रजाक अंसारी मेमोरियल विवर्स अस्पताल रांची के कई डॉक्टर और कर्मी भी उपस्थित थे।

दो गुटों के बीच झड़प के बाद फायरिंग में छात्र की हुई मौत के बाद परिजनों व ग्रामीणों ने किया एनएच 31 को बाधित कर किया जमकर विरोध प्रदर्शन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया के राजेंद्र कॉलोनी में दो पक्षों के बीच हुए विवाद के दौरान हुई फायरिंग में स्थानीय इलाके के एक छात्र की गोली लगने से हुई मौत के बाद आक्रोशित ग्रामीणों व परिवार के लोगों ने एनएच 31 पर मृतक के शव को रख कर जाम कर पुलिसिंग कार्यशैली का विरोध करते हुए जम कर प्रदर्शन किया है।

मामले को लेकर बताया जा रहा है की होली के मौके पर नवगछिया के राजेंद्र कॉलोनी में दो पक्षों के बीच विवाद हो रहा था तभी एक गोली छत पर खड़े एक लड़के को जा लगी। इसके बाद अस्पताल ले जाने पर उसे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया था। जिसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल है। पुलिस वीडियो की पड़ताल में जुटी हुई है, वायरल वीडियो में मारपीट और फायरिंग की घटना कैद है। साथ ही मृतक छात्र आशीष को गोली लगने की घटना भी कैद हो गई है। जिसके बाद घटना से गुस्साए परिजनों और ग्रामीणों ने एसपी आवास के पास एनएच 31 को घंटो जाम कर जमकर विरोध प्रदर्शन किया है। इस दौरान आक्रोशित परिजनों और ग्रामीणों ने लगभग एक घंटे तक एनएच 31 को जाम रखा। वही ग्रामीणों ने पुलिस प्रशासन मुदार्बाद के जमकर नारेबाजी की। वहीं जाम की सूचना मिलते हीं मौके पर सदलबल के साथ नवगछिया थाना की पुलिस के अलावा चार थानों की पुलिस पहुंची।

जहां पुलिस कर्मियों द्वारा गुस्साए परिजनों और ग्रामीणों को काफी समझाने की कोशिश की, लेकिन गुस्साए मृतक के परिजन व ग्रामीण किसी भी अधिकारी के बातों को सुनने तैयार नही थे। प्रदर्शनकारियों का कहना था की नवगछिया नगर परिषद के सभापति प्रतिनिधि प्रेम सागर उर्फ डब्लू यादव ने छात्र को गोली मारी है। वही घटना को 24 घंटा होने को चले लेकिन पुलिस ने अभी तक कोई कारवाई नही की है। इस दौरान पुलिस ने जाम हटाने को लेकर काफी कोशिश की लेकिन पुलिस को निराशा हीं हाथ लगी। इस क्रम में पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच जमकर बहस शुरू हो गई। गुस्साए लोगों ने वरीय पदाधिकारी को बुलाने की मांग करने लगे, और पुलिस के खिलाफ जमकर नारेबाजी करने लगे। जिसके बाद मौके पर पहुंचे एसडीपीओ दिलीप कुमार ने आक्रोशित लोगों को काफी देर तक समझाया बुझाने का प्रयास किया लेकिन प्रदर्शनकारी कुछ भी सुनने को तैयार नही थे। एसडीपीओ दिलीप कुमार के द्वारा करीब आधे घंटे तक समझाने बुझाने के बाद प्रदर्शनकारी जाम हटाने को तैयार हुए। वही नवगछिया के एसपी सुशांत सरोज ने कहा कि इस घटना को लेकर मृतक आशीष के भाई सचिन राज ने केस दर्ज कराया है। जिसको लेकर दो युवक को गिरफ्तार किया गया है, जिसमें और भी कई नामजद अभियुक्त हैं जिसे जल्द ही गिरफ्तार किया जायेगा।

तेज धारदार चाकू से गला रेत व पत्थर से कूच कर युवक की हत्या

आक्रोशित ग्रामीणों व परिजनों ने अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए घंटों किया मुख्य सड़क मार्ग को जाम,

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। जगदीशपुर थाना क्षेत्र के पुरैनी रेलवे लाइन के चौरा बहियार में अपराधियों द्वारा एक की हत्या कर शव को फेक दिये जाने का मामला सामने आया है। वही इलाके में युवक के मृत शव मिलने से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि अज्ञात अपराधियों के द्वारा युवक की निर्ममता से गला रेतकर और पत्थर से उसके चेहरे को कूच कूच कर हत्या की वारदात को अंजाम दिया है। वही मृतक युवक की पहचान बलुआचक हरिजन टोला के ओपी हरिजन के 35 वर्षीय पुत्र सन्तोष हरिजन के रूप में बतायी जा रही है। मृतक युवक मजदूरी का काम कर अपने परिवार का जीविकोपार्जन किया करता था। वही घटना सूचना ग्रामीणों के द्वारा स्थानीय जगदीशपुर थाना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही जगदीशपुर थानाध्यक्ष अमित कुमार अपने सदलबल के साथ मौके पर पहुंच कर मामले की छानबीन में जुट गयी हैं वही उनके द्वारा अपने उच्च अधिकारी को घटना की सूचना दी।

वही उच्च अधिकारियों के निर्देश पर घटना की जांच व अपराधियों की निशादेही की जांच को लेकर घटना स्थल पर डॉग स्क्वायड व एफएसएल की जांच टीम को सूचना दी। वही मामले को लेकर परिजन ने बताया कि रात से घर नहीं आया था, हम लोग को लगा कि कही पुलिस ने पकड़ लिया होगा, क्योंकि की वह बहुत शराब पिया हुआ था, हम सपरिवार मिलकर सुबह 4 बजे थाना भी गए थे, लेकिन थाना में नही था, और सुबह के 6 बजे करीब पता चला की एक युवक का शव पुरैनी रेलवे लाइन के चौरा बहियार में पड़ा हुआ है। हम लोगो ने जाके दिखा तो उक्त मृतक युवक संतोष हरिजन का शव था। वही अक्रोशित ग्रामीणों व परिजनों ने भागलपुर हसडीहा मुख्य मार्ग को अपराधियों की गिरफ्तारी व मुआवजा की मांग को लेकर जामकर पुलिस कार्यशैली का विरोध करते हुए जमकर नारेबाजी की। वही स्थानीय जगदीशपुर थाना पुलिस के द्वारा अपनी कौशल का परिचय अपनाते हुए आक्रोशित भीड़ को समझा बुझा कर मामले को शांत कराया। इस दौरान पुलिस को काफी समय तक आक्रोशित भीड़ के बीच जद्दोजहद का सामना करना पड़ा कुछ घंटों के बाद पुलिस ने मामले पर काबू पाने के साथ मुख्य सड़क मार्ग को जाम से मुक्त कर यातायात को संचालित करने का काम किया है।

दिल्ली के किसान महापंचायत में शामिल होंगे बिहार के किसान

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। संयुक्त किसान मोर्चा, बिहार से जुड़े सभी संगठनों की एक संयुक्त बैठक अदालतगंज पटना में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता वी.वी.सिंह ने की। बैठक मैं अशोक प्रसाद सिंह ने संयुक्त किसान मोर्चा बिहार की आगामी कार्य योजना की विस्तृत योजना पेश की, संयुक्त किसान मोर्चा बिहार के नेता जवाहर निराला ने अपने विचार रखते हुए कहा कि बिहार के किसानों का दोहन रसायनिक खाद, यूरिया, बीज के नाम पर हो रहा है।

गांधी मैदान में संयुक्त किसान मोर्चा बिहार के बैनर तले महापंचायत करेगी जिसमें स्थानीय ज्वलंत मुद्दे शामिल होंगे। मोदी सरकार की वादाखिलाफी के खिलाफ किसानों की मांगों को लेकर 20 मार्च 2023 को दिल्ली में आहूत विशाल किसान महापंचायत में अधिक से अधिक किसानों को चलने के लिए संयुक्त किसान मोर्चा बिहार ने सर्वसम्मति से जागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया।

बैठक में अपने विचार रखने वालों में आमिरका महतो, विनोद रंजन, अनिल कुमार सिंह, गोपाल कृष्ण, रामचंद्र आजाद, श्रीमती क्रांति, मणिलाल, नरेश कुमार, रामाधार सिंह, मनोज कुमार, सुरेंद्र प्रसाद, गोपाल शर्मा, उद्यन राय शामिल थे। इसके साथ ही बैठक में बिहार के 35 किसान संगठनों के लोगों ने भाग लिया। वहीं अगली बैठक 31 मार्च 2023 को केदार भवन पटना में रखने का निर्णय लिया गया।

नवनिर्मित सूर्य भगवान मंदिर सह बट सावित्री मंदिर निर्माण के प्राण प्रतिष्ठा हेतु निकाली गई शहर में भव्य शोभायात्रा

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। मोजाहिदपुर के मिर्जानहाट स्थित हसनगंज काली स्थान के प्रांगण में नवनिर्मित सूर्य भगवान मंदिर सह बट सावित्री मंदिर निर्माण का प्राण प्रतिष्ठा आगामी 11 मार्च को होना सुनिश्चित हुआ है। इसको लेकर पूजा समिति के सदस्यों द्वारा पूरे शहर में भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गयी है।

इस कलश शोभायात्रा में हजारों की संख्या में महिलाएं अपने सिर पर कलश लेकर बाल्टी कारखाना होते हुए गुरहट्टा चौक, शीतला स्थान चौक व मिर्जानहाटचौक होते हुए पुनः हसनगंज काली स्थान पहुंची। कार्यक्रम के निवेदक के रूप में काली पूजा समिति के सदस्य हैं,इस दौरान समाजसेवी सत्यनारायण प्रसाद साह के द्वारा इस मंदिर का निर्माण कराया जा रहा है। वही मुख्य अतिथि के रूप में बिहार सरकार के उद्योग मंत्री समीर महासेठ और विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत करेंगे, साथ ही भागलपुर की महापौर डॉ. वसुंधरा लाल रहेंगी।

वही कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता शिवनाथ मांझी सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा किया जाना है इस दौरान उनकी उपस्थित रहेंगी। वही प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के अलावे श्रीमद् भागवत कथा का सात दिवसीय आयोजन आगामी 11 मार्च से 17 मार्च तक संचालित किया जाना है। वही कथा वाचक के रूप में पूज्य किशोरी वैष्णवी सागर मध्य प्रदेश शामिल होंगे, जिनके द्वारा क्षेत्र के आम लोगों के बीच अपना कथा का प्रवचन कर लोगों को लाभान्वित करेंगी। कार्यक्रम की रूपरेखा सजाने में काली पूजा समिति हसनगंज मीरजान हाट के कार्यकर्ता तत्परता के साथ लगे हुए हैं।

पुलिस प्रशासन ने खेली कुर्ता फाड़ होली

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। जिले भर में होली का रंग दिखाई दे रहा था। लोग खुशी के रंग में सराबोर हो जमते दिखे है। वही पुलिस प्रशासन द्वारा विगत दो साल बाद होली का जमकर हर्षोल्लास के साथ नाच गाना गाते हुए होली के रंगों में झूम रहे थे थे तो वही पुलिस बलों ने कपड़े फाड़ होली भी खेली गई। इस मौके पर डीआईजी पूर्वी प्रक्षेत्र विवेकानंद, एसएसपी आनंद कुमार, डीएसपी के सामने थानाध्यक्षों पुलिसकर्मियों ने पारंपरिक गीत के साथ रंग गुलाल लगा कर होली खेली है। वही पुलिस लाइन से सभी पुलिस के जवान व अधिकारियों ने होली की शुरूआत की। वहां से पूरे टोली डीआइजी आवास पहुँची। सभी इतने उमंग में थे कि अपनी खुशी का इजहार रंगों के साथ साथ पुलिस कर्मियों ने कुर्ता फाड़ होली खेली। 6 साल के बाद अधिकारियों के साथ छोटे बड़े पुलिस के हर तबके के जवानों ने जमकर होली खेली ।

इस दौरान डीआईजी विवेकानंद ने सभी शहरवासियों को होली की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि ये हर्षोल्लास का त्योहार है। 2 वर्षो से कोरोना के कारण लोग होली नहीं मना पाये थे, लेकिन इस वर्ष सभी ने खूब आनंद उठाया है। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण माहौल में शहर वासी होली मनाए, हुड़दंग न करें। सभी जगहों पर बलों की प्रतिनियुक्ति की गई। वहीं विशेष परिस्थितियों के लिए विधि व्यवस्था से निपटने के लिए पुलिस की 12 टीम को अलग से तैयार रखा गया है। अगर कहीं भी अप्रिय कोई सूचना मिलती है तो तुरंत वहां फोर्स भेजा जाएगा। सवेंदनशील इलाकों में गश्ती बढ़ा दी गई।

युवक ने अनजाने में खुद के ही मौत का बना डाला वीडियो

दो पक्षों के विवाद का मोबाइल में रिकॉर्ड करने क्रम में युवक को लगी गोली इलाज के दौरान हुई मौत

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। जहां एक तरफ होली के रंग में पूरा शहर खुशी के उमंग में शराबोर हो डूबा हुआ था, तो वही दूसरी तरफ अपनी गलत मंसूबों को लेकर उक्त खुशी के रंग में भंग करने को लेकर अपने दबंगई का परिचय देने में डटे हुए थे।बताया जा रहा है कि नवगछिया थाना क्षेत्र के राजेन्द्र कॉलोनी में अपराधी तत्वों के दो गुटों में अपने वर्चस्व को लेकर हुई लड़ाई के बीच एक गुट के लोगों ने गोली फायरिंग कर दी। वही उक्त लोगों ने छत पर वीडियो बना रहे स्थानीय इलाके के एक छात्र को गोली मार दी। जिसे लेकर उसे स्थानीय लोगों व परिजनों ने आनन-फानन में इलाज के लिए नवगछिया अनुमंडल अस्पताल लाया गया। जहां ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए मायागंज अस्पताल रेफर कर दिया। वही मायागंज अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया, लेकिन मौजूद चिकित्सकों ने जांचोपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक छात्र आशीष कुमार पिता प्रदीप पंडित साकिन राजेन्द्र कॉलोनी नवगछिया के रूप में बताया गया है। वही घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल बना हुआ है। घटना को लेकर स्थानीय थाना पुलिस को सूचना मिलते ही मौके पर पहुंच कर पूरे मामले की जांच में जुट गयी है।

बीएड के छात्र की दबंगों ने कर दी हत्याः घटना को लेकर मृतक आशीष के भाई सचिन ने बताया कि उनके घर की गली में दो गुटों के बीच लड़ाई हो रही थी। इसी बीच आशीष व अन्य लोग छत के किनारे कड़ा होकर हुई विवाद को देखने के लिए गया हुआ था। उक्त घटना के समय उसका भाई भी साथ में था। दोनों गुटों में मारपीट होने के क्रम में एक गुट ने फायरिंग कर दी, जिसमें गोली मेरे भाई के सीने के पास जा लगी। मृतक आशीष बरारी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में द्वितीय वर्ष का छात्र था। वही उन्होंने बताया कि उसके पिता प्रदीप पंडित की नवगछिया के मुख्य बाजार स्थित हार्डवेयर की दुकान चलते है। मामले को लेकर वीडियो बना रहे लोगों पर दबंगों ने की फायरिंग में प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक वार्ड नंबर 10 के पार्षद मनीष सिंह के भाई लाल सिंह को स्थानीय नवगछिया नगर परिषद के चेयरमैन प्रीति कुमारी के पति डब्लू यादव, उसका भाई पप्पू यादव समेत कई अज्ञात लोगों ने मिलकर बुरी तरह से मारपीट रहे थे। इसी क्रम में बीच-बचाव करने हेतू पार्षद मनीष सिंह मौके पर पहुंचे। वही मारपीट के बीच डब्ल्यू यादव और उसके सहयोगियों ने अंधाधुंध राइफल से गोलियां चलानी शुरू कर दी। वही मारपीट कर रहे उक्त लोगों ने छत पर खड़े होकर हुई मारपीट का वीडियो बना रहे लोगों पर भी फायरिंग कर दी। जिसमें एक गोली छात्र आशीष को जा लगी। वही घटना से जुड़ा हुआ एक वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

केले के खेत में युवक का शव मिलने पर इलाके में मचा कोलाहल

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया जगतपुर गांव में जगत ध्वजा मंदिर के पीछे अशोक यादव के केला खेत में भरोसी यादव के बीस वर्षीय पुत्र नीतीश कुमार का शव बरामद किया गया है। शव को प्रथम दृष्टया देखने से प्रतीत हो रहा है कि नीतीश की हत्या गला दबा कर की गयी है। मृतक के गले पर स्याह निशान भी स्पष्ट देखे जा रहे हैं। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए नवगछिया अनुमंडल अस्पताल भेज दिया। जबकि मामले में प्राथमिकी दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है।

वही मामले को लेकर नवगछिया एसपी सुशांत कुमार सरोज ने बताया कि प्रथम दृष्टया घटना का कारण प्रेम प्रसंग बताया जा रहा है, वैसे पुलिस मामले की छानबीन कर रही है, जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जायेगा। वही घटना को लेकर मृतक के भाई मनीष यादव ने बताया कि नीतीश बुधवार की शाम को घर से भागलपुर जाने की बात कह कर निकला था और गुरूवार की सुबह उनलोगों को केले के खेत में लाश मिलने की खबर मिली है। जब वे लोग घटना स्थल पर गये तो देखा कि शव उसके भाई नीतीश की है। वही मनीष ने बताया कि पड़ोस की ही एक महिला जो दिवाकर यादव की पत्न ी है, पिछले कई दिनों से बार बार घर पर आ रही थी और बोल रही थी कि नीतीश ने उसके बीस हजार रुपए ले लिये हैं। अगर वह नहीं देगा तो पूरे घर को बर्बाद कर देंगे। मनीष ने आशंका जाहिर करते हुए बताया कि उसे पक्का विश्वास है कि मनीष जब बुधवार को भागलपुर जा रहा था तो उसकी समय महिला और उसके सहयोगियों द्वारा उसकी हत्या की वारदात को अंजाम दिया है। मृतक के भाई मनीष का साहू परवत्ता बाजार में एक स्टूडियो है। नीतीश अपने भाई के काम में हाथ बंटाता था और पिता के साथ खेती गृहस्थी का काम भी करता था। इधर मृतक के पिता भरोसी यादव ने बताया उसके पुत्र का मोबाइल गायब है। मोबाइल मिलने के बाद सब कुछ पता चल जायेगा। भरोसी यादव ने कहा कि दिवाकर यादव की पत्नी ने ही षड्यंत्र कर उसके पुत्र की हत्या करा दी है

एक्सिस बैंक ने किसानों को ग्रामीण ऋण उत्पाद उपलब्ध कराने हेतु आईटीसी लिमिटेड के साथ सहयोग किया

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। भारत के तीसरे सबसे बड़े प्राइवेट बैंक, एक्सिस बैंक ने आज आईटीसी लिमिटेड के साथ अपने सहयोग की घोषणा की। इस सहयोग का उद्देश आईटीसी के कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में शामिल किसानों को बैंक के ऋण उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध कराना है। यह साझेदारी एक्सिस बैंक को देश के दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले और अल्प सेवा प्राप्त किसानों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाएगी। बैंक द्वारा परिसंपत्ति और देयता उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध कराई जाएगी जैसे कि कृषक ऋण, स्वर्ण ऋण आदि। एक्सिस बैंक किसानों तक पहुंचने और उनकी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए फुल-स्टैक एग्री-टेक एप्लिकेशन आईटीसीमार्स (मेटा मार्केट फॉर एडवांस्ड एग्रिकल्चरल रुरल सर्विसेज) का उपयोग करेगा। इसके अतिरिक्त, यह भारत के 656 जिलों में स्थित अपनी ग्रामीण-शहरी और अर्ध-शहरी (आरयूएसयू) शाखाओं के माध्यम से किसानों को उत्पादों और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला भी उपलब्ध कराएगा।

साझेदारी के बारे में बताते हुए, एक्सिस बैंक के ग्रुप एक्जीक्यूटिव और हेड - भारत बैंकिंग, मुनीश शारदा ने कहा, "एक्सिस बैंक में, हम यह सुनिश्चित करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं कि आरयूएसयू बाजारों के सभी वर्ग के ग्राहकों के लिए ऋण की सुविधा और बैंकिंग समाधान आसानीपूर्वक सुलभ हों। यह साझेदारी हमारे बैंक के भारत बैंकिंग मिशन के अनुरूप है, जिसके तहत दूर-दराज के क्षेत्रों में हमारी पहुंच का विस्तार किया जा रहा है और उन क्षेत्रों के ग्राहकों को परेशानीमुक्त अनुभव प्रदान किया जा रहा है। हमें विश्वास है कि लाखों किसानों के साथ आईटीसीमार्स के मजबूत और टिकाऊ संबंध की मदद से हम समुदाय की वित्तीय स्थिति को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, जिससे भारत की वास्तविक क्षमता को हासिल किया जा सकेगा।..."

आईटीसी लिमिटेड के डिवीजनल चीफ एक्जीक्यूटिव, एग्री बिजनेस डिवीजन, श्री रजनीकांत राय ने कहा, ह्लआईटीसी ने वर्षों से किसानों के जीवन को बदलने के लिए बहु-आयामी हस्तक्षेप किए हैं, जो आईटीसी ई-चौपाल ईको-सिस्टम द्वारा संचालित है जिससे 4 मिलियन से अधिक किसान जुड़े हैं। किसानों को डिजिटल क्रांति की शक्ति से सक्षम बनाने की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए, हमने अब आईटीसीमार्स का फिजिटल इको-सिस्टम लागू किया है जो हाइपरलोकल और व्यक्तिगत सलाहकार, कृषि-इनपुट, वित्तीय सेवाओं और बाजार लिंकेज के माध्यम से कई तरह के समाधान प्रदान करता है। जिन किसानों के साथ हम वर्षों से जुड़े हुए हैं, उनके लिए बैंकिंग समाधान उपलब्ध कराने हेतु एक्सिस बैंक के साथ साझेदारी करके हमें खुशी हो रही है। संस्थागत ऋण की समय पर उपलब्धता किसान को गुणवत्तापूर्ण इनपुट खरीदने में सक्षम बनाएगी जिससे उत्पादकता में सुधार करने और कृषि आय बढ़ाने में उन्हें मदद मिलेगी।"

इस पहल के माध्यम से, एक्सिस बैंक का लक्ष्य वित्तीय वर्ष 22-23 में नए खातों को बढ़ाकर अपनी भारत बैंकिंग रणनीति को आगे बढ़ाना है। बैंक ने प्रमुख मैट्रिक्स में मजबूत वृद्धि दर्ज की है। 31 दिसंबर, 2022 तक, इसकी ग्रामीण अग्रिमों में 27% की वृद्धि हुई, संवितरण में 12% की वृद्धि हुई और जमा में 16% की वृद्धि हुई।

संक्षिप्त खबरें

डीएवी पब्लिक स्कूल कैंट एरिया खेल कूद के टीचर न जन्मदिन के अवसर पर भाजपा प्रदेश युवा नेता आकाश प्रियदर्शी के जन्मदिन के अवसर पर बधाई दी है

गया। गया के एलआईजी 338 एसबीएस कॉलोनी के रहने वाले डीएवी पब्लिक स्कूल कैंट एरिया गया के शारीरिक टीचर नीरज सिंह राजपूत के बेटे के जन्मदिन के अवसर पर भाजपा प्रदेश सह जिलाध्यक्ष महीला विकास मंच आकाश प्रियदर्शी ने सुभकमनाए दी है और उज्वल भविष्य की कामना की है। आज अभिनंदन का जन्मदिन धूम से मनाया गया है । राष्ट्रिय सनातन योद्धा मंच के संयोजक सह प्रचारक आकाश प्रियदर्शी ने मिडिया को बताया की आज होली ऐसा महा पर्व में अभिनंदन सिंह का जन्मदिन है और भगवान से मैं प्रार्थना करता हु की वह एक सफल इन्सान बने। बता दे की नीरज सिंह राजपूत पूरे बिहार के नामी खेल खुद के कोच है ।वही जब आकाश प्रियदर्शी उर्फ एपी भईया पढ़ते थे डीएवी पब्लिक स्कूल कैंट में तब वह नीरज सर से ही कोचिंग ली है और उन्होंने मुझे बनाया है। भाजपा महिला उपाध्यक्ष अन्नू बर्नवाल, वार्ड 51 सनातन योद्धा मंच संयोजक विश्वा रंजन राज , आदि लोगो ने बधाई दी है।

नगर आयुक्त को बिहार ने वन आने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया

गया। गया नगर निगम कार्यालय में नगर आयुक्त अभिलाषा शर्मा भ द्वारा गया नगर निगम के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ होली मिलन की गई है एवं हार्दिक शुभकामनाएं दी गई है नगर निगम के पदाधिकारी एवं कर्मचारी को उनके कार्यो के लिए सराहना की गई हैं अभिलाषा शर्मा .नगर आयुक्त गया नगर निगम को नगर विकास एवं आवास विभाग द्वारा पितृपक्ष मेला, स्वच्छता सर्वेक्षण में बिहार में नं वन में आने, लाईट हाउस के लिए किए गए कार्य, पॉल्यूशन इत्यादि में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है। जिस पर नगर आयुक्त द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों को इसके लिए धन्यवाद दिया गया एवं बताया गया है कि इस प्रशस्ति पत्र में आपका सहयोग एवं आपके उत्कृष्ट कार्य का योगदान है।

छकरबंधा थाना भवन का एस एसपी ने किया निरीक्षण दिए निर्देश

गया। गाया जिले के बाराचट्टी प्रखण्ड के नवनिर्मित छकरबंधा थाना भवन का तथा थाना का औचक निरीक्षण गया जिला एस एसपी के द्वारा किया गया है। थाना को नवनिर्मित थाना भवन में क्रियाशील बनाया गया है ।नक्सलियों के विरुद्ध लगातार अभियान चलाने एवं नागरिकों की सुरक्षा बेहतर तरीके से सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश गया जिला एस एसपी आशिष भारती द्वारा दिया गया है।

गुलर गाव का एस एसपी एवं एफसीएल टीम ने जाच जारी

गया ।बाराचट्टी थाना के गुलर वेद गांव जाकर कल के मामले की जांच किया गया है। प्रभावित लोगों के परिजनों से घटना के संबंध में जानकारी प्राप्त किया गया है। तत्काल फायरिंग प्रैक्टिस पर रोक लगाई गई है। एफसीएल की टीम द्वारा कल जांच किया गया था। आज भी पटना से एफसीएल टीम को जांच हेतु बुलाया गया है जिसके द्वारा घटनास्थल पर पहुंच कर जांच किया जा रहा है।

बोचहां में हुआ चिकन पॉक्स का प्रकोप, लोग कर रहे पूजा पाठ

बोचहा ।प्रखंड क्षेत्र के शर्फुद्दीनपुर पंचायत के सलहां गांव चिकने पाक्स संक्रमण की चपेट में आने से ग्रामवासी काफी डरे हुए हैं। इस संक्रमण की चपेट में ज्यादातर स्कूली छात्र छात्राएं हैं ।परिजन इसे दैवीय प्रकोप मानते हुए घर पर ही रहकर ठीक होने का इंतजार कर रहे हैं। पूरे जिस्म पर बड़े-बड़े लाल चकत्ते होने के बावजूद भी लोग इलाज नहीं करा रहे हैं पिछले कई दिनों से गांव के दर्जनभर से अधिक परिवार इस गंभीर बीमारी को झेल रहे हैं ।इस बीमारी के चपेट में आए लोग 9 दिनों तक हल्दी तेल के बगैर ही खाना बनाते हैं। उसे खाकर घरों के अंदर ही रहते हैं और ठीक होने का इंतजार करते हैं। चेचक के संक्रमण के शिकार रीता देवी, 23, रौनक कुमार, 6 वर्ष , सुनीता कुमारी 5, संगीता देवी, 8 शंभू साहनी 5, मीरा कुमारी 2 सहित दर्जनों परिवार के लोग इस खतरनाक बीमारी से ग्रसित होने के बाद भी उपचार के लिए नहीं अस्पताल जा रहे हैं और नहीं है डॉक्टर से सलाह ले रहे हैं। पत्रकार द्वारा पूछे जाने पर उनके परिजन बताते हैं ।यह दैवीय प्रकोप से संबंधित है बिना दवा के ही अपने आप ही ठीक हो जाएंगे।

पूर्व सभापति अवधेश नारायण सिह ने किया नामांकन

युवाओं का आवाज सदन में रखने वाले प्रतिनिधि की आवश्यकता है, जो अवधेश नारायण सिंह के द्वारा किया जाता रहा है : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

गया। भाजपा उम्मीदवार, पूर्व विधान परिषद सभापति अवधेश नारायण सिंह गया स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से नामांकन दाखिल किया गया है। नामांकन गया प्रमंडलीय आयुक्त कार्यालय में संपन्न हुआ है।

इस अवसर पर प्रतिपक्ष के नेता विजय कुमार सिन्हा, औरंगाबाद सांसद सुशील कुमार सिंह,पूर्व मंत्री सह विधायक नंदकिशोर यादव, पूर्व मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार, पूर्व विधान पार्षद कृष्ण कुमार सिंह उर्फ कुमार वाबू उपस्थित थे। नामांकन के बाद गया आई.एम.हौल में एक सभा का आयोजन किया गया। इससभा को संबोधित करते हुए प्रतिपक्ष के नेता विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि बिहार में अब कानून का राज नहीं है बल्कि गुंडा और माफिया राज चल रहा है। भ्रष्टाचार चरम पर है लोगों को बेवजह परेशान किया जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी सुशासन की सरकार देने के लिए प्रसिद्ध रही है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार केवल लोगों विकास की बात करते हैं लेकिन हकीकत से कोसों दूर रहते हैं ।अभी समाधान यात्रा में जनता के समाधान के बजाय व्यवधान उत्पन्न कर रहे थे। केंद्र की सरकार बिहार के लिए अनेकों कार्य योजना पर काम कर रही है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि गया स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के लोकप्रिय उम्मीदवार अवधेश नारायण सिंह को भारी मतों से विजयी बनाये। सांसद सुशील कुमार सिंह ने कहा कि स्नातक क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण क्षेत्र है, यहां बुद्धिजीवियों के द्वारा अपना प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करता है। युवाओं का आवाज सदन में रखने वाले प्रतिनिधि की आवश्यकता है,जो अवधेश नारायण सिंह के द्वारा किया जाता रहा है। आनेवाले समय में अपना बहुमूल्य वोट देकर अवधेश नारायण सिंह को विजयी बनाये।

डॉ प्रेम कुमार ने कहा कि भाजपा के विचार धारा को मजबूती के साथ रखने वाले और सभी वर्गों को साथ लेकर चलने वाले अवधेश नारायण सिंह को भारी मतों से विजय बनावे।

पूर्व विधान पार्षद कृष्ण कुमार सिंह उर्फ कुमार वाबू ने कहा कि युवाओं का मान सम्मान अवधेश नारायण सिंह के द्वारा दिया जाता रहा है। बुद्धिजीवियों अपना मत का प्रयोग कर्मठ, ईमानदार एवं क्रियाशील व्यक्ति को ही देना चाहिए और यह सब गुण अवधेश नारायण सिंह में है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा के नव नियुक्त जिला अध्यक्ष प्रेम प्रकाश ऊर्फ चिंटू एवं संचालन पूर्व जिलाध्यक्ष धनराज शर्मा के द्वारा किया गया है ।इस अवसर भाजपा नेता सह विधायक नंदकिशोर यादव,भाजपा प्रदेश महामंत्री सह विधान पार्षद देवेश कुमार सिन्हा। रांची विधायक सीपी सिंह, प्रदेश प्रवक्ता सह पूर्व विधायक मनोज शर्मा , विधान पार्षद निवेदिता सिंह, डॉ श्यामदेव पासवान, धीरज रौनियार,योगेश कुमार।

तत्काल सभी प्रकार के फायरिंग अभ्यास को रोकने हेतु रांची अवस्थित रेंज आवंटन पदाधिकारी को अनुरोध किया

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बुधवार को सुबह 8:00 बजे बाराचट्टी के बुमेर पंचायत के गुलरवेद गांव में 3 लोगों की मृत्यु एवं 2 लोगों के घायल होने की सूचना प्राप्त हुई है। इस घटना काफी दुखद है। जिलाधिकारी ने घटना की सूचना प्राप्त होते ही स्थल पर टीम भेजा गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि आर्मी के फायरिंग अभ्यास के दौरान गोला गिरने से ऐसी घटना घटित हुई है।

इस घटना के वास्तविक जांच हेतु जिला पदाधिकारी ने फॉरेंसिक टीम सहित पांच उच्च स्तरीय टीम का गठन किया गया है एवं तत्काल सभी प्रकार के फायरिंग अभ्यास को रोकने हेतु रांची अवस्थित रेंज आवंटन पदाधिकारी को अनुरोध किया गया है। और तत्काल प्रभावित परिवार को परिवारिक लाभ योजना एवं कबीर अंत्येष्टि योजना के तहत लाभ दिया गया है और हर संभव सरकारी योजना से लाभ आच्छादित करने हेतु निर्देश दिया है। इलाजरत घायल लोगों के बेहतर इलाज हेतु मगध मेडिकल के अधीक्षक को निर्देश दिया गया है। जिला पदाधिकारी ने स्वयं मगध मेडिकल अस्पताल पहुंचकर इमरजेंसी वार्ड में इलाजरत दोनों मरीजो से मिला एवं पूरी घटना की जानकारी लिया गया है वहा पर उपस्थित मेडिकल स्टाफ को निर्देश दिया कि अपने निगरानी में इनका बेहतर उपचार करें। इसके बाद पोस्टमार्टम परिसर के समीप पहुंचकर मृत व्यक्ति के परिजनों से मुलाकात किया तथा पूरी विस्तार से घटना की जानकारी लिया गया है। इसके बाद जिला पदाधिकारी ने पीड़ित परिवार को आश्वस्त कराया कि प्रशासन की ओर से जनहित के लिए सभी आवश्यक कार्य करने हेतु गंभीर है। मृत व्यक्ति के परिजन को हर संभव सहायता भी दिया जाएगा। मृतक के परिजन ने बताया कि फायरिंग रेंज के बाहर में आकर गोला गिरा है ।जिसके कारण उनके परिजन में 3 की मृत्यु एवं दो घायल हुए हैं।

विकास मित्रों का जिलास्तरीय प्रशिक्षण आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति समुदाय के कल्याण हेतु विभिन्न विभागों द्वारा चलाए जा रहे सभी विकासात्मक योजनाओं एवं इसमें विकास रजिस्टर वर्जन-02 की भूमिका से सभी विकास मित्रों एवं जिला/प्रखंड स्तरीय विकास मित्रों का जिला स्तरीय प्रशिक्षण आज जिला निबंधन-सह-परामर्श केन्द्र सभागार में आयोजित किया गया । जिला पदाधिकारी ने उपस्थित विकास मित्रों को नये कार्य और दायित्वों के लिए शुभकामना देते हुए कहा कि अच्छे तरह से प्रशिक्षण प्राप्त करे तथा वर्जन 2 को अद्यतन करें। विकास मित्रों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होनें कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना में नया सर्वे कर नये नाम का चयन हेतु विभाग से अनुरोध किया जा रहा है। शौचालय के प्रयोग पर जोर देते हुए उन्होनें कहा कि उसका सदउपयोग करे। प्रधानमंत्री आवास योजना, जॉब कार्ड आदि के लिए सूचि को विकास मित्रों से साझा करने का निदेश जिला कल्याण पदाधिकारी को दिया गया। विकास मित्रों के द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के परिवारों से समन्वय कर आवश्यक डाटा विकास रजिस्टर (ऑन लाईन पोर्टल) में प्रविष्टि की जाती है। जिससे यह ज्ञात हो सकेगा कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति परिवारों को सरकार की किन-किन योजनाओं का लाभ प्राप्त हुआ है। विकास मित्रों को राज्य सरकार की सभी महत्वकांक्षी योजनाओं के बेहतर ढंग से समझने एवं उनके कार्य दक्षता में उन्नयन के साथ ही गुणवतापूर्ण विकास रजिस्टर वर्जन-2.0 तैयार करने के क्रम में विकास मित्रों को सभी विकासात्मक योजनाओं के संबंध में पुनः प्रशिक्षित किया गया । इसके लिए विकास मित्रों को राज्य की सभी योजनाओं की जानकारी प्रखण्ड स्तरीय सभी पदाधिकारियों तथा विकास रजिस्टर वर्जन 2.0 का प्रशिक्षण मास्टर ट्रेनर (प्रखण्ड कल्याण पदाधिकारी) द्वारा दिया गया। इसी प्रकार प्रखंडों में भी प्रशिक्षण कराया गया। प्रशिक्षण में प्रखण्ड के सभी विकास मित्र सम्मलित रहेंगे, इसके समन्वयक प्रखण्ड कल्याण पदाधिकारी होंगे। साथ ही प्रशिक्षण में प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी एवं प्रखंड स्तरीय सभी पदाधिकारी उपस्थित रहकर विभिन्न योजनाओं से संबंधित जानकारी विकास मित्र को देंगे। सात निश्चय से संबंधित योजनाओं को संचालित करने वाले विभागों तथा अन्य विभागों द्वारा सरकार की जिला तथा प्रखण्ड स्तर पर संचालित महत्वकांक्षी योजनाओं जिसमें विकास मित्रों की भूमिका हो सकती है, के संबंध में प्रखंड के पदाधिकारियों ,जिला स्तरीय ट्रेनरों के माध्यम से जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में विकास मित्रों को कम से कम शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, नल-जल, गली-नाली, स्वच्छता एवं सात निश्चय आदि विषयों के संबंध में आवश्यक रूप से प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला में जिला कल्याण पदाधिकारी नृपेन्द्र कुमार निराला , जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी दिनेश कुमार, डीआरसीसी मैनेजर आदि उपस्थित थे।

351 महिलाएं एवं कुंवारी कन्याएं माथे पर कलश लेकर उल्टानाथ महादेव मंदिर तारापुर से शोभायात्रा के साथ पैदल पहुंचा अफजलनगर

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर 9 मार्च ।गुरुवार को उल्टानाथ महादेव मंदिर तारापुर से भोलेनाथ का आशीर्वाद लेकर 351 महिलाएं एवं कुंवारी कन्याओं ने माथे पर कलश लिए भव्य शोभायात्रा के साथ 3 किलोमीटर दूर पैदल चलकर अफजलनगर नहर मोर बजरंगबली मंदिर पहुंचा । जहां पुरोहित निरंजन झा ने महिला श्रद्धालुओं के माथे से कलश उतारकर रखने के घंटों बाद पूरे विधि विधान एवं नेम निष्ठा के साथ रामधुन महायज्ञ का शुभारंभ विधायक राजीव कुमार सिंह द्वारा फीता काटकर कराया गया।

जानकारी के अनुसार शोभायात्रा में बैंड एवं डीजे बाजा की धुन पर श्रद्धालुओं के साथ-साथ घोड़ा भी नाच उठे । श्री श्री 108 रामधुन महायज्ञ के मौके पर पूरे रास्ते एक ही नारा एक ही नाम ,जय श्रीराम जय श्रीराम, एवं बच्चा बच्चा कहता है श्री राम हमारा सच्चा है ,की जयकारा के साथ-साथ भक्ति गीतों पर संपूर्ण क्षेत्र के लोग देखते ही देखते भक्ति रस में सराबोर हो गए। डीजे बाजा पर बजते गीत हमसे भंगिया ना पिसाई ए गणेश के पापा नैहर जात बानी, एवं मोर भंगिया के मनाई द हो भैरो लाल की गीत संगीत पर क्या महिलाएं क्या पुरुष पूरे रास्ते नाचते गाते पूरे गांव का परिभ्रमण कर समारोह स्थल पहुंचे। शोभा यात्रा के दौरान पूर्व जिला परिषद सदस्य संजय सिंह ने गांव परिभ्रमण के दौरान सभी श्रद्धालुओं के बीच शर्बत परसा पनसल्ला के समीप ठंडा जल का सेवन कराया । कलश शोभा यात्रा के मौके पर मुखिया प्रियंका कुमारी पूर्व मुखिया सुरेश यादव शशि कुमार सुमन राजद के प्रदेश सचिव जितेंद्र कुशवाहा इंजीनियर सुमन कुमार विक्रम कुमार प्रदीप यादव बबलू यादव संतोष यादव पप्पू यादव सहित हजारों श्रद्धालु शोभायात्रा में शामिल थे ।

होली के हुड़दंग में बाइक सवार युवक की मौत ,परिजनों में कुहराम

बोचहा ।रंगों का पर्व होली के हुड़दंग में एक खाद्य व्यापारी की मौत हो गई । मामला बोचहां थाना क्षेत्र का है । जानकारी के मुताबिक बुधवार को रोशी गांव अपने दोस्तों के यहां से रंगों का पर्व होली मना कर बाइक से अपने घर लौट रहा था कि रास्ते में अज्ञात बाइकर्स द्वारा मचाए जा रहे हुड़दंग से बाइक सवार युवक घबरा गया और सरफुद्दीनपुर हाई स्कूल के समीप रोड किनारे लगे पेड़ से टकरा गया । इस दौरान उस युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए एसकेएमसीएच भेज दिया। मृतक की पहचान सरफुद्दीनपुर के कुंदन कुमार के रूप में हुई है। इस घटना के बाद परिजनों में चीख-पुकार मच गया । मृतक की मां ललिता देवी का रो-रो कर बुरा हाल है बताती है 10 वर्ष पहले ही पति की मृत्यु हो जाने से एकलौता पुत्र ही सहारा था अब वह भी चला गया। मृतक के चले जाने से प्रीति मिश्रा की मांग सुनी हो गई वह सदमे में है । छोटे-छोटे दो बच्चे हैं । इस का भरण पोषण कैसे होगा यह कहते हुए चित्रकार मार बेहोश हो जाती है। थाना अध्यक्ष अरविंद प्रसाद ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद शव को मृतक के परिजनों को दे दिया गया है शिकायत मिलने पर पुलिस मामले की जांच करेगी।

विभाग के कई अधिकारियों की संलिप्तता राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज मुंगेर में सुरक्षा प्रहरि के नाम पर लाखों का घोटाला

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। बिहार में पशुपालन घोटाले की तरह राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज रमणकाबाद हवेली खड़गपुर में प्रतिवेदन होने का समाचार प्राप्त हुआ है। राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज मुंगेर सूत्रों के अनुसार राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज रमणकाबाद हवेली खड़गपुर वर्ष 2019 तत्कालीन प्राचार्य के पत्रांक संख्या 1363 दिनांक 28 -09- 2019 के अनुरूप 22 सुरक्षा प्रहरी एवं सफाई कर्मी और माली के लिए दिनांक 1-10 -2019 से उपलब्ध कराने के लिए मैसर्स गोस्वामी सिक्योरिटी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड मुजफ्फरपुर के साथ इकरारनामा हुआ था। इस इकरारनामा के अनुसार 8432 ड्ड84 पैसे प्रति सुरक्षा गार्ड का वेतनमान निर्धारित किया गया है। वहीं सफाई कर्मी को 8100ड्ड37 पैसे प्रति सफाई कर्मी और माली 8100ड्ड37 पैसे न्यूनतम दर अनुमोदित किया गया है। जिसका अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या 03/2019-2020 में 19 सुरक्षा प्रहरी दो सफाई कर्मी और एक मालिक की सेवा दिनांक 1-10-2019 से उपलब्ध कराई गई थी इकरारनामा के मुताबिक 19 गार्ड की जगह पर 1-10-2019 से 16 गार्ड कार्यरत है जबकि वेतन भुगतान प्राती गार्ड के नाम पर प्रतिमाह किया गया है। यह मामला तब उजागर हुआ जब प्राचार्य सुश्री खुशबू रानी ने गोस्वामी सिक्योरिटी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड मुजफ्फरपुर का 08 माह का वेतन लंबित भुगतान माह जनवरी में विपत्र को रोक दिया और कार्यरत 16 सुरक्षाप्रहरीयों के विपत्रों का भुगतान किया। विगत 1-10-2019 से 1-6 -2022 तक करीब 33 महीना में तीन सुरक्षा गार्ड के नाम पर करीब 834851ड्ड16 का नाजायज तरीके से बिना गार्ड की ड्यूटी का ही सरकारी धनराशि को तत्कालीन प्राचार्य ने गोस्वामी सिक्योरिटी सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड मुजफ्फरपुर को भुगतान किया है।

विपरीत परिस्थितियों में अंधविश्वास पाखंड से लड़कर महिला स्कूल की स्थापना की थी सावित्रीबाई फुले : विनय कुशवाहा

प्रात : किरण संवाददाता

गया। महात्मा ज्योतिबा फुले क्रांतिकारी संघ के बैनर तले बांके बाजार के डी के किड्जी स्कूल के प्रांगण में देश की प्रथम महिला शिक्षिका महान समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले का पुण्यतिथि मनाया गया है।

इस मौके पर महात्मा ज्योतिबा फुले क्रांतिकारी संघ के राष्ट्रीय संयोजक राजद के वरिष्ठ नेता विनय कुशवाहा ने माता सावित्रीबाई फुले के तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दिया गया है।

इस मौके पर विनय कुशवाहा ने कहा कि सावित्रीबाई फुले देश की प्रथम महिला शिक्षिका के साथ-साथ महान समाज सुधारक थी। उन्होंने छुआछूत, जाती- पाती, ऊंच-नीच, बाल विवाह जैसे तमाम कुरीतियों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लडी। उन्होंने विधवा विवाह को प्रोत्साहित कर समाज सुधार के लिए क्रांतिकारी कदम उठाया है। महिलाओं एवं बच्चियों के पढ़ने के लिए देश में सबसे पहले महिला स्कूल का स्थापना किया एवं खुद पढ़ाना शुरू किया गया है। उस समय धर्म के ठेकेदारों ने सावित्रीबाई फुले पर तरह-तरह के अलान्क्षणा लगाया। लड़कियों को पढ़ाने के लिए स्कूल जाती थी तो समाज के ठेकेदारों ने इन पर गोबर मल मूत्र फेंका करते थे तरह-तरह से प्रताड़ित करते थे इतना अपमान सहने के बावजूद सावित्रीबाई फुले ने हार नहीं मानी है। और बच्चियों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया और सफल रही है। सावित्रीबाई फुले इतनी बहादुर महिला थी की पाखंड और अन्याय के खिलाफ अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर लड़ाई लड़ती रही और सफलता हासिल की है।

विनय कुशवाहा ने कहा कि देश की महिलाओं को इनसे सीख लेकर पाखंड और अन्याय के खिलाफ निर्णायक लड़ाई को आगे बढ़ा कर जात पात छुआछूत ऊंच-नीच की भेद को खत्म करके नया राष्ट्र का निर्माण करें ।पुण्यतिथि के अवसर पर केंद्र सरकार से मांग किया गया की शैक्षिक पाठ्यक्रम में सावित्रीबाई फुले की जीवनी को शामिल किया जाए। के साथ पूरे देश में सावित्रीबाई फुले का जन्म दिवस एवं पुण्यतिथि राजकीय समारोह के साथ मनाया जाए। हर राज्य में सावित्रीबाई फुले के नाम से महिला विश्वविद्यालय की स्थापना किया जाए ताकि देश की बेटियां पढ़ लिख कर और सशक्त एवं मजबूत बने ।इस मौके पर शशि भूषण सिंह, सुषमा वर्मा, बसन्त यादव, राकेश शर्मा, उपस्थित थे।

वैद्य प्रो. दिनेश्वर प्रसाद ने मधुमेह कारण एवं निवारण पर किया चर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। वैद्य प्रोफेसर दिनेश्वर प्रसाद, ने हर घर, हर दिन आयुर्वेद कार्यक्रम के तहत आज मधुमेह के उपर जानकारी देते हुए बताया की। समान्य रुप से शर्करा को मधुमेह कहा जाता हैं। जो किसी भी उम्र के लोगों को वगैर तकलीफ हो सकता हैं। ये रोग प्रायः बहुत दिनों तक ज्ञात नहीं हो पाता है। किसी भी रोग के जांच पड़ताल या लम्बे समय कमजोरी बार बार मल त्याग की मुंह में सुरगम लम्बे समय से घाव न सुखने इत्यादि के लक्षण होने पर जांच के क्रम में इस रोग कामता चल जाता हैं।

पहले प्रायः यह रोग प्रोढावस्था हुआ करता था पर वर्तमान समय में बच्चे, नवजवान, किसी को हो सकता हैं। इसका एक कोई खास कारण नहीं होता है। बल्कि अनेकों कारण हो सकते हैं। जिसमें मुख्य रूप से व्यायाम की कमी, अत्यधिक रूप से मिदारको का सेवन, अत्यधिक तनाव, मोटापन, इत्यादि के कारण माना गया हैं। परन्तु आयुर्वेद में लम्बे समय तक कड़वा,चिंता, एवं कषौधा रस मुक्त आहार का ना सेवन करना या कम मात्रा में सेवन करना, एवं शुक्र का अति क्षार वातर (वातवर्धक) आहार का लम्बे समय तक प्रयोग, फास्ट एवं जंक फूड, कोल्ड ड्रिंक, एवं मैदा मुक्त पदार्थो एवं नशिले पदार्थो का सेवन मधुमेह के कारण हो सकता हैं।

आयुर्वेद मतानुसार इससे निवारण वचाव एवं इलाज के लिए,मधुर, कटु, तिक्त,कमाया युक्त याहार एवं औषधियों का नियमित प्रयोग,यासन, प्राणायाम एवं शारीरिक तथा मानसिक व्यायाम कर इस रोग से माना जा सकता हैं। आयुर्वेद के अनुसार दौबलंय (मोटे) कन्तियो के अलग अलग एवं यतिकृथ एवं कमजोर लोगों के लिए अलग अलग इलाज की परामर्श संहिताओं में हैं ।पुरूष के प्रकृतिर वात,पित कफ या हु -दात दोसो के आधार पर भी अलग अलग लोगों की अलग अलग चिकित्सा के लिए निर्देश दिया गया है। मधुमेह के कारण शरीर के किसी भी भाग एवं यवयत में विवृतिया दुल्यंत हो सकती हैं।

अतः रुप उन व्याधियों को भी ध्यान में रखते हुए अलग अलग इलाज देने की जरूरत होती हैं ।यतला, हरे, वहेरा,जिकला,निम, गिलोय, जामुन, गुड़ मार ,शिलाजित, पनीर का फुल, चिरायता,मेथी,बेलपत्र इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता हैं।

उत्तर बिहार के जिलों में 14-15 मार्च को आसमान में छाए रहेंगे बादल, हो सकती है बूंदाबांदी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार अगले 14*एवं 15मार्च को उत्तर बिहार के कई जिलों में आसमान में बादल छाए रहेंगे और हल्की बूंदाबांदी की भी सम्भावना है। पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30 .9 एवं 13.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 80 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 52 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.3 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 30 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 18.8 एवं दोपहर में 32.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया । इस अवधि में मौसम शुष्क रहा। ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू० पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 11-15 मार्च, 2023 तक के मौसम पूवार्नुमान के अनुसार,उत्तर बिहार के जिलो में 14-15 मार्च के आसपास आसमान में गरज वाले हल्के से मध्यम बादल बन सकते है। जिसके प्रभाव से सिवान, वैशाली तथा मुजपफरपुर जिलों के 1-2 स्थानों पर बूंदा-बूंदी हो सकती है। अन्य जिलों में इसकी सम्भावना कम है ।इस अवधि में अधिकतम तापमान 35 से 33 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 17 से 19 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 8--12 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से अगले एक-दो दिन पुरवा हवा उसके बाद पछिया हवा चलने की सम्भावनाहै। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

जनक्रांति दिवस की 64वीं बर्ष गांठ पर तिब्बत की निर्वासित सरकार को मान्यता देने की मांग

मुजफ्फरपुर। भारत -तिब्बत मैत्री संघ की बिहार इकाई ने केन्द्र सरकार ने तिब्बत की निर्वासित सरकार को मान्यता दिए जाने की मांग की है। आज तिब्बत जनक्रांति की 64 वीं बर्षगांठ पर भारत -तिब्बत मैत्री संघ द्वारा जारी एक प्रेस नोट में कहा गया है कि10मार्च 2023 को तिब्बत जनक्रांति दिवस का 64 वाँ वर्षगांठ है। चीन ने 1949 से 1959 के समयावधि में तिब्बत पर कब्जा कर लिया। 10 मार्च 1959 को चीनी शासकों द्वारा परम पावन दलाई लामा के अपहरण का षडयंत्र रचा गया था। इस दिन ल्हासा में चीनी आधिपत्य के विरुद्ध तिब्बती जनता उठ खड़ी हुई हजारों तिब्बती जनता ने परम पावन दलाई लामा के महल को उनकी सुरक्षा के लिए घेर लिया था। परम पावन दलाई लामा के शांतिप्रयास के बावजूद चीनी सैनिकों और तिब्बती जनता के बीच लड़ाई छिड़ गयी। इस आजादी की लड़ाई में हजारों तिब्बती नागरिकों ने दलाई लामा जी की सुरक्षा और तिब्बत की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया।

डूबने की कगार पर पहुंचा सिलिकॉन वैली बैंक, सिल्वरगेट कैपिटल के बाद दूसरा बड़ा झटका

नई दिल्ली, एजेंसी। अमेरिकी शेयर बाजार के लिए बीते 24 घंटे बेहद अहम रहे हैं। सिलिकॉन वैली बैंक की गिरती संपत्ति ने निवेशकों में खलबली मचा दी है। सिलिकॉन वैली बैंक के शेयरों में 60 फीसद से अधिक की गिरावट के बाद बैंक का मार्केट में बने रहना चुनौतीपूर्ण हो गया है। चिंताओं के बीच एसवीबी फाइनेंशियल के सीईओ ग्रेग बेकर ने निवेशकों से धैर्य रखने को कहा है। बेकर ने बैंक के ग्राहकों से कहा कि जिस तरह से बैंक ने पिछले 40 वर्षों में अपने ग्राहकों की सेवा की है, उसका कोई दूसरा उदहारण मिलना मुश्किल है। द फंड में मैनेजिंग पार्टनर जेनी फील्डिंग ने कहा कि वह बैंक के साथ स्थिति को करीब से नजर रखे हुए है, लेकिन उसने अभी तक अपनी पोर्टफोलियो कंपनियों को सलाह नहीं दी है कि कैसे आगे बढ़ना है।

वॉलस्ट्रीट पर टूटे बैंकों के शेयर

वॉल स्ट्रीट पर बैंकों के शेयर तेजी से धड़ाम हुए। विश्लेषकों के अनुसार, फिलहाल इन बैंकों के लिए तत्काल जोखिम नहीं है, लेकिन शेयरों का इस तरह गिरना उन्हें आगे संकट में डाल सकता है। सिल्वरगेट कैपिटल कॉर्प के अचानक बंद होने और एसवीबी फाइनेंशियल ग्रुप की जल्दबाजी में धन उगाहने से अमेरिकी बैंक शेयरों में गिरावट आई है। निवेशक पूछ रहे हैं कि क्या यह एक बड़ी समस्या की शुरुआत हो सकती है?

सिल्वरगेट कैपिटल कॉर्प और एसवीबी फाइनेंशियल ग्रुप का संकट असामान्य है। इन दोनों के ग्राहकों में ज्यादातर ऐसे लोग शामिल थे, जो जल्दी से पैसा निकालते थे। बढ़ती ब्याज दरों ने बैंकों को कम ब्याज वाले बॉन्ड से भर दिया है, जो बिना नुकसान के जल्दबाजी में नहीं बेचा जा सकता है। इसलिए यदि बहुत से ग्राहक एक साथ अपनी जमा राशि निकालने लगते हैं तो बैंकों के सामने नकदी का संकट पैदा हो जाता है। एसएंडपी 500 फाइनेंशियल इंडेक्स में प्रमुख बैंकों के शेयर गुरुवार को 4.1प्रतिशत नीचे आ गए। 2020 के बाद से यह सबसे खराब दिन है। सांता क्लारा स्थित सिलिकॉन वैली बैंक के शेयर 60 प्रतिशत गिर गए। सैन फ्रांसिस्को में फर्स्ट रिपब्लिक बैंक के शेयर 17 प्रतिशत गिर गए।

धराशायी हुए बैंकों के शेयर

एसएंडपी बैंकिंग इंडेक्स 4.7 प्रतिशत गिरा। बेवर्ली हिल्स स्थित पीएसीवेस्ट बैनकॉर्प का प्रदर्शन सबसे खराब था, जो 25 प्रतिशत नीचे था। इक्विटी निवेशकों ने फेडरल रिजर्व की ब्याज दर में वृद्धि से बचने के लिए वित्तीय शेयरों में खूब पैसा लगाया। उन्हें उम्मीद थी कि इससे उनकी कमाई बढ़ेगी, लेकिन यह उनके लिए झटके देने वाला रहा। एसवीबी ने अपने पोर्टफोलियो में बिक्री के लिए उपलब्ध सभी शेयरों को लगभग बेच दिया। लेकिन ये उसकी जरूरतों से बहुत कम था। सिल्वरगेट में समस्या डिपॉजिट पर चलने की थी जो पिछले साल शुरू हुई थी। तेजी से बिकने वाली प्रतिभूतियों से होने वाले नुकसान के बाद, फर्म ने बुधवार को अपना ऑपरेशन बंद करने की योजना की घोषणा की।

एफडी पर तगड़ा ब्याज दे रहे हैं ये सरकारी बैंक, आपको हो सकता है जबरदस्त मुनाफा

नई दिल्ली, एजेंसी। द्वारा रेपो दर लगातार बढ़ाने से एफडी में निवेश इन दिनों बेहद फायदेमंद हो गया है। अगर आप भी कम पैसा लगाकर निवेश का बेहतर विकल्प तलाश रहे हैं तो आपके लिए ये एक खुशखबरी है। एफडी के रेट्स वरिष्ठ नागरिकों के लिए आमतौर पर अधिक होते हैं। ऐसे में उनके लिए ये एक सुनहरा मौका है।

भारत में वार्षिक उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति जनवरी 2023 में बढ़कर 6.52 प्रतिशत हो गई, जो दिसंबर में 5.72 प्रतिशत थी है। इसका मतलब यह हुआ कि महंगाई अब भी सुरसा की तरह मुंह फैलाये खड़ी है। अधिकांश बैंक और एनबीएफसी सावधि जमा यानी एफडी पर वरिष्ठ नागरिकों को आम नागरिकों से अधिक ब्याज देते हैं। वरिष्ठ नागरिक अब 5 लाख तक की जमा राशि पर डीआईसीजीसी कवर के अलावा महंगाई को मात देने वाला रिटर्न पा सकते हैं।

आईटेल ने लॉन्च किया ए60 स्मार्टफोन

नई दिल्ली, एजेंसी। 8 हज़ार से नीचे वाले सेगमेन्ट में अपने पोर्टफोलियो को सशक्त बनाते हुए भारत के सबसे पसंदीदा ब्राण्ड्स में से एक आईटेल ने 'सेगमेन्ट में पहली बार' पावर पैक्ड स्मार्टफोन आईटेल ए60 का लॉन्च किया है। आईटेल ए60 'सेगमेन्ट में पहली बार पेश किए गए' फीचर्स के साथ आता है जो लम्बी चलने वाली बैटरी एवं ड्यूल सिक्योरिटी के साथ यूज़र को बेजोड़ अनुभव प्रदान करता है। 6.6 इंच डिस्प्ल, पावरफुल 5000 एमएएच बैटरी और फिंगरप्रिन्ट सेंसर जैसे फीचर्स के साथ आईटेल ए60 रु 5999 की कीमत पर उपलब्ध है। टेक्नोलॉजी को हर किसी के लिए सुलभ एवं किफ़ायती बनाने के लिए प्रतिबद्ध कंपनी के रूप में आईटेल ने एक बार फिर से ए60 के साथ नए मानक स्थापित किए हैं, जो अपने सेगमेन्ट में गेम चेंजर साबित होगा। इस लॉन्च पर बात करते हुए आईटेल इंडिया के सीईओ श्री अरीजीत तालपात्रा ने कहा, ''एक ब्राण्ड के रूप में हम समझते हैं कि भारत में आज भी 300 मिलियन लोग ऐसे हैं जो डिजिटल सेवाओं को अपनाकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। ब्राण्ड की नई टेगलाईन रुजोड़े इंडिया का हर दिल के साथ, आईटेल टेक्नोलॉजी की क्षमता के द्वारा सभी भारतीयों को सशक्त बनाकर उनके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए प्रतिबद्ध है। आईटेल ए60 का लॉन्च हमारी इसी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, यह स्मार्टफोन आधुनिक टेक्नोलॉजी, महत्वाकांक्षी फीचर्स और शानदार लुक के साथ पहली बार स्मार्टफोन का इस्तेमाल करने वालों के लिए गेम चेंजर साबित होगा। इस लॉन्च के साथ हम एंट्री-लैवल स्मार्टफोन यूज़र्स को बेहतरीन फीचर्स से युक्त स्मार्टफोन उपलब्ध कराकर अपने मौजूदा स्मार्टफोन पोर्टफोलियो को और अधिक सशक्त बना रहे हैं।' आईटेल ए60 ड्यूल सिक्योरिटी फीचर्स के साथ अपने यूज़र को फिंगरप्रिन्ट सेंसर या फेस रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी का विकल्प देता है, जिससे यूज़र की सुरक्षा कई गुना बढ़ जाती है और उनका फोन पूरी तरह से सुरक्षित रहता है। स्मार्टफोन सेगमेन्ट में पहली बार 6.6 इंच एचडी़ वॉटर ड्रॉप फुलस्क्रीन डिस्प्ले के साथ डिस्प्ले का शानदार अनुभव प्रदान करता है।

टाटा समूह की इस कंपनी ने आईपीओ के लिए सेबी में डीआरएचपी दाखिल किया

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीओ के दौरान ओएफएस के तहत टाटा मोटर्स की ओर से 81,133,706 शेयर, अल्फा टीसी होल्डिंग्स की ओर से 9,716,853 शेयर जबकि टाटा कैपिटल ग्रोथ फंड की ओर से 4,858,425 शेयर बेचे जाएंगे। ये शेयर टाटा टेक्नोलॉजीज के पेडअप कैपिटल में तीनों कंपनियों के शेयरों के क्रमशः 20प्रतिशत, 2.40प्रतिशत और 1.20 प्रतिशत के बराबर हैं। टाटा समूह ने टाटा टेक्नोलॉजीज का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लाने के लिए बाजार नियामक सेबी के पास दस्तावेज जमा कराए हैं। आईपीओ विशुद्ध रूप से प्रमोटर टाटा मोटर्स और दो अन्य मौजूदा शेयरधारकों की ओर से की गई बिक्री पेशकश होगी और इसमें शेयरों का कोई नया निर्गम नहीं किया जाएगा। टाटा मोटर्स ने कहा, हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि टाटा मोटर्स लिमिटेड की सहायक कंपनी टाटा टेक्नोलॉजीज ने कंपनी को सूचित किया है कि उसने आज भारतीय प्रतिभूति व विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम के लिए नौ 9 मार्च 2023 को अपना मसौदा मसौदा रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस दाखिल किया है। यह आईपीओ ऑफर फॉर सेल के जरिए लाया जाएगा और इसके तहत 95,708,984 इक्विटी शेयरों की बिक्री की जाएगी। कंपनी के पेडअप शेयर कैपिटल का यह 23.60 प्रतिशत होगा। फिलहाल टाटा टैक्नोलॉजीज में टाटा मोटर्स की 74.42 प्रतिशत, अल्फा टीसी होल्डिंग्स प्रा लिमिटेड (टाटा कैपिटल एडवाइजर्स की ओर से प्रबंधित सिंगापुर स्थित इनवेस्टमेंट फर्म) की 8.96 प्रतिशत जबकि टाटा कैपिटल ग्रोथ फंड की 4.48 प्रतिशत प्रतिशत की हिस्सेदारी है। आईपीओ के दौरान ओएफएस के तहत टाटा मोटर्स की ओर से 81,133,706 शेयर, अल्फा टीसी होल्डिंग्स की ओर से 9,716,853 शेयर जबकि टाटा कैपिटल ग्रोथ फंड की ओर से 4,858,425 शेयर बेचे जाएंगे। ये शेयर टाटा टेक्नोलॉजीज के पेडअप कैपिटल में तीनों कंपनियों के शेयरों के क्रमशः 20प्रतिशत, 2.40 प्रतिशत और 1.20 प्रतिशत के बराबर हैं। बता दें कि पिछले साल दिसंबर में टाटा मोटर्स के बोर्ड ने टाटा टेक में इस विनिवेश योजना को मंजूरी दी थी।

दो हजार उत्पादों की क्वालिटी सुनिश्चित करना होगा जरूरी, खराब गुणवत्ता वाले आयात पर भी लगेगी रोक

नई दिल्ली। वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय वस्तुओं की गुणवत्ता को लेकर काफी गंभीर है और जल्द ही बड़े पैमाने पर गुणवत्ता मानक के नए नियम को लागू करने की तैयारी चल रही है। वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को एक एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के कार्यक्रम में कहा कि जल्द ही 2000 उत्पादों को गुणवत्ता नियंत्रण के दायरे में लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि हमें घटिया स्तर के उत्पादों को रोकने की जरूरत हैं। हमें उत्पादों की गुणवत्ता पर फोकस करना है और उनके उत्पादन को बढ़ाना है। गोयल ने कहा कि अगले दो-तीन साल में गुणवत्ता के दायरे को बढ़ाने के लिए सख्त पैमाने को अपनाया जाएगा, ताकि घरेलू मैन्यूफैक्चरर्स को सही प्रतिस्पर्धा मिले जिससे उनका उत्पादन बढ़ेगा। गुणवत्ता नियंत्रण का नियम घरेलू व आयातित दोनों के लिए लागू होगा। अभी रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाले कई सारे घटिया माल को सस्ते दाम पर आयात करके घरेलू बाजार में बेचा जाता है। सस्ते दाम के घटिया माल के आयात से घरेलू निर्माता उनसे मुकाबला नहीं कर पाते हैं। खासकर चीन से रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाली बहुत सारे आइटम सस्ते दाम पर आयात किए जाते हैं। गोयल ने उद्योग जगत से गुणवत्ता सुनिश्चित करने के नियम बनाने में सरकार को सलाह देने के साथ यह भी बताने के लिए कहा कि वे किन-किन वस्तुओं को गुणवत्ता नियंत्रण के दायरे में लाना चाहते हैं।

बीआईएस नियम भी हुआ लागू

उन्होंने कहा कि उद्योग जगत की मदद से हम वस्तुओं की सही गुणवत्ता हासिल कर सकेंगे और घरेलू निर्माताओं की लागत में भी बेवजह बढ़ोतरी नहीं होगी। उन्होंने घरेलू उद्योग से उन कारणों को भी बताने के लिए कहा जिनसे घरेलू उद्योग पर विपरीत असर हो रहा है। सूत्रों के मुताबिक पिछले एक साल से आयातित वस्तुओं की गुणवत्ता पर खासा ध्यान दिया जा रहा है और कई आइटम के लिए बीआईएस नियम को लागू भी कर दिया गया है। अप्रत्यक्ष कर विभाग ने भी सैकड़ों ऐसे उत्पादों को चिन्हित किया है जिन्हें सस्ती दरों पर चीन से बड़ी मात्रा में आयात किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक ऐसी वस्तुओं के आयात को हतोत्साहित करने का काम शुरू हो गया है।

बिट्स पिलानी ने मुंबई में लॉन्च किया एक नए दौर का 'बिट्स लॉ स्कूल'

मुंबई, एजेंसी। भारत सरकार द्वारा 'इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस' का दर्जा हासिल करने वाले देश के शुरुआती विश्वविद्यालयों में से एक बिट्स पिलानी ने आज ग्रेटर मुंबई में बिट्स लॉ स्कूल के साथ कानूनी शिक्षा में कदम रखने का एलान किया। नए दौर के बिट्स लॉ स्कूल ने कानूनी शिक्षा के सभी पहलुओं की नए सिरे से कल्पना की है, जिसमें एक फ्लेक्सिबल और इंटरडिसिप्लीनरी पाठ्यक्रम होगा। साथ ही, सीखने की प्रक्रिया में एम्पथी और क्रिएटिविटी पर जोर दिया जाएगा। इसके अलावा, कार्यक्रमों में मजबूत डिजिटल आधार के साथ कानूनी लेखन और विद्वानों के शोध पर ध्यान केंद्रित करने का भी प्रयास रहेगा। संस्थान में विद्यार्थियों को उदारतापूर्वक छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाएगी। बिट्स लॉ स्कूल दो बेहद लोकप्रिय पांच वर्षीय एकीकृत डिग्री प्रोग्राम, बी.ए. एलएलबी (ऑनर्स) और बी.बी.ए. एलएलबी (ऑनर्स) उपलब्ध होंगे। मार्च 2023 से शुरू होने वाले प्रवेश के साथ पहला शैक्षणिक वर्ष 1 अगस्त 2023 से शुरू होगा। इस अवसर पर बिट्स पिलानी के चांसलर श्री कुमार मंगलम बिड़ला ने कहा, ''एक समान, विविध और समावेशी नॉलेज इकोनॉमी के रूप में भारत का उदय हमारे विश्वविद्यालयों और सीखने के विशेष केंद्रों के जरिये ही संभव होगा। एक प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में बिट्स पिलानी भी क्रिएटिव, मल्टीडिसिप्लीनरी और फ्यूचर रेडी लोगों की एक नई पीढ़ी के निर्माण का नेतृत्व करने के लिए बेहतर स्थिति में है। एक साहसिक नई दृष्टि और मिशन के साथ, बिट्स लॉ स्कूल स्थानीय और वैश्विक महत्व की समकालीन और उभरती समस्याओं को दूर करने के लिए कानूनी शिक्षा की पुनर्कल्पना करना चाहता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) और युवा भारतीयों की बढ़ती आकांक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए, बिट्स लॉ स्कूल विचारों को ढ़ालने वाला माध्यम बनेगा। वैश्विक स्तर पर हमारी शिक्षा की प्रतिष्ठा, बेजोड़ पाठ्यक्रम और प्रतिभाशाली फैक्लटी इच्छुक कानूनी पेशेवरों को अद्भुत तरीके से भविष्य के लिए तैयार करेगी। बिट्स लॉ स्कूल कानूनी बिरादरी, उच्च शिक्षा, व्यवसाय और नीति निर्माण के दिग्गजों से बौद्धिक मार्गदर्शन प्राप्त करेगा।

डिजिटल इंडिया का भाग बन रही जनता, यूपीआई से हर दिन का ट्रांजैक्शन 36 करोड़ से ज्यादा

आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास का खुलासा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने घोषणा की कि यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस के माध्यम से किए गए भुगतान पिछले एक साल में तेजी से बढ़े हैं। यूपीआई के माध्यम से किए गए लेनदेन फरवरी 2023 में 36 करोड़ को पार कर गए। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने घोषणा की कि यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस के माध्यम से किए गए भुगतान पिछले एक साल में तेजी से बढ़े हैं। यूपीआई के माध्यम से किए गए लेनदेन फरवरी 2023 में 36 करोड़ को पार कर गए। यह फरवरी 2022 में दर्ज 24 करोड़ से 50त्न अधिक है। इन लेनदेन का मूल्य ?6.27 लाख करोड़ है, जो फरवरी 2022 में दर्ज किए गए 5.36 लाख करोड़ से 17 प्रतिशत की वृद्धि है।

आरबीआई मुख्यालय में डिजिटल भुगतान जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ पर बोलते हुए, दास ने कहा कि मासिक डिजिटल भुगतान लेनदेन पिछले तीन महीनों के दौरान प्रत्येक माह 1,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। उन्होंने कहा कि भारत की भुगतान प्रणाली विश्व स्तर पर जानी जाती है, और कई देशों ने सफलता की कहानी को दोहराने में रुचि दिखाई है। दास ने यह भी खुलासा किया कि जनवरी 2023 में यूपीआई लेनदेन की संख्या 800 करोड़ से अधिक हो गई, और एनईएफटी (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर) ने 28 फरवरी को 3.18 करोड़ लेनदेन की अपनी उच्चतम दैनिक मात्रा का अनुभव किया। यूपीआई को 2016 में लॉन्च किया गया था और यह सबसे लोकप्रिय के रूप में उभरा है। भुगतान मोड, कुल डिजिटल भुगतान का 75त्न हिस्सा है।

डिजिटल भुगतान अवसंरचना की स्वीकृति 17 करोड़ टच पॉइंट से बढ़कर 26 करोड़ टच पॉइंट हो गई है, जो 53त्न की वृद्धि को दर्शाता है। दास ने देश में डिजिटल भुगतान को गहरा करने के लिए आरबीआई की प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए हर भुगतान डिजिटल मिशन शुरू किया।

भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस) ने बिल भुगतान को नकद/चेक से डिजिटल मोड में स्थानांतरित करना सुनिश्चित किया है, जबकि राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (एनईटीसी) प्रणाली ने टोल भुगतान को डिजिटल मोड में स्थानांतरित करने में मदद की है, जिससे दक्षता में कमी आई है। टोल प्लाजा पर प्रतीक्षा समय। नेशनल ऑटोमेटेड क्लियरिंग हाउस (एनएसीएच) प्रणाली ने सिस्टम में लीकेज को खत्म करते हुए डिजिटल रूप से प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) भुगतान की सुविधा प्रदान की है।

75 डिजिटल गांवों के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, दास ने घोषणा की कि आरबीआई ने 75 गांवों को गोद लेने का फैसला किया है, जिसमें ग्रामीण स्तर के उद्यमी शामिल हैं। इस कार्यक्रम के तहत पेमेंट सिस्टम ऑपरेटर्स (पीएसओ) 75 गांवों को गोद लेंगे और उन्हें डिजिटल भुगतान सक्षम गांवों में बदल देंगे। डिप्टी गवर्नर रबी शंकर, जो RBI में भुगतान निपटान प्रणाली विभाग के प्रमुख हैं, ने इस कार्यक्रम को संबोधित किया और कहा कि पिछले पांच वर्षों में डिजिटल भुगतान सालाना 15त्न बढ़ा है। शंकर ने अर्थव्यवस्था के वित्तीय औपचारिकरण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि पैसा किसी भी अर्थव्यवस्था के मूल में होता है। उन्होंने कहा कि आरबीआई का डिजिटल विजन 2025 यह है कि विभाग के 20 साल पूरे होने तक हर जगह, हर जगह और हर बार डिजिटल भुगतान सुनिश्चित किया जाए।

1 अप्रैल से 5 प्रतिशत महंगी हो जाएंगी मर्सिडीज की कारें:कंपनी ने 2 से 12 लाख रुपए बढ़ाने का ऐलान किया

नई दिल्ली, एजेंसी। लग्जरी कार ब्रांड मर्सिडीज बेंज इंडिया ने अपनी कारों की कीमतों में 2 से 12 लाख रुपए बढ़ाने का ऐलान किया है। कारों पर नई कीमतें 1 एक अप्रैल से लागू हो जाएंगी। कंपनी ने तीन महीनों में दूसरी बार अपनी कारों की कीमतें बढ़ाई हैं। इससे पहले जनवरी में मर्सिडीज की कीमतों में 5त्न की बढ़ोतरी की गई थी। मर्सिडीज बेंज इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर एंड CEO संतोष अय्यर ने गुरवार (9 मार्च) को न्यूज एजेंसी को बताया कि पिछले कुछ महीनों में यूरो की तुलना में रुपया कमजोर हुआ है। अक्टूबर में एक यूरो लगभग 78-79 रुपए का था, जो अब 87 रुपए का हो गया है। इससे मैन्युफैक्चरिंग कोस्ट बढ़ रही है। अगर हम ऐसा कदम नहीं उठाते हैं तो भारत में हमारा बिजनेस प्रभावित होगा। इस कारण कारों की कीमतों में 5प्रतिशत का इजाफा करना पड़ रहा है।

लग्जरी कार मेकर मर्सिडीज बेंज ने 23 फरवरी को अपने नेविगेशन एक्सपीरियंस को बेहतर बनाने के लिए गूगल के साथ लॉन्ग-टर्म स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप की अनाउंसमेंट की थी। कंपनी ने एक स्टेटमेंट में कहा था कि यह पार्टनरशिप मर्सिडीज-बेंज को एक ऐसा ड्राइविंग एक्सपीरियंस क्रिएट करने में मदद करेगी, जो लग्जरी कार के साथ गूगल मैप्स की इंफॉर्मेशन को जोड़ती है। इस पार्टनरशिप के साथ मर्सिडीज-बेंज अपने कस्टमर्स को गूगल द्वारा दिए जाने वाले प्लेस डिटेल्स जैसे शुरुआती नए फीचर्स मिलने शुरू गए हैं। कंपनी गूगल क्लाउड के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा और ओपन इंफ्रास्ट्रक्चर सॉल्यूशंस का यूज करके आगे भी कोलैबोरेशन करने पर सहमत हुई है। यह पार्टनरशिप यूट्यूब ऐप को मर्सिडीज-बेंज इंफोटेनमेंट सिस्टम में भी लाएगी।

24 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंची फ्यूल डिमांड, पेट्रोल की बिक्री सालाना आधार पर 8.9प्रतिशत बढ़ी, डीजल की खपत में 7.5त्न का इजाफा

नई दिल्ली, एजेंसी। फरवरी में भारत की फ्यूल डिमांड 24 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। सस्ते रूसी तेल से देश में इंडस्ट्रियल एक्टिविटी को भी बढ़ावा मिला है। फरवरी में ईंधन की खपत 5त्न से ज्यादा बढ़कर 4.82 मिलियन बैरल प्रति दिन (18.5 मिलियन टन) हो गई। इंडियन ऑयल मिनिस्ट्री के पेट्रोलियम पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल के रिकॉर्ड किए गए डेटा में ये जानकारी सामने आई है। PPAC को 1998 में शुरू किया गया था। फरवरी में पेट्रोल की बिक्री सालाना आधार पर 8.9प्रतिशत बढ़कर 2.8 मिलियन टन हो गई, जबकि डीजल की खपत 7.5 प्रतिशत बढ़कर 6.98 मिलियन टन हो गई। आंकड़ों के अनुसार, जेट ईंधन की बिक्री 43 प्रतिशत से अधिक बढ़कर 0.62 मिलियन टन हो गई। रसोई गैस या लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस की बिक्री 0.1प्रतिशत घटकर 23.9 लाख टन रह गई। सड़कों के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले बिटुमेन की बिक्री जनवरी की तुलना में फरवरी में 21.5 प्रतिशत बढ़ी, जबकि फ्यूल ऑयल का इस्तेमाल फरवरी में 5 प्रतिशत से थोड़ा ज्यादा घट गया। केपलर के लीड करूड एनालिस्ट विक्टर कटोना ने कहा कि मार्च में मांग 5.17 मिलियन बैरल पर डे होगी, और यह सीजनल मानसून-ड्रिवन स्लोडाउन के कारण अप्रैल-मई में 5 मिलियन bpd तक गिर जाएगी।

शुरुआती कारोबार में रुपया आठ पैसे टूटकर 82.14 प्रति डॉलर पर

मुंबई, एजेंसी। अमेरिकी मुद्रा में मजबूती के रुख के बीच शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में रुपया आठ पैसे टूटकर 82.14 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.12 प्रति डॉलर पर कमजोर स्थिति में खुलने के बाद और टूटकर 82.14 प्रति डॉलर पर आ गया। बृहस्पतिवार को रुपया 82.06 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। अन्य मुद्राओं की तुलना में अमेरिकी मुद्रा की मजबूती का आकलन करने वाला डॉलर सूचकांक 0.11 प्रतिशत गिरकर 105.18 पर आ गया। वैश्विक मानक ब्रेंट कच्चा तेल वायदा 0.54 प्रतिशत की गिरावट के साथ 81.15 डॉलर प्रति बैरल पर था।

बैंक ऑफ बड़ौदा के निदेशक मंडल ने बीएफएसएल में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी के विनिवेश को मंजूरी दी

नई दिल्ली, एजेंसी। बैंक ऑफ बड़ौदा के बोर्ड ने सहायक कंपनी बीओबी फाइनेंशियल सॉल्यूशंस में 49 प्रतिशत तक विनिवेश को मंजूरी दे दी। कंपनी ने बृहस्पतिवार को नियामकीय निकाय को दी गई सूचना में यह जानकारी दी। सूचना में कहा गया है, बैंक ऑफ बड़ौदा (बीओबी) के निदेशक मंडल ने अपनी 100 प्रतिशत स्वामित्व वाली सहायक कंपनी यानी बीओबी फाइनेंशियल सॉल्यूशंस लिमिटेड (बीएफएसएल) में बैंक की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी के विनिवेश और बीएफएसएल में बीओबी की शेयरधारिता हासिल करने के लिए उपयुक्त निवेशकों-रणनीतिक भागीदारों से रुचि पत्र आमंत्रित करने वाला विज्ञापन जारी करने को मंजूरी दे दी है।

बीओबी के पास वर्तमान में बीएफएसएल की कुल इक्विटी शेयर पूंजी का 100 प्रतिशत हिस्सा है। सूचना के अनुसार लेनदेन की प्रक्रिया और अन्य प्रासंगिक विवरणों के बारे में विवरण 10 मार्च, 2023 को प्रकाशित किया जाएगा।

अंतिम टेस्ट के दूसरे दिन

ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में लगाया रनों का अंबार, बनाए 480 रन, अश्विन ने झटके 6 विकेट

अहमदाबाद (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने भारत के खिलाफ चौथे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन पहली पारी में 480 रन बना दिए। ऑस्ट्रेलिया की ओर से उस्मान ख्वाजा ने 180 जबकि कैमरन ग्रीन ने 114 रन की पारी खेली। भारत की तरफ से रविचंद्रन अश्विन ने छह जबकि मोहम्मद शमी ने दो विकेट चटकाए। भारत ने बिना विकेट खोये 36 रन बना लिए थे।

इससे पहले सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा (104 नाबाद) के शानदार शतक की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने भारत के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के चौथे टेस्ट के पहले दिन गुरुवार को चार विकेट के नुकसान पर 255 रन बनाकर मैच पर मजबूत पकड़ बना ली।

सीरीज में दो अर्द्धशतक बना चुके ख्वाजा ने भारत में पहला टेस्ट शतक जड़ते हुए 251 गेंद पर 15 चौकों की बदौलत 104 रन बनाए। ख्वाजा पिछले 12 साल में भारत में टेस्ट शतक जड़ने वाले पहले ऑस्ट्रेलियाई वामहस्त बल्लेबाज हैं। इससे पहले माकर्स नॉर्थ ने 2010/11 दौरे पर बेंगलुरु टेस्ट में शतक जड़ा था। ऑस्ट्रेलिया के अन्य बल्लेबाज पिच पर पांव जमाने के बाद आउट होते गए, लेकिन कैमरन ग्रीन ने अंत में 64 गेंद पर आठ चौकों की मदद से 49 रन की पारी खेल डाली। स्टंप्स तक ख्वाजा और ग्रीन के बीच पांचवें विकेट के लिए 85 रन की साझेदारी हो चुकी है और दोनों क्रीज पर मौजूद हैं।

टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया को नरेंद्र मोदी स्टेडियम की पिच बाकी तीन मैचों से

बिलकुल अलग मिली। पिच ने पहले सत्र में स्पिन गेंदबाजों को अत्यधिक मदद नहीं दी। शुरुआती ओवरों में उमेश यादव की गेंद दो बार ट्राविस हेड के बल्ले को छूती हुई भी निकली लेकिन विकेटकीपर श्रीकर भरत उसे लपक नहीं सके। हेड ने इन दो जीवनदानों का लाभ उठाते हुए आक्रामकता दिखाई और पहले विकेट के लिये ख्वाजा के साथ 15 ओवर में 61 रन की साझेदारी की। भारतीय स्पिनरों ने हालांकि अनुशासनात्मक गेंदबाजी जारी रखी और हेड 32 रन बनाकर रविचंद्रन अश्विन (57/1) का शिकार हो गए।

लंच से पहले मोहम्मद शमी (65/2) ने मार्नस लाबुशेन को आउट करके भारत की मैच में वापसी करवाई। लंच के बाद हालांकि ख्वाजा और कप्तान स्टीव स्मिथ की धैर्यवान बल्लेबाजी ने भारतीय गेंदबाजों को थकाने का काम किया। ख्वाजा ने पारी के 49वें ओवर में चौका लगाकर अपना अर्द्धशतक पूरा किया। भारतीय गेंदबाजों के अथक प्रयासों के बावजूद उन्हें कोई सफलता नहीं मिली और ख्वाजा-स्मिथ की जोड़ी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने चाय तक और कोई विकेट गंवाये बिना 149 रन बना लिये। स्मिथ-ख्वाजा के बीच 79 रन की साझेदारी के बाद भारत को विकेट की सख्त जरूरत थी जो उसे रवींद्र जडेजा (49/1) ने दिलाया। जडेजा की एक गेंद उम्मीद से कम उछली और स्मिथ के बल्ले से छिटककर विकेटों में जा टकराई।

स्मिथ 135 गेंद पर तीन चौकों के साथ 38 रन बनाकर आउट हुए। स्मिथ के करियर में ऐसा पहली बार हुआ है कि वह छह पारियों में अर्द्धशतक ना बना सके हों। स्मिथ का विकेट गिरने के कुछ देर बाद शमी ने पीटर हैंड्सकॉम्ब (17) को भी सस्ते में पवेलियन भेज दिया, हालांकि इसके बाद ग्रीन और ख्वाजा की जोड़ी विकेट पर जम गयी। ग्रीन ने समय-समय पर खराब गेंदों को निशाना बनाया, जबकि ख्वाजा धैर्य के साथ शतक की ओर बढ़ते रहे। ख्वाजा ने दिन के आखिरी ओवर की पहली गेंद पर चौका जड़कर अपना शतक पूरा किया। वह पिछले पांच साल में भारतीय सरजमीन पर पूरा दिन बल्लेबाजी करने वाले पहले बल्लेबाज हैं। इससे पहले दिनेश चांदीमल ने 2017 में दिल्ली टेस्ट के तीसरे दिन 25 रन से पारी आगे बढ़ाते हुए नाबाद 147 रन बनाये थे।

भारत – रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, चेतेश्वर पुजारा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, श्रीकर भरत (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, रविचंद्रन अश्विन, उमेश यादव, मोहम्मद शमी

ऑस्ट्रेलिया–ट्रैविस हेड, उस्मान ख्वाजा, मारनस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ (कप्तान), पीटर हैंड्सकॉम्ब, कैमरन ग्रीन, एलेक्स केरी (2विकेट कीपर), मिचेल स्टार्क, मैथ्यू कुह्नमैन, टॉड मर्फी, नाथन लियोन

बढ़ते फ्रेंचाइजी क्रिकेट और टेस्ट क्रिकेट में संतुलन तलाशने की जरूरत है : सौरव गांगुली

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व कप्तान और मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) की विश्व क्रिकेट समिति (डब्ल्यूसीसी) के सदस्य सौरव गांगुली ने क्रिकेट खेलने वाले देशों से बढ़ती फ्रेंचाइजी क्रिकेट और टेस्ट क्रिकेट के बीच सही संतुलन तलाशने का आग्रह किया है। गांगुली ने कहा है कि टेस्ट क्रिकेट खेल का सबसे महत्वपूर्ण रूप है और यह खेल में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं की पहचान करने में मदद करता है।

गांगुली की टिप्पणी दुबई में विश्व क्रिकेट समिति की बैठक के बाद आई है, जहां एमसीसी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की रक्षा के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग करते हुए बैठक रखी थी। गांगुली ने कहा, मैं अब भी मानता हूं कि टेस्ट क्रिकेट क्रिकेट के लिए सबसे बड़ा मंच है। यही वह जगह है जहां आपको महान खिलाड़ी मिलते हैं, और इसीलिए इसे टेस्ट कहा जाता है। यह कौशल की परीक्षा है।

उन्होंने आगे कहा, टेस्ट क्रिकेट हमेशा शिखर पर बना रहना चाहिए और मुझे यकीन है कि देश इसे महत्व देंगे और फ्रेंचाइजी क्रिकेट और टेस्ट क्रिकेट के बीच सही संतुलन बनाएंगे। एमसीसी ने इस बैठक के बाद कहा था कि इसका उद्देश्य यह जांचना था कि फ्रेंचाइजी लीग से भरे व्यस्त वैश्विक क्रिकेट के बीच अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को कैसे संरक्षित किया जा सकता है और हमने यह भी विचार किया कि अगले 10 साल में वैश्विक क्रिकेट कैसा दिखेगा। एमसीसी ने बयान में कहा, 2023 में पुरुष क्रिकेट फ्रेंचाइजी टूर्नामेंट्स से भरा पड़ा है। यह आईसीसी और द्विपक्षीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के भविष्य के लिए प्रतिस्पर्धा करता है। इस साल पूरा क्रिकेट शेड्यूल व्यस्त है और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट और फ्रेंचाइजी टूर्नामेंट्स की तारीखों में टकराव है, एकमात्र समय अक्टूबर और नवंबर में टकराव नहीं हो रहा, जब भारत में वनडे क्रिकेट वर्ल्ड कप होगा। यह टकराव हर साल होता है, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट और फ्रेंचाइजी क्रिकेट लगातार टकरा रहा है।

अदालत के गलियारे में नहीं होने चाहिए खिलाड़ी : दिल्ली उच्च न्यायालय

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने आगामी एशियाई खेलों के लिए भारत का प्रतिनिधित्व करने के मद्देनजर घुड़सवारों की चयन प्रक्रिया पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि खिलाड़ियों को अदालत के गलियारे में नहीं बल्कि स्टेडियमों में होना चाहिए और जिनका उद्देश्य देश को गौरवान्वित करना है, उन्हें खेल महासंघों द्वारा मानसिक पीड़ा का शिकार नहीं बनाया जाना चाहिए। न्यायमूर्ति गौरांग कांत ने तीन घुड़सवारों की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि वह भारतीय घुड़सवारी महासंघ (ईएफआई) के प्रतिनिधियों में पेशेवर रवैये की दयनीय स्थिति से काफी दुखी थे और मौजूदा मामला ऐसा लगता है कि जिसमें एक संस्था अपनी पूरी ताकत कुछ व्यक्तिगत खिलाड़ियों को टूर्नामेंट से बाहर करने के लिये इस्तेमाल कर रही है। चिराग खंडाल, शशांक सिंह कटारिया और यश नेनसी की याचिका महासंघ द्वारा 19वें एशियाई खेलों के लिए चयन मानंदड में शुरू किये गये कुछ बदलावों से संबंधित है। इन एशियाई खेलों का आयोजन इस साल सितंबर-अक्टूबर में चीन के हांगजोऊ में किया जाएगा।

अदालत ने 7 मार्च को जारी किए गए अपने आदेश में कहा, 'कोई भी (खिलाड़ी) जो अपने देश का गौरवान्वित करने का लक्ष्य रखता है, उसे महासंघ और इसके अधिकारियों द्वारा मानसिक पीड़ा का शिकार नहीं बनाया जाना चाहिए। पिछले 18वें एशियाई खेलों में भारत की पदक तालिका में निचले स्थान की स्थिति को देखते हुए हमारे सारे प्रयास अपने खिलाड़ियों को सहयोग भरा वातावरण मुहैया कराने के होने चाहिए ताकि उनका ध्यान सिर्फ अपने प्रदर्शन में सुधार करने और टूर्नामेंट में शीर्ष स्थान हासिल करने पर लगा रहे।

भारत-आस्ट्रेलिया

तीसरे वनडे के लिए टिकटों की बिक्री 13 मार्च से, जानें कैसे खरीद सकेंगे

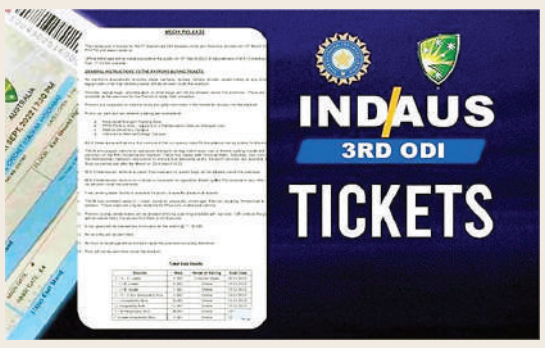

चेन्नई (एजेंसी)। भारत और आस्ट्रेलिया के बीच यहां खेले जाने वाले तीसरे और आखिरी एक दिवसीय मैच के लिए टिकटों की बिक्री 13 मार्च से शुरू होगी। एमए चिदंबरम स्टेडियम में 22 मार्च को होने वाले मैच के लिए ऑनलाइन टिकटों की बिक्री 13 मार्च से शुरू होगी। तमिलनाडु क्रिकेट संघ (टीएनसीए) ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि पेटीएम और इनसाइडर से ऑनलाइन टिकट खरीदे जा सकते हैं। इसके अलावा ऑफलाइन टिकट जनता के लिए 18 मार्च से उपलब्ध कराए जाएंगे जो स्टेडियम के बाहर बने काउंटर से खरीदे जा सकते हैं। टीएनसीए ने शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिए आई लोअर स्टैंड में सीटों की व्यवस्था की है, जिनको अपने स्थान पर पहुंचने के लिये व्हीलचेयर की सेवा उपलब्ध होगी। मुख्यमंत्री एम के स्टालिन क्रिकेट मैच के दौरान दो नए स्टैंडों का अनावरण करेंगे। उधर दूसरी ओर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की तैयारी में जुटे भारतीय टीम के पूर्व कप्तान और चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी भारत ऑस्ट्रेलिया वनडे में दर्शक की भूमिका में नजर आ सकते हैं। चेन्नई करीब तीन साल बाद अंतरराष्ट्रीय एक दिवसीय मैच की मेजबानी कर रहा है।

तीसरे वनडे में आ सकते हैं धोनी, इन चीजों को अंदर ले जाने पर लगा बैन

चेन्नई (एजेंसी)। भारत और आस्ट्रेलिया के बीच यहां खेले जाने वाले तीसरे और आखिरी वनडे मैच के लिए टिकटों की बिक्री 13 मार्च से शुरू होगी। एमए चिदंबरम स्टेडियम में 22 मार्च को होने वाले मैच के लिए ऑनलाइन टिकटों की बिक्री 13 मार्च से शुरू होगी। तमिलनाडु क्रिकेट संघ (टीएनसीए) ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि पेटीएम और इनसाइडर से ऑनलाइन टिकट खरीदे जा सकते हैं। इसके अलावा ऑफलाइन टिकट जनता के लिए 18 मार्च से उपलब्ध कराए जाएंगे जो स्टेडियम के बाहर बने काउंटर से खरीदे जा सकते हैं। टीएनसीए ने शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के लिए आई लोअर स्टैंड में सीटों की व्यवस्था की है, जिनको अपने स्थान पर पहुंचने के लिये व्हीलचेयर की सेवा उपलब्ध होगी। मुख्यमंत्री एम के स्टालिन क्रिकेट मैच के दौरान दो नए स्टैंडों का अनावरण करेंगे।

उधर दूसरी ओर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की तैयारी में जुटे भारतीय टीम के पूर्व कप्तान और चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी भारत आस्ट्रेलिया वनडे में दर्शक की भूमिका में नजर आ सकते हैं। चेन्नई करीब तीन साल बाद अंतरराष्ट्रीय एक दिवसीय मैच की मेजबानी कर रहा है। टीएनसीए ने दर्शकों के लिये कई सामान्य निर्देश जारी किए हैं। स्टेडियम में डिजिटल कैमरा, लैपटॉप, टैबलेट, ड्रोन, पावर बैंक या मोबाइल फोन के अलावा किसी भी अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण सहित किसी भी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण की अनुमति नहीं दी जाएगी। परिसर के अंदर हेलमेट, लैपटॉप बैग, छाता और अन्य बैग लाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। दर्शकों के कीमती सामान रखने के लिए परिसर में कोई लॉकर उपलब्ध नहीं है। दर्शकों से अनुरोध है कि वे स्टेडियम में प्रवेश के लिए टिकट में उल्लिखित प्रवेश और द्वार को ध्यान में रखते हुए प्रवेश करें।

सार्वजनिक कार पार्क और दुपहिया पार्किंग कलैवनार आरंगम, पीडब्ल्यूडी पार्किंग स्थल, मद्रास विश्वविद्यालय परिसर और ओमंदुरार मेडिकल कॉलेज परिसर में उपलब्ध रहेंगे। इन सभी क्षेत्रों में मैचों के टिकट देखने आने वालों के लिए पहले आओ और पहले पाओ के आधार पर जगह मिलेगी। टीएनसीए ने चेन्नई मेट्रो, उपनगरीय ट्रेन सेवा और मेट्रोपॉलिटन ट्रांसपोट कॉरपोरेशन के साथ संपर्क किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि 22 मार्च को मैच से पहले और बाद में स्टेडियम के लिए पर्याप्त सार्वजनिक परिवहन सेवाएं उपलब्ध हों सकें। एम.ए. चिदंबरम स्टेडियम प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र है और परिसर के अंदर किसी भी तरह के प्लास्टिक बैग ले जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह तम्बाकू रहित क्षेत्र भी है और परिसर के अंदर सिगरेट, बीड़ी, गुटका, पान मसाला या किसी भी अन्य तंबाकू उत्पाद ले जाने की अनुमति नहीं होगी। स्टेडियम परिसर में जनता के लिए मुफ्त पेयजल सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

पिता उस्मान ख्वाजा ने जड़ा शतक, तो बेटियों ने यूं किया चियर

अहमदाबाद (एजेंसी)। बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के चौथे टेस्ट में ऑस्ट्रेलियाई सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा का बल्ला खूब चला। अहमदाबाद में खेले जा रहे इस टेस्ट में ख्वाजा भारतीय गेंदबाजी के आगे एक दीवार की तरह डट गए, उन्होंने पहले दिन नाबाद शतकीय पारी खेलने के बाद दूसरी दिन में अपनी जबरदस्त पारी को बरकरार रखा। हालांकि, वह अपने दोहरे शतक से

चूक गए। उन्होंने 422 गेंदों में 180 रनों की पारी खेली। इस जबरदस्त पारी के बाद जहां उन्हें सभी ऑस्ट्रेलियाई प्रशंसकों की तारीफें मिल रही हैं। वहीं इस टेस्ट में जब ख्वाजा ने शतक पूरा किया तो उनकी बेटियों आयशा राहिल ख्वाजा और आयला फोजिया मिशेल ने भी पिता को जमकर चियर किया। ख्वाजा के शतक पूरा करने पर उनकी पत्नी रेचल ख्वाजा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर तस्वीर साझा करते हुए बताया कि कैसे उनकी बेटियां अपने पिता का हौसला बढ़ा रही हैं। रेचल ने अपनी दोनों बेटियों की तस्वीर साझा की है, जिसमें वे पिता ख्वाजा को बल्लेबाजी करते हुए टीवी पर देख रही हैं और उन्हें चियर कर रही हैं। उनकी पत्नी ने कैप्शन में लिखा है, छोटी सपोर्टर्स घर पर चियर कर रही हैं, हाय डैडा।

इंडोनेशिया को रौंदकर भारत ने एशियाई कप की ओर बढ़ाया कदम

वियत ट्राई सिटी (एजेंसी)। भारतीय अंडर-20 महिला फुटबॉल टीम ने एएफसी अंडर-20 एशियाई कप क्वालीफायर में इंडोनेशिया को 6-0 से रौंदकर प्रतियोगिता में लगातार दूसरी जीत दर्ज की। वियत ट्राई स्टेडियम पर खेले गये एकतरफा ग्रुप-एफ मुकाबले में मेमोल रॉकी की टीम ने दोनों अर्द्धों में तीन-तीन गोल करके अपने वर्चस्व का बराबर विभाजन किया। नेहा (चौथा, 21वां मिनट) और सुमति कुमारी (74वां, 90+1वां मिनट) ने भारत के लिये दो-दो गोल किये, जबकि काजोल डिसूज़ा (45वां मिनट) और अपूर्णा नरज़री (56वां मिनट) ने एक-एक गोल जमाया। पिछले मैच में सिंगापुर को 7-0 से रौंदने वाली भारतीय टीम छह अंकों के साथ ग्रुप तालिका में पहले स्थान पर है। भारत का अगला मुकाबला शनिवार को मेज़बान वियतनाम से होगा। ग्रुप स्टेज के अंत में तालिका के शीर्ष पर रहने वाली टीम क्वालीफायर के दूसरे चरण के लिये क्वालीफाई करेगी, जिसका आयोजन जून 2023 में होगा। भारत अंडर-20 महिला एकादश- अंशिका, पूर्णिमा कुमारी, हेमम शिल्की देवी (साहिना प्रतिस्थापन 90वां मिनट), अष्टम उरांव, लिशम बबीना देवी (तानिया कांति प्रतिस्थापन 78वां मिनट), काजोल डिसूजा, अनीता कुमारी (मौसुमी मुर्मू प्रतिस्थापन 78वां मिनट), नेहा (सुमति कुमारी प्रतिस्थापन 64वां मिनट), शुभांगी सिंह, नीतू लिंडा (शैलजा प्रतिस्थापन 90वां मिनट), अपर्णा नार्जरी।

रोहित शर्मा को पसंद नहीं आई ईशान किशन की हरकत, किया सरेआम थप्पड़ मारने का प्रयास

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद टेस्ट के पहले दिन उस समय मजेदार घटना देखने को मिली, जब भारतीय कप्तान रोहित शर्मा को ईशान किशन की एक हरकत पंसद नहीं आई। इसके बाद कप्तान रोहित ने किशन को सरेआम थप्पड़ मारने का प्रयास भी किया, लेकिन ये सब मजाक तक था।

दरअसल, हुआ ऐसा कि खेल के पहले दिन के दूसरे सत्र में, कीपर-बल्लेबाज किशन, जो प्लेइंग इलेवन का हिस्सा नहीं हैं, अपने साथियों के लिए पानी की बोतलें लेकर निकले। जैसे ही वह अपने वाटर बॉय के कर्तव्यों को पूरा करने के बाद वापस जाने लगे तो रोहित ने पानी की बोतल किशन को वापस सौंप दी। हालांकि, हड़बड़ी में किशन ने बोतल को जमीन पर गिरा दिया। कुछ मस्ती करने के मूड में, भारतीय कप्तान ने उन्हें बोतल गिराने के लिए थप्पड़ दिखाय और मजाकिया अंदाज में अपना हाथ उठाया। हालांकि यह सब अच्छे मूड में था।

फिर किशन ने गिरी हुई बोतल को उठाया और वापस चले गए। इसके बाद से इस घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। ऑस्ट्रेलिया ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2023 के अंतिम टेस्ट में टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी की, जो गुरुवार 9 मार्च से शुरू हुआ। पहले दिन कंगारूओं ने 4 विकेट पर 255 रन बनाए। वहीं दूसरे दिन उस्मान ख्वाजा (180) व कैमरून ग्रीन (114) के शतक की मदद से कंगारू टीम ने 8 विकेट नुकसान पर 450 से ज्यादा रन बटोर लिए।

उस्मान ख्वाजा ने खेली एक इनिंग में 400+ गेंदें, भारत में कोई ऑस्ट्रेलियाई नहीं कर पाया ऐसा, बनाए 180 रन

अहमदाबाद (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई ओपनर उस्मान ख्वाजा ने भारत के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के चौथे टेस्ट मैच में बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। वह भारत में सबसे ज्यादा गेंदों का सामना करने वाले विदेशी खिलाड़ी और ऑस्ट्रेलिया के पहले क्रिकेटर बन गए हैं। ख्वाजा ने अपनी पारी के दौरान कुल 422 गेंदों का सामना किया और 21 चौकों की मदद से 180 रन बना डाले। ऑस्ट्रेलियाई ओपनर की शतकीय पारी की वजह से चौथे और अंतिम टेस्ट मैच में कंगारू टीम 400 से ज्यादा का स्कोर बनाने में सफल रही। इसी के साथ ही ख्वाजा एक इनिंग में 400 के अधिक गेंदों का सामना करने वाले 8वें विदेशी खिलाड़ी बन गए। उन्होंने भारत में ऑस्ट्रेलियाई के रूप में एक इनिंग में सबसे ज्यादा गेंदें खेलने का रिकॉर्ड भी अपने नाम किया। इससे पहले ग्राहम यलोप, स्टीव स्मिथ, एलन बॉर्डर और शेन वॉर्टसन ने भारत में एक पारी में सबसे ज्यादा गेंदें खेली थी।

भारत में एक इनिंग में सबसे ज्यादा गेंदें खेलने वाले ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी

उस्मान ख्वाजा - 422, अहमदाबाद 2023
ग्राहम यलोप - 392, कोलकाता 1979
स्टीव स्मिथ - 361, रांची 2017
एलन बॉर्डर - 360, चैन्नई 1979
शेन वॉर्टसन - 338, मोहाली 2010

बल्लेबाजी करते उठा सीने में दर्द, 32 वर्षीय क्रिकेटर की मौत

सूरत (एजेंसी)। सूरत में 32 साल के युवक की मैच के दौरान मौत हो गई। एक रिपोर्ट के अनुसार निमेश अहीर केएनवीएसएस एकता ग्रुप द्वारा आयोजित आठ-टीम टूर्नामेंट में खेल रहा है। निमेश अहीर को 5 मार्च को सूरत के नर्तन गांव में मैच के दौरान सीने में दर्द होने लगा और वह जमीन पर गिर गया। यह घटना वेलुक गांव और नर्तन गांव के बीच टूर्नामेंट के फाइनल के दौरान हुई। कप्तान भाविक पटेल ने कहा, खिलाड़ी मैदान पर थे और निमेश अहीर ने 18 गेंदों में 41 रन बनाए जब उन्हें सीने में दर्द और सांस लेने में तकलीफ हुई। उन्हें सूरत के यूनाइटेड ग्रीन अस्पताल ले जाया गया, जहां पहुंचने पर उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। अहीर शादीशुदा थे और उनकी पत्नी और बेटी है। वह ट्रांसपोर्ट व्यवसाय था और उन्होंने जिला स्तर पर क्रिकेट भी खेला है। अहीर के शव को पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के लिए न्यू सिविल अस्पताल भेज दिया, जहां मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ डीपी मंडल ने मौत का कारण हार्ट अटैक बताया। उन्होंने कहा, हम पता लगा रहे हैं कि क्या उन्हें पहले कोई और बीमारी थी। इससे पहले अहमदाबाद में क्रिकेट खेलते समय एक क्रिकेटर की मौत हो गई थी। वसंत राठौड़ नामक 34 वर्षीय राज्य माल और सेवा कर (एसजीएसटी) विभाग में क्लर्क था और खेलते समय उसे दिल का दौरा पड़ था।

बीएनपी परिबास ओपन

मार्टिन एचवेरी को हराकर दूसरे दौर में पहुंचे एंडी मरे

इंडियन वेल्स (एजेंसी)। तीन बार के ग्रैंडस्लैम विजेता एंडी मरे ने गुरुवार को एक सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए टॉमस मार्टिन एचवेरी को हराकर बीएनपी परिबास ओपन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाई। मरे ने तीन घंटे से अधिक चले पहले दौर के मुकाबले में एचवेरी को 6-7, 6-1, 6-4 से हराया। मरे ने मौजूदा सत्र में निर्णायक तीसरे या पांचवें सेट में पहुंचे किसी मुकाबले को नहीं गंवाया है। मरे ने 2023 में तीसरे सेट में पहुंचने पर बेस्ट ऑफ थ्री सेट के अपने पांचों जबकि पांचवें सेट में पहुंचने पर बेस्ट ऑफ फाइव सेट के दोनों मुकाबले जीते हैं।

तीन ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाले स्टेन वावरिंका ने भी कैलिफोर्निया में हार्ड कोर्ट प्रतियोगिता में वापसी करते हुए तीन सेट तक चले मुकाबले में क्वालीफायर एलेक्सांद्र वुकिच को 6-4, 1-6, 6-1 से हराया। वावरिंका अगले दौर में 26वें वरीय मियोमिर केसमानोविच से भिड़ेंगे। बेन शेल्टन ने फाबियो फोगनिनी को 6-4, 6-1 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। महिला वर्ग में 2021 की अमेरिकी ओपन चैंपियन ऐमा राडुकानु ने डेंका कोविनिच को 6-2, 6-3 से हराया जबकि 2022 ऑस्ट्रेलियाई ओपन उप विजेता डेनियली कोलिन्स को 80वें नंबर की डेलमा गाल्फी ने 6-4, 6-4 से शिकस्त दी।

ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस की मां का निधन

ब्रेस्ट कैंसर से पीड़ित थीं, काली पट्टी बांधकर खेलने उतरे ख्वाजा और ग्रीन

अहमदाबाद (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई टीम के रेग्युलर कप्तान पैट कमिंस की मां मारिया कमिंस का निधन हो गया। वे लंबे समय से बीमार थीं। उन्हें ब्रेस्ट कैंसर था। मारिया पिछले कुछ दिनों से पैलेएटिव केयर में थीं। इसके चलते वे भारत दौरे को बीच में ही छोड़कर ऑस्ट्रेलिया लौट गए थे। वह दूसरे टेस्ट के बाद अपनी मां के पास लौट गए थे। कमिंस की मां के निधन पर शोक जाहिर करने के लिए ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज बांह में काली पट्टी बांधकर खेलने उतरे।

सीए ने सोशल पोस्ट में दी जानकारी – क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को एक सोशल पोस्ट पर यह जानकारी दी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने अपने ऑफिशियल ट्विटर हैंडल पर लिखा- मारिया कमिंस के निधन से हमें गहरा दुख हुआ है। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट की ओर से हम पैट कमिंस परिवार और उनके दोस्तों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट कोच ने अहमदाबाद में मैच शुरू होने से पहले खिलाड़ियों को एकत्रित कर पैट कमिंस के मां की निधन की सूचना दी।

बीसीसीआई ने भी व्यक्त की संवेदना – भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की ओर से भी पैट कमिंस के मां के निधन पर दुख जताया है। बीसीसीआई ने अपने पोस्ट में लिखा है कि इस दुख की घड़ी में हमारी प्रार्थना उनके और उनके परिवार के साथ है।

कमिंस की जगह स्मिथ कर रहे हैं कप्तानी – पैट कमिंस की अनुपस्थिति में स्टीव स्मिथ ऑस्ट्रेलियाई टीम की कप्तानी कर रहे हैं। उनकी कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया ने इंदौर टेस्ट अपने नाम कर लिया। अब मुकाबला अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में जारी है।

संक्षिप्त खबरें

वायरस में बदलाव से मंकी फीवर का टीका अप्रभावी, एम्स ने शुरू की नए की खोज

नईदिल्ली, एजेंसी। कोरोना की तरह मंकी फीवर के वायरस में भी बदलाव देखे जा रहे हैं, जिसके चलते मौजूदा टीका इस जानलेवा बीमारी से रोकथाम में अप्रभावी है। साथ ही, इस टीके को अब तक विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से मान्यता भी नहीं मिली है। ऐसे में नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने नए टीका की खोज करने का फैसला लिया है। आईसीएमआर के अनुसार, हाल ही में केरल और कर्नाटक के कुछ इलाकों में मंकी फीवर के नए मरीज सामने आए। पुणे स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (एनआईवी) की टीम ने इन रोगियों के नमूनों से वायरस पृथक करने के बाद जीनोम सीक्वेंसिंग के जरिये अध्ययन किया। एनआईवी पुणे के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने बताया कि जीनोम विश्लेषण किया गया तो उसकी संरचना में थोड़ा बदलाव दिखा। यह किसी आश्चर्य से कम नहीं था, क्योंकि इससे पहले कभी ऐसे संकेत नहीं मिले थे। एनआईवी की टीम ने पृथक वायरस पर जब अध्ययन किया तो कोरोना की तरह उन्होंने इस वायरस के टीका का फार्मूला भी खोज निकाला है। इसी फॉर्मूले के आधार पर निजी फार्मा कंपनियों के सहयोग से जल्द ही नए प्रभावी टीके का निर्माण किया जाएगा। दरअसल, मंकी फीवर यानी क्यासानुर वन रोग काफी गंभीर और जानलेवा है। इसका अभी तक चिकित्सा में इलाज नहीं है। सालों पहले कर्नाटक के क्यासानूर जंगल में एक बीमार बंदर के जरिये इस संक्रामक रोग की पुष्टि हुई थी। तब से हर साल 400 से 500 लोगों की मौत इस संक्रमण से हो रही है।

केंद्र सरकार का बड़ा फैसला, बीएसएफ में अग्निवीरों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण; उम्र में भी छूट

नईदिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार ने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की बहाली में अग्निवीरों के लिए 10 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने की घोषणा की है। वहीं, अधिकतम उम्र की सीमा में भी छूट देने की बात कही है। हालांकि, इसके लिए यह देखा जाएगा कि वह पहले बैच के हिस्सा हैं या नहीं। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने गुरुवार को एक नोटिफिकेशन के जरिए इसकी घोषणा की है। गृह मंत्रालय ने कहा है कि अग्निवीरों के पहले बैच के 25 प्रतिशत उम्मीदवारों को सेना में सीधे स्थाई नौकरी दी जाएगी। बाकी 75 प्रतिशत उम्मीदवारों को विभिन्न बलों में वरीयता दी जा जाएगी। केंद्रीय गृह मंत्रालय की अधिसूचने के मुताबिक, अग्निवीरों के पहले बैच के उम्मीदवारों को अधिकतम उम्र की सीमा में पांच साल की छूट दी जाएगी। वहीं, इसके बाद के बैच के उम्मीदवारों को तीन साल की छूट मिलेगी। इसके अलावा फिजिकल एफिशियंसी टेस्ट में भी इन्हें छूट देने की घोषणा की गई है। आपको बता दें कि फिलहाल केंद्रीय सशस्त्र पुलिस फोर्स में बहाली के उम्र की सीमा 19-23 साल है। वहीं, अग्निवीर 26 साल तक अप्लाई कर सकते हैं। गृह मंत्रालय की घोषणा के अनुसार, अग्निवीरों का पहला बैच 28 वर्ष की आयु तक सीएपीएफ और असम राइफल्स में 10 प्रतिशत नौकरी कोटा का लाभ उठा सकता है।

अब जानें भी ले रहा सर्दी-बुखार वाला एच3एन2 वायरस, हरियाणा और कर्नाटक में मौतें

नईदिल्ली, एजेंसी। बीते करीब दो महीनों से दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई राज्यों में फैला एच3एन2 वायरस अब जानलेवा भी साबित हो रहा है। इस वायरस से संक्रमित दो लोगों की मौत की खबर सामने आई है। एनडीटीवी की रिपोर्ट के मुताबिक इनमें से एक मामला हरियाणा का है, जबकि दूसरा केस दक्षिण भारत के राज्य कर्नाटक का है। इस वायरस से संक्रमण में बुखार, जुकाम, सर्दी, गले में खराब और आंखों में जलन जैसे लक्षण दिखते हैं। कई बार तेज बुखार तो दो से तीन दिन में ठीक हो जाता है, लेकिन गले की समस्या थोड़ा लंबे समय तक बनी रह सकती है। यही नहीं यह संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से दूसरे लोगों को भी प्रभावित कर सकता है। स्वास्थ्य मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक देश भर में अब तक एच3एन2 वायरस के 90 केस पाए गए हैं। इसके अलावा एच1एन1 वायरस के भी 8 मामले मिले हैं। दरअसल बदलते मौसम के चलते देश के कई राज्यों में बड़ी संख्या में लोग बुखार का शिकार हो रहे हैं। इनमें से काफी लोगों के एच3एन2 वायरस से संक्रमित होने की भी आशंका है। इस वायरस को हॉन्गकॉन्ग फ्लू के नाम से भी जाना जाता है। इस से संक्रमित लोगों में तेज बुखार, खासी, सांस लेने में परेशानी और बेचैनी जैसे लक्षण पाए जाते हैं। यही नहीं गले में खराश, थकान, शरीर में दर्द और डायरिया की समस्या भी पाई जा रही है।

हिमाचल मॉडल पर चुनाव लड़ेगी कांग्रेस, कर्नाटक सहित इन चार राज्यों के लिए बनाया प्लान

नईदिल्ली, एजेंसी।
पूर्वोत्तर राज्यों के चुनाव के बाद अब सबकी नजर कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव पर है। कांग्रेस इन चुनाव में महिला मतदाताओं को केंद्र में रखकर चुनाव रणनीति का खाका तैयार कर रही है। पार्टी को भरोसा है कि हिमाचल प्रदेश की तरह इन राज्यों में भी आधी आबादी भाजपा के बजाए कांग्रेस पर भरोसा जताएगी।

कांग्रेस इन सभी प्रदेशों में महिलाओं के लिए अलग घोषणा पत्र जारी करने की तैयारी कर रही है। कर्नाटक में महिला मतदाताओं की तादाद 49 फीसदी है। पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा कर्नाटक में महिलाओं के लिए 'ना नायकी' यानी मैं नेता हूं, अभियान शुरू कर चुकी हैं। इसके साथ पार्टी ने महिलाओं को दो हजार रुपये प्रति माह देने का वादा किया है।

महिलाओं के खाते में हर माह 2000 रुपये जमा होंगे: कर्नाटक में पार्टी ने गृह लक्ष्मी योजना के तहत हर माह 2000 रुपए सीधे महिलाओं के खाते में जमा करने का वादा किया है। मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाडली बहना योजना के तहत महिलाओं को एक हजार रुपए प्रति माह देने का ऐलान किया है। इसके जवाब में कांग्रेस ने सरकार बनने पर 1500 रुपए प्रति माह देने का वादा किया है। कांग्रेस रणनीतिकार मानते हैं कि पार्टी को कर्नाटक और मध्य प्रदेश में सत्ता तक पहुंचना है, तो आधी आबादी का भरोसा जीतना होगा।

वहीं, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में सरकार बरकरार रखने के लिए पार्टी को महिलाओं का साथ जरूरी है। यही वजह है कि इस साल राजस्थान और छत्तीसगढ़ सरकारों के आखिरी बजट में महिलाएं केंद्र में रही है। कर्नाटक में मतदाताओं की संख्या पांच करोड़ 15 लाख है। इनमें से दो करोड़ 55 लाख महिला मतदाता हैं। ऐसे में कोई भी पार्टी आधी आबादी को नजरअंदाज नहीं कर सकती। मध्य प्रदेश के पांच करोड़ 39 लाख मतदाताओं में दो करोड़ 60 लाख 23 हजार महिला मतदाता हैं। राजस्थान में भी महिला मतदाताओं की संख्या करीब 50 फीसदी है।

पार्टी के एक वरिष्ठ नेता के मुताबिक, अभी तक हम समाज के किसी वर्ग को खास तौर पर केंद्रित कर चुनाव रणनीति नहीं बनाते थे। पर पिछले कुछ चुनावों से पार्टी ने महिलाओं और युवाओं पर खास ध्यान केंद्रित किया है। पार्टी ने संविधान में संशोधन कर महिलाओं और युवाओं को भी उचित प्रतिनिधित्व देने की बात की है। इसका लाभ मिलेगा। छत्तीसगढ़ में महिला और पुरुष मतदाताओं की तादाद लगभग बराबर है। कई आदिवासी सीट में महिला मतदाताओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। इसलिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बजट में आगंनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय में 3,500 हजार रुपये के इजाफे के साथ घरेलू और कामकाजी महिलाओं के लिए भी कई योजनाओं का ऐलान किया है।

कांग्रेस राज में गुल रहती थी बिजली, इसलिए बढ़ी आबादी; केंद्रीय मंत्री का अजीबोगरीब तर्क

नईदिल्ली, एजेंसी।

चुनावी राज्य कर्नाटक में सियासी पारा जोरों पर है। तामाम पार्टियां जोर आजमाइश कर रही हैं और एक दूसरे को नीचा दिखाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रही हैं। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने सत्ता में आने पर कर्नाटक में मुफ्त बिजली देने के कांग्रेस के चुनावी वादे को लेकर कांग्रेस पर कटाक्ष किया। प्रह्लाद जोशी ने दावा किया कि कांग्रेस ने अपने शासन के दौरान बिजली नहीं दी, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि हुई। प्रह्लाद जोशी ने कहा, अब, कांग्रेस कह रही है कि वे मुफ्त बिजली देंगे। क्या आपको विश्वास है कि वे मुफ्त बिजली देंगे कांग्रेस ने अपनी सरकार में कभी बिजली नहीं देती थे। गांवों में कभी बिजली नहीं हुआ करती थी। पीएम मोदी के सत्ता में आने के बाद, हमने (भाजपा) 24 घंटे बिजली देनी शुरू की। उन्होंने कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कांग्रेस के राज में बिजली कम आती थी, इसलिए आबादी बढ़ गई है। कर्नाटक में विधानसभा चुनाव जीतने पर कांग्रेस ने हर महीने 200 यूनिट मुफ्त बिजली देने का वादा किया है। कांग्रेस ने जनवरी में प्रजा ध्वनि यात्रा के दौरान यह घोषणा की थी। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर भी कांग्रेस पर तीखा हमला बोला था। उन्होंने कहा था कि कांग्रेस पार्टी को भ्रष्टाचार के बारे में बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। वे देश में भ्रष्टाचार के रक्तबीजसुर हैं। जवाहरलाल नेहरू के दिनों से लेकर मनमोहन सिंह तक, पार्टी कई भ्रष्ट सौदों में लिप्त रही है।

बच्चों से जबरदस्ती ना छीने मोबाइल फोन, बल्कि ऐसे करें आदत को कम

नई दिल्ली, एजेंसी।
आज के मॉडर्न समय में मोबाइल फोन केवल बड़ों के लिए ही नहीं बल्कि बच्चों के लिए भी एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। स्मार्टफोन, टैबलेट और अन्य उपकरणों की व्यापक उपलब्धता के साथ, बच्चे तेजी से सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म्स, गेम्स और ऐप्स की मोहक और भ्रामक दुनिया का हिस्सा बनते जा रहे हैं। कई शोध में पाया जा रहा है कि बच्चे इन उपकरणों के द्वारा अपना अधिक समय स्क्रीन पर खर्च कर रहे हैं, जिससे उनकी शारीरिक गतिविधि कम होती जा रही है। कई बार ये जरूरी कारणों के चलते भी होता है, जैसे कि स्कूलवर्क, ऑनलाइन क्लासेज या फिर प्रोजेक्ट के लिए।

स्मार्टफोन की लत इन बच्चों में हानिकारक परिणाम विकसित कर सकते हैं, जैसे कि उनमें नींद के पैटर्न का बदलना, इसकी वजह से बच्चे जल्दि थका हुआ महसूस करते हैं और दिन के दौरान उन्हें ध्यान केंद्रित करने में भी परेशानी होती है। इसके अलावा मोबाइल फोन की लत के कारण बच्चे सामाजिक वातावरण से भी अलगाव करने लगते हैं, क्योंकि ऐसे बच्चे दूसरों के साथ समय बिताने के बजाय अपने गैजेट को प्राथमिकता देते हैं। इसके अलावा, यह बच्चों में चिंता और अवसाद के साथ-साथ शैक्षणिक कठिनाइयों में भी वृद्धि कर सकता है।

अध्ययनों के अनुसार, टीनएजर हर दिन 9 से 10 घंटे स्क्रीन के सामने बिताते हैं, जबकि 8 से 12 साल के बच्चे छह से सात घंटे ऐसा करते हैं। चलिए जानते हैं कि अत्यधिक स्मार्टफोन के उपयोग से बच्चों पर होने वाले कुछ नकारात्मक परिणाम के बारे में-

डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने साल 2019 में इस बात पर रोशनी डालते हुए कहा कि दो से पांच वर्ष की आयु के बच्चे अपने स्क्रीन उपयोग को प्रति दिन एक घंटे तक सीमित रखें, ये उनके स्वास्थय के लिए बेहतर है। स्क्रीन के प्रति बच्चों का जुनून उन्हें शारीरिक रूप से सक्रिय रहने और नींद से वंचित करता है। आंखों की रोशनी पर प्रभाव डालता है

सेल फोन के उपयोग से बच्चों की आंखों की रोशनी पर काफी गहरा प्रभाव पड़ता है। इसे आईसाइट सिंड्रोम कहा जाता है। इस दौरान आंखों में रेडनेस, जलन का अहसास, तनाव, बिगड़ी हुई दृष्टि के साथ आंखों में ड्राईनेसी की समस्या भी होती है।

संसद में माइक बंद कर दिए जाते हैं, ऐसा कहने की किसी की हिम्मत कैसे हुई राहुल गांधी पर भड़के उपराष्ट्रपति

नईदिल्ली, एजेंसी।
उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने विदेशी धरती पर संसद और भारतीय लोकतंत्र की कथित आलोचना किए जाने पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि अगर कोई कहता है कि भारतीय संसद में माइक बंद कर दिए जाते हैं, तो यह देश का अपमान है। मालूम हो कि धनखड़ की यह टिप्पणी राहुल गांधी के उन बयानों के बाद आई है, जब कांग्रेस सांसद ने आरोप लगाया था कि कई बार लोकसभा में उनके माइक को चालू नहीं किया जाता है। साथ ही, धनखड़ ने अपने अधिकारियों को 20 संसदीय पैनल से जोड़ने को भी उचित ठहराया और कहा कि पैनल के कई सदस्यों या अध्यक्षों द्वारा पैनल के कामकाज और प्रदर्शन में सुधार करने के अनुरोध के बाद जानकार लोगों, आईएएस और आईएफएस अधिकारियों को जोड़ा गया था।

पूर्व सांसद करण सिंह द्वारा लिखित मुंडक उपनिषद पर एक पुस्तक का विमोचन करते हुए धनखड़ ने कहा, हम तथ्यात्मक रूप से अस्थिर कथा के इस प्रचंड आयोजन को कैसे सही ठहरा सकते हैं भारत गौरव का क्षण देख रहा है और देश के बाहर लोग हमें बदनाम करने के लिए ओवरटाइम काम कर रहे हैं। हमारे संविधान और संसद को कलंकित करने का प्रयास बहुत गंभीर है और स्वीकार्य नहीं है।

लंदन में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की हालिया टिप्पणी के अप्रत्यक्ष संदर्भ में, धनखड़ ने कहा, यदि मैं देश के बाहर संसद के किसी सदस्य द्वारा किए जा रहे आयोजन पर मौन रुख अपनाता हूं, जो कि गलत धारणा से प्रेरित है, तो मैं संविधान के गलत पक्ष में रहूंगा। धनखड़ ने कहा कि मैं इस बयान को सरल कैसे बना सकता हूं कि भारतीय संसद में माइक बंद कर दिए जाते हैं किसी की ऐसा कहने की हिम्मत कैसे हुई क्या कभी कोई उदाहरण दिया गया है हां, हमारे पास राजनीतिक इतिहास का एक काला अध्याय था जो कि इमरजेंसी है। 7 फरवरी को राष्ट्रपति के भाषण पर चर्चा के दौरान गांधी के लंबे भाषण का जिक्र करते हुए चुटकी ली, कल्पना कीजिए, यह 50 मिनट बोलने के बाद किया जा रहा है।

उन्होंने युवाओं से (देश के हितों के खिलाफ काम करने वाली) ताकतों को बेनकाब और बेअसर करने का आग्रह किया और कहा कि संविधान अद्वितीय, पूर्ण स्वतंत्रता की गारंटी देता है। बता दें कि सात मार्च को वेस्टमिंस्टर कॉम्प्लेक्स में ग्रैंड कमेटी रूम में लेबर पार्टी के कुछ सांसदों को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा था कि माइक खराब नहीं हैं, फिर भी आप उन्हें चालू नहीं कर सकते। जब मैं बोल रहा होता हूं तो मेरे साथ ऐसा कई बार हुआ है।

कुछ सालों में खत्म हो जाएगा जकार्ता का अस्तित्व, इंडोनेशिया ने तलाशी नई राजधानी

जकार्ता , एजेंसी।
बहुत समय से जलवायु परिवर्तन के परिणामों पर चर्चा जारी है, मगर अब इसका सीधा-सीधा असर इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता पर दिख रहा है। इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता धीरे-धीरे समुद्र में डूबती जा रही है इसलिए इस देश के प्रशासन ने राजधानी को कहीं और ले जाना शुरू कर दिया। नई राजधानी का उद्घाटन 17 अगस्त 2024 को इंडोनेशिया के स्वतंत्रता दिवस पर किया जा सकता है। इंडोनेशियाई प्रशासन के सूत्रों के मुताबिक, देश की नई राजधानी जकार्ता से लगभग 2,000 किलोमीटर दूर बोर्नियो में बन रही है। इंफ्रास्ट्रक्चर का काम आधा काम पूरा हो चुका है। हालांकि, पूरा काम अगस्त 2045 तक पूरा हो जाएगा।

2050 तक एक तिहाई हिस्सा डूब जाएगा: इंडोनेशिया की मौजूदा राजधानी दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले शहरों में से एक है। शहर में प्रदूषण का स्तर भी खतरनाक है। इसके अलावा शहर धीरे-धीरे समुद्र के पानी में डूबता जा रहा है। हालात ऐसे हैं कि अब आशंका जताई जा रही है कि 2050 तक शहर का एक तिहाई हिस्सा जावा सागर में जा सकता है।

बोर्नियो में बुनियादी ढांचे का निर्माण पहले ही शुरू हो चुका है। शुरुआत में देश के नौकरशाहों के वहां रहने की व्यवस्था की जा रही है. सुरक्षा कारणों से सभी को नए शहर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है।

घने जंगल के बीच बस रहा है शहर: घने जंगल के बीच नए शहर को बसाया जा रहा है। देश के राष्ट्रपति जोको विडोडो चाहते हैं कि नई राजधानी का नाम नुसंतरा हो। हालांकि, पर्यावरणविदों को डर है कि राजधानी को बोर्नियो के घने जंगलों के बीच ले जाने से कई पेड़ कट जाएंगे। कई वन आदिवासी समूह खतरे में होंगे।

शी चिनफिंग फिर बने चीन के राष्ट्रपति, सर्वसम्मति से तीसरी बार मिला कार्यकाल

बीजिंग, एजेंसी।
शी चिनफिंग आज एक बार फिर लगातार तीसरी बार चीन के राष्ट्रपति बन गए हैं। शी ने राष्ट्रपति के रूप में पांच साल का एक अभूतपूर्व तीसरा कार्यकाल हासिल किया है। हालांकि, ये एक औपचारिक घोषणा मात्र थी क्योंकि शी के खिलाफ कोई उम्मीदवार ही नहीं था। उन्होंने देश में माओत्से तुंग के बाद देश के सबसे शक्तिशाली नेता के रूप में अपनी पकड़ मजबूत कर ली है।

चीन की रबर-स्टैंप कहे जाने वाली संसद, नेशनल पीपुल्स कांग्रेस (एनपीसी) के लगभग 3,000 सदस्यों ने ग्रेट हॉल ऑफ द पीपल में 69 वर्षीय शी को एक ऐसे चुनाव में राष्ट्रपति बनने के लिए सर्वसम्मति से वोट दिया, जहां कोई अन्य उम्मीदवार नहीं था। शी के पक्ष में हुआ मतदान करीब एक घंटे तक चला और इलेक्ट्रॉनिक काउंटिंग करीब 15 मिनट में पूरी हो गई। शी को देश के केंद्रीय सैन्य आयोग के अध्यक्ष के रूप में तीसरे कार्यकाल के लिए भी सर्वसम्मति से वोट मिले। संसद ने झाओ लेजी को नए संसद अध्यक्ष और हान झेंग को नए उपाध्यक्ष के रूप में भी चुना। दोनों व्यक्ति पोलित ब्यूरो स्थायी समिति में शी की पार्टी के नेताओं की टीम से ही हैं। चिनफिंग ने साल 2018 में ही अपना तीसरे कार्यकाल का रास्ता खोल दिया था। शी ने 2018 में ही राष्ट्रपति पद के कार्यकाल की सीमा को समाप्त कर दिया था, जिससे एक और कार्यकाल के लिए मंच तैयार हो गया था। पिछले अक्टूबर में उनकी शक्ति पहले ही बढ़ा दी गई थी, जब उन्हें सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव के रूप में एक और पांच साल के लिए फिर से नियुक्त किया गया था। अगले दो दिनों में, शी द्वारा अनुमोदित अधिकारियों को कैबिनेट में शीर्ष पदों पर नियुक्त या निर्वाचित किया जाना तय है, जिसमें प्रीमियर-इन-वेटिंग ली कियांग भी शामिल हैं,

उत्तर कोरिया में मिला 70 साल पुराने बमों का जखीरा, किसी भी समय हो सकता था विस्फोट

सियोल, रॉयटर्स।
उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयांग में एक अपार्टमेंट के निर्माण स्थल पर श्रमिकों ने 110 से अधिक बम, गोले, बारूदी सुरंगें, हथगोले और अन्य विस्फोटक खोजे हैं, जो वर्ष 1950 में हुए कोरियाई युद्ध में इस्तेमाल किए गए अमेरिका निर्मित हथियार हैं। राज्य समाचार एजेंसी केसीएनए ने बताया कि प्योंगयांग सिटी पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो के विशेषज्ञों द्वारा उपकरणों का पता लगाया गया और उनको नष्ट किया गया।

रिपोर्ट में कहा गया है कि हवासोंग क्षेत्र में आवास निर्माण स्थल पर पाए गए विस्फोटकों में जंग लगा हुआ था, लेकिन उनमें किसी भी समय विस्फोट होने का खतरा था। इसी को देखते हुए स्थानीय प्रशासन ने सूझभूझ के साथ सभी बमों को नष्ट करने का काम किया। उत्तर कोरिया के तानाशाह नेता किम जोंग उन ने प्योंगयांग में 50,000 नए अपार्टमेंट बनाने के लिए परियोजनाएं शुरू की हैं, जो देश के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के नाम पर किया जा रहा है। ष्टह्लङ्कद्बष्ठ-19, प्राकृतिक आपदाओं और परमाणु हथियारों और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों के चलते देश पहले ही अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों को झेल रहा है, जिसके चलते इसकी अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगा है। अमेरिका के अनुसार उत्तर कोरिया के लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सीमित संसाधन ही बचे हैं।

विस्फोटक लंबे समय से दोनों देशों के लिए खतरा: बता दें कि 1950-1953 के कोरियाई युद्ध से बचे हुए विस्फोटक लंबे समय से दोनों कोरिया में नागरिकों के लिए खतरा बने हुए हैं। इसी के चलते पिछले वर्षों में, रेड क्रॉस की हथियार निष्पादन इकाई की अंतर्राष्ट्रीय समिति के विशेषज्ञों ने बम निरोधन में उत्तर कोरियाई टीमों को प्रशिक्षित किया है।

अमेरिकी युद्धक विमानों ने गिराए थे बम: अमेरिकी शोधकर्ताओं के अनुसार, कोरियाई युद्ध के दौरान, द कोरिया की तरफ से अमेरिकी युद्धक विमानों ने उत्तर कोरिया में व्यापक क्षेत्रों पर हमला किया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा पूरे प्रशांत क्षेत्र में गिराए गए बमों की तुलना में उत्तर कोरिया पर अधिक बम गिराए गए थे।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555